मैथिली कथाक विकास : बदलैत स्वर एवं प्रवृत्ति

❑ अशोक

मैथिली कथाक विकास पर गप करबा सँ पूर्व हमरा सभ केँ कथाक सम्बन्ध मे किछु मोट बात केँ जानि लेब आवश्यक लगैत अछि । अधिकांश भारतीय भाषाक कथा-साहित्य अनठीये गमला मे फुलायल अछि । संस्कृत मे जकरा 'गल्प' या 'आख्यायिका' कहल जाइत अछि से आधुनिक कथा सँ भिन्न छल । संगहि हमरा सभक देशी वाचिक परम्पराक अवशेषो आब लिखित साहित्य मे देखबामे नहि अबैत अछि । एहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक स्थिति कोनो भिन्न नहि कहल जा सकैत अछि ।[1] जहाँ धरि कथाक परिभाषाक बात अछि तऽ कथा केँ कोनो परिभाषा मे बान्हब कठिन अछि । तैयो बहुतो कथाकार ओ आलोचक एकरा परिभाषित करबाक प्रयास केलनि अछि । मुंशी प्रेमचन्द कथा पर विचार करैत कहैत छथि जे 'कथा (गल्प) एक रचना थिक, जाहि मे जीवनक कोनो एक अंग या मनोभाव केँ प्रदर्शित करबे लेखक उद्देश्य रहैत अछि । ओकर चरित्र, ओकर शैली तथा कथाविन्यास सभ ओही भात्र केँ पुष्ट करैत अछि ।' पाश्चात्य देश सभ मे एडगर एलन पो आधुनिक कथाक जन्मदाता सभ मे प्रमुख मानल जाइत छथि । ओ कथाक परिभाषा दैत कहलनि अछि जे, 'लघु कथा एक एहन आख्यान थिक, जे एतेक छोट होइत अछि कि एक बैसक मे पढ़ल जा सकय । संगहि जे पाठक पर केवल एक प्रभाव उत्पन्न करबाक उद्देश्य सँ लिखल गेल हो । ओ (लघु कथा) स्वतः पूर्ण होइत अछि ।[2] मुदा आलोचक कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे, 'प्राचीन काल सँ आइ धरि वाचिक परम्परा सँ लिखित परम्परा धरि उपलब्ध कथा सभक उद्देश्य, स्वरूप आ स्वरक मध्य व्याप्त भिन्नता केँ देखैत कथा केँ कोनो परिभाषाक सीमामे बान्हबे कि तकर चेष्टे करब अनर्गल भऽ गेल अछि । कारण जे प्रत्येक कथा आब पाठक सँ वैयक्तिक संवेदना आ

संस्पर्शक अपेक्षा रखैत अछि । स्वयं कथा संग सोझ सम्पर्क राखब, आ कथाक समस्त इतिहासक अवगति राखब कथाक लग पहुँचबाक लेल आब अत्यन्त आवश्यक आ एकमात्र सार्थक उपाय थिक ।[3] तऽ सभ सँ पहिने आधुनिक कथा मे जे भिन्नता आयल तकरा देखी त' स्पष्ट होयत जे आधुनिक कथा आधिदैविक या दैविक 'अभिप्राय' सबहक स्थान पर 'मानवीय अभिप्राय' प्रधान अछि । ई अभिप्राय कथा पर विचार, वस्तुक रूप मे आक्षेपित नहि भऽ कऽ कथाक विकास सँ उत्पन्न होइत अछि फलतः एहि मे जीवन अधिक अछि । एहि प्रकारें कहि सकैत छी जे कल्पित कथानक सभक तुलना मे लोकाश्रित कथानक सभक प्रतिष्ठा स्वयं एक ऐतिहासिक घटना थिक ।[4] स्वाभाविक रूप सँ जखन उद्देश्य बदलल तऽ कथाक स्वरूप बदलल आ ओकर स्वरो बदलि गेल । एहि प्रकारें आधुनिक कथा, गल्प आ 'आख्यायिका' सभ सँ गुणात्मक रूप सँ विकसित होइत अछि । से एहि कारणे जे ओकर ढाँचा जीवनक यथार्थ सँ सम्बद्ध होइत अछि । आब कने हमरा लोकनि विकास कें सेहो जानि ली । आखिर ई विकास थिक की ? नव द्वारा पुरानक स्थान ग्रहण करब, उदित भऽ रहल कें अस्त भऽ रहलक जगह लेबहि कें विकास कहल जाइत अछि । ईहो कहल जाइत अछि जे नव, पुरान कें पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि, अपितु ओहि मे जे श्रेष्ठतम अछि ओकरा कायम रखैत अछि । वस्तुतः ओ श्रेष्ठतम कें कायमे नहि रखैत अछि, ओकरा आत्मसात सेहो करैत अछि । ओकरा एक नव उच्चतर स्तर पर सेहो ठठबैत अछि । विकासक ई अवधारणा स्वाभाविक रूपें हमरा अपन परम्परा सँ जोड़ैत अछि । मुदा परम्परा कोनो एक्केटा तऽ होइत नहि छै । समाज मे जेना विभिन्न परम्परा मौजूद रहैत अछि आ ओहि मे जुड़ाओ आ अलगाओ होइत छैक, द्वन्द्व होइत छैक तहिना कथा मे सेहो विभिन्न परम्परा होइत अछि आ ओहि मे द्वन्द्व होइत अछि जे विकासक आधार होइत अछि । द्वन्द्व नहि तऽ विकास नहि ।

आब एहि परिप्रेक्ष्य मे जखन हम मैथिली कथाक विकास कें देखैत छी तऽ ज्ञात होइत अछि जे एकर इतिहास सय वर्षक भऽ गेल अछि । नहि किछु तऽ दस हजार सँ बेसी कथा छपि चुकल अछि । ई दस हजार कथा, दू हजार सँ बेसी कथाकार लोकनिक द्वारा लिखल गेल अछि । एहि दस हजार कथा मे सभ सँ बेसी उत्पादक दशक आठम दशक (1971-1980) थिक जाहि मे कुल 2469 कथाक नव प्रकाशन भेल ।[5] एखन धरिक जनतबक

हिसाब सँ जीवकान्त सभ सँ बेसी लगभग दू सय कथा लिखनिहार कथाकार छथि । कतेको कथाकार छथि जिनकर कथा पत्रिका-सभ मे छिड़िआयले रहि गेल, पोथी रूप मे प्रकाश मे नहि आयल । ओ पत्रिका सभ आब उपलब्धो नहि अछि । एही कारणे डा. रामदेव झाक कहब छनि जे, 'मैथिली साहित्य मे आधुनिक रीतिक कथा-लेखनक उपक्रम कहिया, कोन कथासँ भेल से एखन धरि खूब सुनिश्चित नहि भऽ सकल अछि । आरम्भिक कालीन साधन-स्त्रोतक नष्ट, विलुप्त अथवा दुर्लभ भऽ गेलाक कारणे कोनहु निष्कर्ष के अन्तिम नहि मानल जा सकैत अछि । परन्तु एखन धरिक अनुसन्धान मे जतबा सूचना-सामग्री उपलब्ध भऽ सकल अछि, ओहि आधार पर मैथिली कथाक उद्‌भव ओ विकासक सामान्य रूप-रेखा प्रस्तुत सम्भव अछि ।' हम डा. रामदेव झा सँ सहमत होइत जखन मैथिली कथाक विकासक सन्दर्भ मे भेल काज सभ पर दृष्टिपात करैत छी तऽ हमरा विभिन्न कथा संग्रह सभक भूमिका लेखन, कथा सभक समीक्षा, मैथिली कथाक विकास पर भेल सेमिनार मे पढ़ल गेल आलेख, कोनो खास वर्ष वा दशक मे आयल कथा सभ पर टिप्पणी, आरम्भिक वा कोनो एक दशकक चयनित कथा संग सम्पादकीय रूप मे कथाक प्रवृत्ति पर विचार आ कथाकार वा आलोचक मोहन भारद्वाजक 'कथा गोष्ठी' आ कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक पोथी 'बदलैत स्वर' । एकर अतिरिक्त मैथिली साहित्यक इतिहास सभमे मैथिली कथा एक परिच्छेद सेहो भेटैत अछि । निश्चित रूप सँ मैथिली कथा पर शोध सेहो भेल अछि मुदा से पोथीक रूप मे प्रकाशन मे नहि आयल अछि । मैथिली कथा पर डा. मेघन प्रसादक सर्वेक्षण आ दस्तावेजी पोथी मैथिली कथा कोश अपन स्वरूप मे महत्वपूर्ण अछि । मैथिली मे जे आलोचक छथि से सामान्यतः मैथिली साहित्यक आलोचक छथि । ओ विभिन्न विधा पर जखन जे जरूरति भेलनि ताहि पर लिखैत छथि । कथाक आलोचक, खाली कथा पर काज केनिहार आलोचकक एखन धरि प्रतीक्षे छैक मैथिली केँ । ओना आलोचक कुलानन्द मिश्रक मैथिली कथा पर आकाशवाणी सँ दस एपीसोड मे प्रसारित दीर्घ निबन्धक पोथी रूप मे प्रकाशन हमरा आवश्यक लगैत अछि किएक तऽ ओहि मैथिली कथाक प्रवृत्ति, ओकर सामाजिक सन्दर्भ, ऐतिहासिकता तथा युगीन दृष्टिबोध सँ परिचित होयबा मे सुविधा होयत । ओकर आधार पर तथा अन्य उपलब्ध सामग्री सभक आधार पर मैथिलीक समकालीन कथा धरिक

विकास क्रम, प्रवृत्ति आ स्वरक सन्धान सम्भव भ' सकैत अछि । हुनका सँ हम ओहि दीर्घ निबन्धक आधार पर मैथिली कथा पर संवाद केने रही जे पहिने सन्धान पत्रिकाक कथा अंक मे आ तकर बाद संवाद नामक पोथी मे छपल अछि । कुलानन्द मिश्रक मैथिली कथाक सम्बन्ध मे कहल किछु बात के मैथिली कथाक विकास, बदलैत स्वर आ प्रवृत्ति पर बात करबाक क्रम मे राखब हम आवश्यक बूझैत छी । ओ कहैत छथि जे मैथिलीक मौलिक कथा अपन भारतीय स्वरूप आ आत्मा केँ चिन्हैत आरम्भ तऽ भेल, मुदा ओकर ढब मे परम्पराक विकास नहि छल, नवताक वेलूरिपना आ सकपकाहटि अलवत्त देखबा मे आयल । क्रमशः डेग स्थिर आ गति सहज भेलैक तथापि गुलाम भारतक सामाजिक वैषम्य आ अन्याय-अत्याचारक मुखर विरोध ओहि मे परिलक्षित नहि होइत अछि । एकर कारण मे हुनक कहब रहनि जे अपना सभक साहित्य-संस्कार 'काव्य-शास्त्र विनोदेन' समय काटब तऽ संगत बुझैत अछि, मुदा कोनो मानवीय कि सामाजिक मूल्य लेल 'टंटा बेसाहब' अमर्यादित बुझैत अछि । ... हमरा सभक जन-हित-चिन्तन बरोबरि वर्गीय चिन्तन रहल अछि, ओहि वर्गक चिन्तन जे अपन समुदायक लाभ-हानिक प्रति सतर्क रहैत सभ जीव मे ब्रह्म दर्शन करैत आयल अछि । ओ वर्ग दया, बन्धुत्व आ स्नेह सँ खूब परिचित अछि मुदा ओकर दृष्टि मे एकर अधिकारी विशिष्ट वर्गेटा रहलैक अछि । सातम आठम आ नवम दशकक कथाक प्रवृत्ति पर गप करैत ओ कहैत छथि जे सातम दशकक मैथिली कथाकेँ विचारक प्रौढ़ि तऽ हासिल भेलैक, मुदा निश्चित सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभाव मे कोनो व्यवस्थित आ विश्वासयोग्य प्रतिरोध लेल आधार भूमि तैयार करब सम्भव नहि भेलैक । आर्थिक ओ राजनीतिक पस्तीक बादो लोक आँखि मे शील आ विचार मे कुलीनता, सुलभ मूल्यक बात समाप्त नहि भेलैक । ओ परिवर्त्तनक उदीप्त आकांक्षा रखितो विरोध मे हाथ उठा लेबाक मनस्थिति नहि बना पबैत अछि । आठम दशकक कथा-यात्रा पर दृष्टिपात करैत हुनका लगैत छनि जे एतेक दूर अबैत-अबैत कथाक सभ पुरना परिभाषा अव्याप्ति दोष सँ ग्रस्त प्रतीत होबय लगैत अछि । तखने एहि सत्यक अनुभूति भेल जे कथाक इतिहासे कथाक एकमात्र संगत परिभाषा होइत अछि । अखनुक कथा तऽ एक तरहें एकटा एहन विशिष्ट रचना भऽ गेल अछि जे एकटा कोनो कथा एके कथाकार द्वारा कहल जा सकैत अछि । प्रत्येक सफल आ सार्थक कथा पर कथाकारक अपन

विशिष्ट आ वैयक्तिक छाप होइत अछि । ई छाप कथाक विन्यास, भाषा आ रचना-विधानक संग-संग ओकर समग्र प्रभाव पर परिलक्षित होइत अछि । नवम दशकक कथाकारक कथा प्रवृत्ति पर गप करैत ओ कहैत छथि जे प्रकट संघर्षक चेतना आ निष्कम्प दिशा-बोध हिनका-लोकनि मे एक हद धरि चरित्र-भिन्नताक बादो हिनका सभ कें अविभक्त धरातल पर सभ जातीय प्रतिबद्धता आ एकदेशीय वैचारिकताक संग ठाढ़ कऽ देने छनि । निश्चित सामाजिक, राजनीतिक आ साहचर्य बोध संग ई लोकनि व्यवस्थाक नाम पर पसरल सभ अव्यवस्थाक संतुलित आ सार्थक प्रतिरोध लेल प्रस्तुत नजरि अबैत छथि । एही क्रममे जँ शताब्दीक अन्तिम दशकक कथा प्रवृत्ति कें देखबा हो तऽ शिवशंकर श्रीनिवासक शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे ओहि मे कोनो जमीन पर अधिकार लेल संघर्ष नहि भेटत, बोनि लेल कोनो श्रमिक आ मालिकक बीच झमेला नहि भेटत । देखब जातीय संघर्ष, देखब धार्मिक उत्पीड़न सँ बहरेबाक प्रयास, सामाजिक रस ओ मुक्त जीवन जीबाक लेल देखब पत्नीक पति सँ संघर्ष करैत ।[6]

जहाँ धरि स्वातन्त्र्योत्तर कथा प्रवृत्तिक बात अछि आलोचक मोहन भारद्वाज एकर विस्तार सँ विश्लेषण करैत ई विचार रखलनि जे कोनो भाषाक कथा मात्र एहि लेल ओहि भाषाक साहित्य नहि होइछ जे ओ ओहि भाषा मे लिखल गेल अछि । प्रत्येक भाषा मे अपन विवशता, मुक्ति प्रयोजन, सीमा, संस्कार, परम्परा आ विशिष्टता होइत छैक-समय, परिवेश आ व्यक्तित्वक कारणे । एहि संग ओ मैथिलीक आधुनिक कथा कें हास्य कथा, रोमांस कथा, देह कथा, सम्बन्ध कथा आ सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक समानान्तर चलैत कथाक रूप मे रखलनि अछि ।[7] मोहन भारद्वाज सँ फराक डॉ. रमानन्द झा 'रमण' छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रा मे काम भावनाक अभिव्यक्ति कें एहि कालक कथाक एक विशेष प्रवृत्ति माननलि अछि । एहि संग ओ नारी कें श्रमशील मानवीय रूप मे चित्रित करबाक प्रवृत्ति आ पति-पत्नीक बीच बदलैत सम्बन्धक अतिरिक्त लोकक क्षमता-बोध आ असहमति सँ विद्रोह धरिक प्रवृत्ति मैथिली कथा मे देखैत छथि ।[8]

मैथिली कथाक विकास-क्रम कें हमरालोकनि निम्नलिखित उपशीर्षक मे विभाजित कऽ सकैत छी - (1) आरम्भिक मैथिली कथा (2) स्वतंत्रता पूर्वक कथा (3) स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा (4) समकालीन मैथिली कथा।

समकालीन मैथिली कथाक धारा आठम दशक सँ प्रारम्भ भेल । ई वैह दशक थिक जखन मैथिली मे सभ सँ बेसी कथा लिखायल । ई वैह काल थिक जखन मैथिली कथा अभिजन सँ सबजन धरि पहुँचल । भाषा सेहो भावुकताक झुल्ल उतारलक । मोहन भारद्वाजक अनुसार स्वतंत्र भारत मे जनमल कथाकार जखन बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न, आदि राक्षसी शक्तिक सम्मुखीन भेलाह तखन हुनक सोच आ भाषा मे परिवर्त्तन आयब स्वाभाविक भऽ गेल । तैं हुनक कथाक भाषा आक्रोश मूलक अछि । हुनक कथाक विषय 'सिविल' नहि, फौजदारीवला अछि । कथा विकासक ई सक्रमण-काल नवम दशक धरि अबैत-अबैत प्रायः समाप्त भऽ गेल ।[9] तकर बादक कथा केँ तारानन्द वियोगी नव चरणक मैथिली कथा कहैत छथि । ओ कहैत छथि जे नवचरणक मैथिली कथा मे शुद्र, स्त्री आ बच्चा, एहि तीनू दलित-समूहक आबा-जाही व्यापक रूप सँ बढ़ि गेल अछि । ई तीनू दलित समूह जे कथा मे आबि रहल अछि, से सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग आबि रहल अछि ।[10] शिवशंकर श्रीनिवास मैथिली कथाक एहि समकालीन स्वर केँ सांस्कृतिक चेतनाक कथा कहैत छथि ।[11]

मैथिली कविता सँ फराक मैथिली कथा मे कविता जकाँ सहजतावाद, अकवितावाद, नवचेतनाबाद, अभिव्येनावाद आ तदर्थवाद आदि कोनो नारा वा आन्दोलन नहि देखाइ पड़ैत अछि । एहि सँ कथा कतोक वैचारिक ओझराटि सँ बाँचि गेल । एहि सन्दर्भ मे कुलानन्द मिश्रक कहब रहनि जे मैथिलीक आधुनिक कथा हिन्दीक नई कहानी सँ विषय संग सम्बन्ध स्थापित करबाक संस्कार आ तकरा संग निबाहबाक कौशल तऽ अर्जित कयलक अछि, मुदा अपन विशिष्ट अनुभूतिक पृथक सौन्दर्यक अलग पहिचान लेल विषय-वस्तुक उपस्थापनाक प्रक्रिया केँ अपन जातीय संस्पर्श नहि दऽ सकल । मुदा हमरा लगैत अछि जे सुभाषचन्द्र यादव आ हुनक समकालीन कथाकारक संग ओ बादमे जे पीढ़ी कथा क्षेत्र मे आयल से हिन्दीक नई कहानीक बादक पीढ़ी थिक आ से मैथिली कथा मे जातीय संस्पर्श देबाक लेल अधिक सतर्क आ सचेष्ट भेल ।

हमरालोकनि जनैत छी जे मैथिलीक आरम्भिक कथाक मुख्य स्वर सामाजिक कुरीति केँ दूर करब छल । एहि मे कथाकारक सुधारवादी मानसिकता काज कऽ रहल छल । क्रमशः एहि सुधारवादी मनोवृत्ति मे सेहो

परिवर्तन भेल आ स्वतंत्रता सँ पूर्वक कथा मे शिल्पक स्तर पर मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग होअऽ लागल । मैथिली कथाक विकास यात्रा मे 1945 बहुत महत्वपूर्ण वर्ष मानल जाइत अछि । ओही वर्ष हरिमोहन झाक प्रणम्य देवता, व्यासजीक रूसल जमाय, कुमार गंगानन्द सिंहक बिहाड़ि, योगानन्द झाक आम खयबाक मुह, मनमोहन झाक बोटिब्स, हरिमोहन झाक खट्टर ककाक तरंग तथा उमानाथ झाक आध घंटा प्रकाशित भेल । कथाक स्वर सुधारवादी सँ आदर्शवादी भऽ गेल । ओहि मे रोमांस आ भावकुता तऽ रहबे करय मुदा कथा यथार्थक धरातल पर सेहो पैर राखब शुरू केलक । वस्तुतः मैथिली कथा मे यथार्थवादी स्वर स्वतंत्रताक बादे आयब शुरू भेल जकर शुरूआत केनिहार ललित मानल जाइत छथि ।

पूर्व मे हम जेना विकास पर बात करैत पुरान आ नवक गप कहलहुँ, श्रेष्ठतम केँ कायम रखबाक गप कहलहुँ, नव उच्चतर स्तर पर उठैबाक गप कहलहुँ आ कथा परम्परा आ द्वन्द्वक गप कहलहुँ तऽ ताहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक विकास केँ देखी तऽ आख्यायिकाक बाद गप्प आ गल्प मैथिली कथाक परिचिति सन बनि गेल । आलोचक रमानाथ झा एहि गप पर विस्तार सँ अपन बात कहलनि अछि । उपेन्द्र नाथ झा केँ गप्पकार कहलनि । कथा मे ई गप्पक धारा शिल्प आ प्रभाव रूप मे आइ धरि लगातार चलि रहल अछि । एहि धारा मे ई दृष्टिगोचर हैत जे कथाकार अपन कथा सँ सम्पृक्त नहि छथि । हुनकर अपन जीवन आ जीवनक सुख-दुख, संघर्ष, नेह-छोह नहि अछि । ओ जेना खिस्सा कहि रहल छथि, कोनो अनकर खिस्सा कहि रहल छथि । से बाद मे भोगल यथार्थक रूप मे मैथिली कथा मे आयल । एही संग सामाजिक यथार्थ सेहो आयल । से यथार्थक उपस्थापन धरि सीमित रहल । बाद मे समाज आ अपना सँ जोड़ि कऽ कथा कहबाक प्रवृत्ति शुरू भेल । एहन कथा सभ मे लागत जे कथाकार समाजक अभिन्न अंग बनि कऽ सामाजिक समस्या पर कथा कहि रहलाह अछि । एहि सभ कथा मे समाजिक यथार्थ तऽ छल मुदा खिस्सा वला शिल्प नहि छल । कालान्तर मे जखन खिस्साक शिल्प आ सामाजिक यथार्थ केँ एक संग बुनि कऽ कथा लिखल जाय लागल तऽ ओहि मे मैथिली कथाक जातीय संस्वर्थ स्पष्ट रूपें देखाइ दिअऽ लागल । एहि तरहक विकासक परिणति की भेल जे कथा कोनो एक स्तरक नहि रहल । तीन स्तर पर कथा चलऽ लागल । ई ओहिना लागत जे

कोनो स्वेटर जेना तीन तरहक ऊन सँ एक संग बुनल गेल हो । एक कथात्मक स्तर, दोसर भावात्मक स्तर आ तेसर सांस्कृतिक स्तर । कथा पढ़ैत काल अहाँके घटना आ चरित्र जे दृश्यमान होइत अछि से कथात्मक स्तर थिक । एही संग भावनात्मक स्तर बोधक स्तर थिक, एहि घटना सँ प्राप्त बोध सेहो चमत्कारिक होइत अछि । अंतिम स्तर सांस्कृतिक स्तर मे कथा सम्पूर्ण जीवन-पद्धतिक एक आन्तरिक सत्य बनि जाइत अछि । वस्तुतः मैथिली कथाक विकास एहि तीन-तीन स्तर धरि भेल अछि । एहि लेल आवश्यक अछि एहन आलोचकक जे प्रक्रिया आ पाठक माध्यम सँ मैथिली कथाक विकास पर काज करथि ।

संदर्भ संकेत

(1) कुलानन्द मिश्र, कथाकार अपन लेखन मे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि । अन्तरंग वार्त्ता, संधान-4

(2) कहानी, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली : डॉ. अमर नाथ

(3) कुलानन्द मिश्र, अन्तरंग वार्त्ता, सन्धान -4

(4) सुरेन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ

(5) मेघन प्रसाद, मैथिली कथा-कोश

(6) शिवशंकर श्रीनिवास, बदलैत स्वर

(7) मोहन भारद्वाज, स्वातंत्र्योत्तर कथाक प्रवृत्ति-एक विश्लेषण, मि. मिहिर 9 एवं 16 नवम्बर 1975

(8) रमानन्द झा 'रमण', छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रा, मैथिली अकादेमी पत्रिका, मार्च-अगस्त 1989

(9) मोहन भारद्वाज, अन्तरंग वार्ता, सन्धान-4

(10) तारानन्द वियोगी, नवचरणक मैथिली कथा, सन्धान 10

(11) शिवशंकर श्रीनिवास, बदलैत स्वर ।



सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक

– अशोक

काशीमे मैथिल छात्र संघ द्वारा सरस्वती पूजाक अवसर पर रातिमे नाटक भेल करै । ओहि समय नेना रही मुदा नाटकक प्रति सहज आकर्षण रहय । ई आकर्षण राममंदिरमे मास-मास दिन चलैत रिहर्सलमे हमरा लिप्त राखय । जाबे रिहर्सल चलै, हम बैसल रही।

नाटक सभ हिन्दीमे होइ । एकोटा मैथिलीक नाटक मोन नहि पड़ैत अछि । हिन्दीयोमे जे नाटक होइ से ऐतिहासिक । मीरकासिम, दो मिनट की रानी, चाणक्य, चन्द्रगुप्त । सामाजिक नाटक जे पहिले-पहिल हम देखलहुँ से 'नाटक' नामक छल । तमाम महान ऐतिहासिक पात्र सभक बीच ओहि नाटकक पात्र सभ हमरा परिचित बुझायल । एकटा पात्र अपन नाम आ अभिनयक कारण खूब पसिन्न पड़ल । मिस्टर डालडा ! तैं मिस्टर डालडा बहुतो दिन धरि हमरा मोन रहल । ओहि पात्रकेँ अभिनय कर' बला अभिनेता सेहो आकर्षित केलनि । जखन भेटथि मोन प्रसन्न भ' जाय । ई बादमे जा क' बुझलियैक जे ओ नाटक लिखल छल सुधांशु 'शेखर' चौधरीक । मिस्टर डालडाक सृजन वैह कयने रहथि ।

नाटक देखब त' गामेसँ शुरु छल । काशी गेलासँ पहिनेसँ । सरिसबमे मिथिला नाट्य-कला परिषद् ओ पैटघाट पर कीर्त्तिनाथ कला परिषद् द्वारा टिकट पर नाटक भेल करै । आगूमे खधियामे कुर्सी पर बैसि क' जे सभ नाटक देखथि से बेसी पाइ देथिन । पाछू बला दर्शक नार-पुआर पर बिछाओल सतरंजी पर बैसल । ओहू नाटक सभमे मैथिली नाटक कमे भेल करै । काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'विजेता विद्यापति', जेना स्मरण अबैत अछि, डा. धीरेन्द्र ओ हमर जेठ भाइ सुशील झाक रेड़म-बहेरमक बाद भेल रहय-सरिसबमे । मिथिला नाट्य-कला परिषद् द्वारा ।

कीर्त्तिनाथ कला परिषद द्वारा मुदा मैथिलीमे सेहो नाटक होअय । काशीनाथ मिश्रक 'अयाची', कृष्णानन्द झाक 'विद्यापति' भेल रहैक । ओतहि ईशनाथ झाक 'चीनीक लड्डू' आ गोविन्द झाक 'बसात' नाटक देखने रही । हमरा परिसरमे ई दुनू नाटक पूर्वहिसँ चर्चित छल । ओकर पात्र सभक मादे, भाग लेनिहार कलाकार लोकनिक मादे लोक सभक मुँहसँ सुनने रही । लोक सभ बहुत आबेस ओ प्रसन्नतासँ ओहि दुनू नाटककेँ मोन पाड़थि । लोकप्रियताक कीर्त्तिमान स्थापित कयने रहय 'चीनीक लड्डू' ओ बसात । मैथिलीमे सामाजिक मंचीय नाटकमे एहि दुनू नाटकक लोकप्रियता आइयो नहि घटल अछि ।

नाटक देखब त' छल-सात बरखक अवस्थासँ-उन्नैस सय उनसठि-साठिसँ-शुरु भ' गेल छल । नाटक खेलायब नियमित रूपसँ गामेमे शुरु भेल । से उन्नैस सय एकहत्तरि-बहत्तरिसँ । हमहूँ सभ जे नाटक खेलाइ, से हिन्दी आ मैथिली दुनूमे । दशमीमे नाटक भेल करै । पहिने गोविन्द दास कला परिषद् द्वारा लोहना पाठशाला पर, तकर बाद मिडिल स्कूल पर मिथिला विकास क्लब द्वारा । हिन्दीमे ऐतिहासिक आ मैथिलीमे ऐतिहासिक-सामाजिक । हिन्दीमे राजा पुरु, बहादुरशाह जफर, पीर अली आदि त' मैथिलीमे कुहेस, कनिया-पुतरा, सुखायल डारि नव पल्लव, प्रत्यावर्त्तन, मीनाक्षी (राजनर्तकी), कर्मवीर, बड़का साहेब, पृथ्वीपुत्र आदि । महेन्द्र मलंगियाक 'जुआयल कनकनी' नाटक पढ़लहुँ त' खेलेबाक सेहन्ता भेल । खेलेबामे मुदा कठिन लागल । खेलेबाक साधंस नहि भेल । सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक ओहि समय धरि हमरा सभकेँ नहि भेटल छल । मुदा पटनामे भेल 'भफाइत चाहक जिनगी'क चर्च गामो धरि पहुँचल । लोककेँ चकविदोर लगौने रहय ओ नाटक । पटनाक जे लोक रहथि से ओहि नाटकक चर्च-वर्च करथि । संग-संग चेतना समिति, विद्यापति पर्व, पटनाक मैथिल लोकनिक ओहिमे रुचि-अरुचि आ मैथिलत्वक वाष्पीकरण अर्थात् हरिमोहन झाक 'मैथिलेटेड स्पिरिट'क खिस्सा सेहो रहैत छल । ई 'भफाइत चाहक जिनगी'क दर्शक पर पड़ल प्रभाव छल । वस्तुतः ई प्रभाव नायक महेशक पढ़ि-लिखि एम.ए. पास क' चाहक दोकान करबाक बातक संग मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रसंग दर्शककेँ सोचबाक-विचारबाक लेल विवश कयने रहय ।

मैथिली नाटकमे 'भफाइत चाहक जिनगी' विद्यापति पर्वक पृष्ठभूमिमे चाह ओ पानवला एवं ओकर गाहकि सभक माध्यमे मैथिल स्वभावक समीक्षाक दृष्टिसँ अद्भुत नाटक अछि । अद्भुत ई अछि जे परिवर्त्तित होइत नागर जीवन-शैलीक बीच मैथिलत्वक जे उदारता-संकीर्णता अछि से ओहिमे चरित्र ओ संवादक माध्यमे खूबे प्रकट भेल अछि। से लगातार चलैत नाटकमे । जतबा काल नाटक चलैत अछि ततबे कालमे 'लाइव' प्रदर्शनक द्वारा । अर्थात् जे घटित भ' रहल अछि से तत्काल घटि रहल अछि । शेखरजी एकरा 'एक कालखण्डी नाट्य प्रयोग' कहैत छथि । एहि नाट्य प्रयोगक प्रसंग हुनक कहब छनि जे, 'पात्र-पात्रीक सम्पूर्ण जीवनमेसँ कालखण्डकेँ ल' क' हम ओकर सम्पूर्ण जीवनक आभास, ओकर सम्पूर्ण जीवनक चिन्तन-प्रक्रियाक आभास, ओकर चारित्रिक आदिकेँ प्रेक्षक-सामाजिक धरि पहुँचा देबाक चेष्टा कयने छी।'

'भफाइत चाहक जिनगी' शीर्षकक प्रसंग सुधांशु 'शेखर' चौधरीक टिप्पणी अछि, 'भफाइत चाहक जिनगी'क सामान्य अर्थ होइत अछि-एहन जिनगी जे भफाइत चाहक सदृश होअय अथवा एहन जिनगी जे भफाइत चाह पर अवलम्बित होअय । मुदा नाटकक नाम रखबाक काल हमरा दुनूमेसँ एको अर्थ अभिप्रेत नहि छल । हम जे नाटकक नाम रखने छी से प्रतीकात्मक अछि । भफाइत चाहक अभिप्राय होइत

अछि गरम चाह । गरम चाह दर्शयबा मे दू टा प्रतीकार्थ व्यंजक शब्द अछि–गरम आ भाफ । भाफ उड़ि क' बिना जायबला तत्व अछि, सर्दक विपरीतार्थक द्योतक अछि । तेँ हम पोथीक नाम रखबामे मानि क' चलल छी जे युवकक पूर्वक जे किछु सोचल छलैक से भाफ जकाँ उड़ि क' विलीन भ' रहलैक अछि, मुदा ओकरा भीतरमे गरमी छैक वर्त्तमानसँ ठठि सकबाक । अर्थात् ओ अस्तित्व रक्षाक संघर्षक हेतु प्रस्तुत अछि ।'

मुदा शेखरजी जेना कहैत छथि ई नाटक खाली नायक महेशक अस्तित्व रक्षाक संघर्ष नहि देखबैत अछि ओ ओकर व्यक्तित्व रक्षाक संघर्ष केँ सेहो प्रकट क' जाइत अछि । नाटकक नायक महेश एम.ए. पास युवक अछि । तीन बेटीक बाप अछि । मैथिलीक कवि अछि ओकर डिग्री ओकरा कोनो रोजगार नहि द' पबैत छैक । कोनो नोकरी नहि भेटैत छैक । ओ गाममे रहैत अपन माय-बापकेँ कहैत अछि जे शहरमे नोकरी करैत छी, मुदा से सत्य नहि थिक । ओ चाह बेचैत अछि । विद्यापति पर्वक आयोजनमे चाहक स्टाल लगौने अछि । ओहिठाम चाहो बेचैए आ मंच पर कविता सेहो पढ़ि अबैए । माइक पर जखन घोषणा होइत छैक जे महेशजी जत' कतहु होथि, मंच पर चलि आबथि । एकर बाद हुनके कविता पढ़बाक छनि ।' त' ओ कविता पढ़बाक लेल चल जाइए । अपन स्टाल पर अनायास आयल एक युवती चन्द्रमा, जकर पति ओकरा ओत' छोड़ि ककरोसँ गप्प कर' चलि जाइत अछि, केँ दोकान देखैत रहबाक लेल कहि जाइत अछि । स्पष्ट अछि जे कार्यक्रमक आयोजक लोकनिकेँ ई नहि बूझल छनि जे कवि वैह अछि जे चाहक स्टाल पर चाह बेचि रहल अछि । नाटकमे आयल ई सभ तथ्य कहैत अछि जे नायक महेश अपन परिचय नुका क' रखबाक अभ्यासी अछि । मुदा घटना सभ एना घटित होइत चलि जाइत छैक जे वास्तविकता अनायास प्रकट होइत चलि जाइत अछि । वास्तविकताक प्रकटीकरण ओकर स्टाल पर आयल परिचित-अपरिचित पुरुष-स्त्रीक वार्त्तालापसँ स्वतः होइत जाइत छैक । गाममे नोकरी करबाक गप्प, ओकर कवि होयबाक बात, विद्यार्थी अवस्थामे प्रतिभाशाली ओ चन्सगर हेबाक बात, चाह बेचितो पढ़ल-लिखल सुसंस्कृत हेबाक बात आदि लोकक चाह-पान करैत ओकरा संग वार्त्तालापमे बूझल भ' जाइत छैक । ई बूझल भ' जाइत छैक जे भने ओ चाह बेचि अपन गुजर करैत हो मुदा अछि धरि विशिष्ट लोक । अपन विशिष्टताकेँ बना क', बचा क' रखबामे ओकर कोशिश देखबा जोगर अछि । नाटकमे एहि विशिष्टता आ सामान्यताक द्वन्द्व ओकर चरित्रमे खूबे उभरल अछि । एहि सभ कार्य-व्यापारसँ अस्तित्व बचेबाक संघर्षक संग व्यक्तित्व बचेबाक संघर्ष सेहो प्रकट होइत अछि । तखन एकटा तथ्य अवश्य विचारणीय थिक । कोन कारण अछि जे महेशकेँ गाममे अपन चाह बेचबाक काजकेँ आ शहरमे कविता लिखबाक काजकेँ नुका क' रखबाक लेल विवश कयलक ? वस्तुतः ई महेशक विशिष्टता ओ सामान्यताक द्वन्द्वे थिक ।

नाटकमे जखन ओकर गामक-परिवारक लोक दिगम्बर ओकरा कहैत छै जे, 'गाममे क्यो नै जनैए जे अहाँ चाहक दोकान करै छी । अहाँकेँ बाइली आमदनी बहुत होइए सेहो लोक चर्च करैए ।' त' ओ कहि उठैत अछि, 'असलमे बाबूकेँ हम सैह कहने छियनि । ओ छथि पुरान लोक... पुरान मान्यतामे जीनिहार । ओ नोकरीकेँ प्रतिष्ठाक काज बुझैत छथि आ बनियाक काजकेँ नीच कर्म मानै छथि । हुनकर मान्यता पर हम किए आघात करियनि । हम जाहि संसारमे जीबि रहल छी, अपन अस्तित्व लेल जेहेन संघर्ष हमरा लोकनिकेँ कर' पड़ि रहल अछि ताहिसँ ओ अपरिचित छथि । ओ अपन संसारमे रहथु, हम अपन संसारक आगिसँ हुनका किए झरकबियनु ।' स्पष्ट अछि जे ओकर संसार बदलि गेल छैक, मुदा जाहि समाजक ओ लोक अछि से कोनो काजकेँ ऊँच-नीचक मापदण्ड पर देखैत अछि । इहो मापदण्ड युगक अनुसार बदलैत रहैत छैक । पहिने 'उत्तम खेती मध्यम बान, निषिध चाकरी, भीख निदान' रहैक त' बादमे नोकरी, ताहूमे सरकारी नोकरी, ऊपर उठि गेल । कहल जाइत रहैक जे स्थायी सरकारी नोकरीमे खून-माँसक सम्बन्ध भ' जाइत छैक । से बादमे नहि रहल । बादमे नोकरीसँ स्थायित्वक माप्रदण्ड कमजोर पड़ि गेलैक । आब त' अपन योग्यता, क्षमताक बल पर लोक कतेको नोकरी छोड़ैत अछि आ फेर बेसी पाइ बला नव नोकरी पकड़ि लैत अछि । तत्काल बान अर्थात् व्यापार त' सभसँ ऊपर गेल अछि । एहि प्रकारेँ बदलैत युगमे समाजक मापदण्ड बदललासँ कोनो काज ऊँच वा प्रतिष्ठादायक त' कोनो काज नीच वा अप्रतिष्ठाकारक बूझल जाइत अछि । स्पष्टत: ई धारणा समाजक वर्ण जातिक आवधारणा पर आधारित रहल अछि । काजकेँ जाति-वर्णसँ जोड़ि क' देखबाक फल थिक । अहाँ पोथी लिखै छी, सरकारी नोकरी करै छी त' ऊँच काज करै छी आ यदि चाह-पान बेचै छी, जुत्ता सीबै छी त' नीच काज करै छी । अपन ओहिठाम सामान्यतया यैह धारणा वर्गीय अवधारणाक आधार सेंहो बनि गेल अछि । वर्ण-जाति वा वर्ग-भेदक मानसिकता मनुक्खकेँ ओकर काज अर्थात् जीविकासँ नपैत अछि । ई मानसिकता समाजकेँ काजक संग जुड़ल नैतिक ओ अनैतिक आयामकेँ देखबासँ सेहो रोकैए । सरकारी नोकरी ऊँच प्रतिष्ठादायक त' बाइली आमदनी समाज स्वीकृत । वस्तुत: बाइली आमदनिए संग सरकारी नोकरी ऊँच आ प्रतिष्ठादायँक । सामाजिक सत्ताक एहि वीभत्स मान्यताकेँ महेश बूझैत अछि । ओकरामे आक्रोश छैक एहि मान्यता लेल मुदा एहि मोर्चा पर ओ लड़' नहि चाहैत अछि अपन बापकेँ फूसि कहि परतारि दैत अछि । जीविका लेल ओ जे काज करैत अछि तकरा प्रति ओकरा निष्ठा नहि छैक, तर्क नहि छैक । सैह स्थिति ओकर कविता लिखबाक मादे सेहो अछि । ओ कविता लिखबकेँ 'पैघ' आ चाह बेचबकेँ 'छोट' काज अपनहुँ मानैत अछि । ओकरा परम्परासँ ई बोध प्राप्त भेल छैक जे कविता लिखब विशिष्ट काज थिक, महान काज थिक आ चाह बेचि गुजर करब निकृष्ट काज ।

चन्द्रमा जखन ओकरा कहैत छैक जे, 'माइक परसँ जखन अहाँक बजाहटि भेल त' अहाँ सेकेण्डो भरि अपनाकेँ रोकि नहि सकलौं । ई चाहक दोकान जे अहाँक जीविकाक साधन अछि, तर पड़ि गेल आ अहाँ निच्छोह पड़यलौं । जे जीविकासँ अधिक महत्व अपन विशेष भावनाकेँ द' सकैए से मामूली कोना भ' सकैए ।... अहाँ कवि पहिने छी चाहवला बादमे । बाजू एहि सत्यकेँ अहाँ हमरासँ नुकौने छी वा नहि ?' त' महेश जवाब दैत अछि जे 'अहाँक आगाँ अपनाकेँ खोलबाक अवसर नै भेटल ताहि लेल कचोटे टा भ' सकैए । ओना, हम जे छी से अहाँक सोझाँ छी । एक चाहवला एक देवीकेँ अपन सोझाँमे पाबि धन्य अनुभव क' रहल अछि ।' स्पष्ट अछि जे महेश चन्द्रमाक बातकेँ अस्वीकार नहि करैत अछि । मुदा जेना ओ चन्द्रमाकेँ कहैत अछि – जे छी से अहाँक सोझाँमे छी से अनका, आयोजक लोकनिकेँ नहि कहि सकल । ई नहि कहि सकल जे ओ जेना चाह बेचि गुजर करैत अछि तहिना कविता लीखि अपन विचार ओ भावनाकेँ प्रकट करैत अछि । दुनू एकटा काज थिक । दुनूमे कोनो विरोध नहि छैक । एकटा व्यक्तिगत जीवन लेल, परिवार लेल जरुरी छैक त' दोसर सामाजिक जीवन लेल, समाज लेल । अन्तर्विरोध छैक त' ओहि व्यवस्थामे जे कोनो कविकेँ कविता लिखबाक अवकाश नहि उपलब्ध करा पबैए अथवा कोनो चाहवला कविता लीखियो क' अपनाकेँ कवि नहि कहि पबैए । तहिना अन्तर्विरोध ओहि व्यवस्थामे इहो छैक जे ओ पढ़ल-लिखल युवककेँ ओकर योग्यता-क्षमताक अनुरूप जीविका नहि प्रदान क' पबैए । मुदा व्यवस्थाक एहि द्वन्द्वकेँ बूझियो क' परम्परासँ पोसल विशिष्ट ओ सामान्यक द्वन्द्व ओकर पछोड़ नहि छोड़ि पबैत छैक । ओ विशिष्टताक प्रति एक मोह पोसनहि रहैत अछि । ओहि विशिष्टताक प्रति जे वर्णवादी सामाजिक व्यवस्थामे ओकर सांस्कारिक अवधारणाक देन थिक । वस्तुत: महेशमे एहने विशिष्टता-बोध जीवन-संघर्षमे भाफ बनि उड़ि रहल अछि आ ओ सामान्य मनुक्ख बनबाक प्रक्रियामे संघर्षक गरमीकेँ बचा क' रखबाक लेल संघर्ष क' रहल अछि । एहि प्रकारेँ नायक महेशक अस्तित्व रक्षाक संघर्ष व्यक्तित्व रक्षाक संघर्ष सेहो बनि जाइत अछि । स्वाभाविक अछि जे व्यक्तित्व त' सामान्यताक धरातले पर प्राप्त कयल जा सकैत अछि ।

मुदा नाटकमे बात खाली महेशक व्यक्तित्वक संघर्ष धरि सीमित नहि अछि । ओहिमे चेतना समिति अछि । विद्यापति पर्व अछि । पर्वमे गाना-बजाना अछि । कवि सम्मेलन अछि । अन्तमे 'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकक मंचन सेहो होइत अछि । मुदा ई सभटा बात संवादक माध्यम सँ बूझल होइत अछि । एकरे संग पर्वमे आयल विभिन्न वर्गक लोकक मैथिल मानसिकता अछि । स्वभाव अछि । ऊँच-नीचक भावना अछि । आधुनिकताक दंभ अछि त' अतीतक प्रति मोह सेहो अछि । मैथिलीक प्रति अंकुठ सेवा भाव त' मैथिली-तैथिलीकेँ पिछड़ल बुझबाक

मानसिकता सेहो अछि । एतावता एहि सभ बातमे वर्ग-भेद स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि । वस्तुत: ई मैथिलीक क्रिया-कलाप निम्न माध्यम वर्गक आधार पर पसरैत देखाइत अछि त' उच्च वर्गक एहि पर्वमे तफरीह करबाक, मजा लुटबाक प्रवृत्ति सेहो जगजिआर होइत अछि । स्वाभाविक रुपसँ नाटकक एहि सम्पूर्ण सृजित वातावरणक प्रभाव दर्शक पर पड़ैत छैक । ओ नाटकक कथा वस्तुक संग मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रति सेहो संवेदित होइत अछि । हमरा जनैत 'भफाइत चाहक जिनगी'क यैह प्रभाव ओकर सबल पक्ष थिक । तैं 'भफाइत चाहक जिनगी'क महेशक जिनगीसँ आगू बढ़ि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सामाजिक सन्दर्भ केँ सेहो व्यंजित क' जाइत अछि जाहिमे मैथिलत्वक वाष्पीकरणक संग सामान्य लोकक सांस्कृतिक ऊष्मा ठठल रहबा लेल व्याकुल अछि ।

बादमे जखन मैथिली नाटकक सम्बन्धमे पढ़लहुँ त' बुझलहुँ जे आधुनिके कालक पहिल नाटक जीवन झाक सुन्दर संयोग थिक जकर सम्भवत: कतहु मंचन नहि भेल । आधुनिक कालमे मैथिलीक पहिल नाटक जकर मंचन भेल से मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिलाक नाटक' थिक । ओहि समय धरि पारसी स्टेजक प्रचार मिथिलामे भ' गेल रहय । कतेको नाटक मण्डली बनि गेल छल । ओ मण्डली सभ हिन्दी मे घूमि-घूमि क' नाटक करय । एही मण्डली सभकेँ ध्यानमे राखि 'मिथिला' नाटक लिखल गेल छल । ओहिमे भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'भारत दुर्दुशा' सन मिथिला दुर्दशाक बात अछि । ओहि नाटकमे मिथिलाक अतीत ओ वर्त्तमानक चित्रण एहि उद्देश्यसँ कयल गेल अछि जे लोक अतीतसँ प्रेरणा ग्रहण क' वर्त्तमान दशासँ मुक्त होयबाक कोशिश करय । 'मिथिला' नाटकक बाद ईशनाथ झाक 'चिनीक लड्डू' (1941), शारदानन्द झाक 'फेरार' (1950) ओ गोविन्द झाक 'बसात' (1958) अछि जे मंचित भ' लोकप्रिय भेल । मैथिलीमे सामाजिक नाटक सभक बीच विद्यापति पर आधारित नाटकक एक श्रृंखला सेहो अछि । से ईशनाथ झाक 'उगना', विद्यानाथ रायक 'विद्यापति', गोविन्द झाक 'राजा शिवसिंह', 'काँचीनाथ झा 'किरण'क 'विजेता विद्यापति', ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क 'कण्ठहार' सँ ल'क' छत्रानन्द सिंह झाक 'चाही एकटा शिवसिंह' धरि चलैत रहल अछि । विद्यापति ओ हुनकर समय, मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक स्वत्व निर्धारणक प्रस्थान विन्दु थिक । कोनो रूप ओ विधामे हो, ओ एखन धरि विमर्शक विन्दु बनले अछि । तहिना विद्यापति पर्वक सम्बन्धमे सेहो विचार-विमर्श चलैत रहल अछि ।

कोनो नाटकके ँ देखनिहार दर्शक होइत अछि ओहि पर विचार केनिहार समीक्षककेँ नाटकक दर्शक-प्रेक्षक होयब जरूरी छैक जेँ कि नाटकक अभिनय होइत अछि आ से रंगमंच पर होइत छैक तैं दर्शक-प्रेक्षकक संग रंगकर्मी सेहो ओहिसँ जुड़ल रहैत अछि । नाटकसँ प्रेक्षक ओ रंगकर्मीक रूपमे जुड़ाओक बिना ओहि पर

विचार करब, समीक्षा करब समीचीन नहि भ' सकैत अछि । हम सुधांशु 'शेखर' चौधरीक मात्र एकटा नाटक देखने छी । सेहो बीस वर्ष पूर्व । हुनकर नाटक पर विचार करबाक लेल प्रेक्षक नहि हेबाक अभाव हमरा खटकैत अछि । एक कलाकार रूपमे हुनकर नाटकमे भाग लेबाक अनुभवसँ सेहो हम अपनाकेँ वंचित पबैत छी । तैं 'भफाइत चाहक जिनगी'क दर्शक पर पड़ल प्रभावक डोरि पकड़ि जेना हम विचार केलहुँ तहिना शेखरजीक नाटक 'पहिल साँझ'क सम्बन्धमे छत्रानन्द सिंह झाक विचार हम पढ़ैत छी । ओ एक कलाकारक रूपमे ओहि नाटकमे भाग लेने रहथि । ओ नाटक मे रमाकान्तक अंतिम संवाद (जकरा छत्रानन्द सिंह झा नाटकक अंतिम संवाद सेहो कहैत छथि)क सम्बन्ध मे बात करैत निर्देशकक दुविधाक प्रश्न उठौने छथि । ई दुविधा नाटककारकेँ रमाकान्त चारीत्रिक उत्कर्ष अथवा अपकर्षक सम्बन्धमे अभीष्ट स्पष्ट नहि छलनि । से निर्देशक लग समस्या उपस्थित केलक । से समस्या अभिनयक द्वारा दर्शकक समक्ष रमाकान्त चरित्रकेँ फड़िछायब छल । जँ रमाकान्त अपकर्ष देखाओल जाय त' निर्देशक बुझौथिन कलाकारकेँ - अहाँ हारल-थाकल डेगसँ आगाँ बढ़ू आ अपन पत्नीक हाथसँ झोरा लिअ' आ भारी डेगसँ मूड़ी झुकौने घरसँ बहरा जाउ । बस । रमाकान्त हारि गेल । मुदा जँ निर्देशक ई सोचथि जे रमाकान्त चरित्रमे आर दृढ़ता आनल जाय तँ ओ कलाकार केँ कहथिन-अहाँ तेज गतिसँ बढ़ू आ अपन पत्नीक हाथसँ झोरा छीनू आ तेज गति सँ बहराउ । बस । मात्र पद्‌गतिक घटला-बढ़लासँ चरित्रमे एतेक परिवर्त्तन आबि जाइत छैक । छत्रानन्द सिंह झा कहैत छथि जे 'भंगिमा' 'पहिल सांझ'क अन्त निर्देशकक दोसर सुझाबक अनुसार केलक। जखन 'पहिल साँझ' पढ़ैत छी त' ओहिमे सेहो निर्देशकक दोसर सुझाबक अनुसार 'झटका मारि झोरी लैत आ 'तेजीसँ रमाकान्तकेँ बहरा जाइत' देखैत छी । हमरा एकर अर्थ लगैत अछि जे सम्भवत: ई नाटककार ओ निर्देशकक सम्मिलित निर्णयसँ भेल अछि । मुदा रमाकान्तक संवाद नाटकक अंतिम संवाद नहि थिक । अंतिम संवाद उदयकान्तक पत्नी भारतीक अछि । मुदा ताहूसँ पहिने रमाकान्तक पत्नी भुवनेश्वरीक संवाद अछि - 'अहाँ सभ दुख नै करब कनियाँ, ओ ने चलि गेला...हम त' छीहे.. नेनाक सभ किछु अपन आँखिये देखब...' अर्थात् पत्नी पतिक असम्मत व्यवहारक परिमार्जन करबाक कोशिश करैत अछि ।

तैयो नाटक पढ़ि क' हमर समस्या बढ़ि जाइत अछि । रमाकान्त सन अधैर्यवान, चंचल, बेटाक भरोसेँ जमीन-जथा बढ़ेबाक मनसुआ पोस' बला, झाड़फूकमे विश्वास केनिहार जिद्‌दी, बजबाक कोनो संयम नहि रखनिहार चरित्रक उत्कर्ष की देखाओल जेबाक चाही ? बापक एहन चरित्रक समानान्तर बेटाक चरित्र अछि । उदयकान्त नगरमे अपन सामाजिकता बढ़ेबाक लेल बेटाक जन्म दिन पर भोज-भातक ओरिआओन करैत छथि । ओहिमे व्यस्त छथि । एहि व्यस्तताक बीच

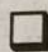
पिताक अप्रत्याशित आगमनसँ प्रसन्न नहि अछि । से एहि कारणे जे पिता एहि बर्थ डे पार्टी कें फिजूल खर्च मानैत छथि । ओ बेटासँ रुपैया ल' खेत-पथार कीन' चाहैत छथि । जखन कि खेती केनिहार कियो समांग नहि छनि । हुनका एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छनि जे बेटा सभ शहरे रहि नोकरी करत त' खेत-पथार के देखत ? खाली खेत कीनलासँ की हैत ? खेती के करत ? ओ खेत कीनि खाली गाममे अपन प्रतिष्ठा-प्रभाव बढ़ेबाक भ्रम पोसने छथि । बेटा बापक एहि मनसुआसँ खिन्न छथि । हुनकाने फाजिल आमदनी छनि ने निरर्थक खेत कीनबाक मोन । मुदा ओ पिता लग अपन मोन खोलि नहि पबैत छथि । अपन विचार प्रकट नहि क' पबैत छथि । एहि विन्दु पर फराक-फराक सोचक कारण दुनूक बीचमे संवादहीनता उत्पन्न भ' गेल अछि । फलतः हुनका गामसँ आयल पिताक संग जरूरियो संवादक खगता महसूस नहि होइत छनि । ओ अपनाकें भोज-भातक इंतजाममे व्यस्त केने रहैत छथि । वस्तुतः ई संवादहीनता बापे नहि, बेटोक व्यवहारकें सम्मत नहि रह' देने अछि । फलस्वरूप पहिले साँझ बाप-बेटामे बझि जाइत छनि आ बाप झोड़ी-झपटा ल' क' पड़ाइत छथि । पोताक बर्थ डे क अवसर पर बिना कोनो सूचनाक अप्रत्याशित रूपें पहुँचल दादाक पड़ेलासँ रंगमे भंग होइत अछि । मुदा भुवनेश्वरी बेटा-पुतहुक संग रहि क्षतिपूर्त्तिक कोशिश करैत छथि ।

जेना शेखरजी कहैत छथि जे हुनका एहि नाटकक माध्यमसँ 'जेनरेशन गैप' देखेबाक छलनि, से ओ देखेबामे सफल भेलाह अछि । तखन कोन चरित्रक उत्कर्ष देखाओल जाय वा अपकर्ष से नाटककार ओ निर्देशकक जीवन-दृष्टि पर निर्भर करैत अछि । जँ ओ मानैत छथि जे बाप कहियो गलत नहि भ' सकैत अछि, बेटाक कमाइसँ बिना ओकर सहमतिक खेत कीनबाक जिद्द ठीक अछि त' ओकर पक्षमे भ' सकैत छथि । ओकर विजय देखा सकैत छथि । मुदा हम रमाकान्तक चारित्रिक उत्कर्षसँ सहमत नहि भ' पबैत छी । से एहि कारणे जे रमाकान्त विचार ओ व्यवहारसँ विवेकशील लोक नहि छथि । ओ अतीतसँ पोसल सोचक प्रति कट्टरताक सीमा धरि अन्ध भ' गेल अछि । बदलैत समयक आहटि हुनका लग जेना पहुँचबे नहि कयल अछि । एहि सभ कारणे आ अपन बेटा-पुतहु-पोताक प्रति एकदम असहिष्णु भ' गेल छथि से अमानवीयताक हद्द धरि । केवल अपना लेल जीनिहार एहन चरित्रक उत्कर्ष देखायब समाज-सापेक्ष दृष्टि नहि भ' सकैत छथि । तखन एकटा तथ्य ध्यातव्य थिक । रमाकान्तक अंतिम संवाद नाटकक अंतिम संवाद नहि थिक । नाटककार ओकरा बाद सासु-पुतहु अर्थात् घरक स्त्री-लोकनि अपन आपसी सौमनस्य, सहिष्णुता सँ एक समानान्तर सकारात्मक प्रभाव सृजित केने छथि । एहिसँ रमाकान्त बेटाक आयोजनकें भण्डूल क' विजयी भावसँ पड़ा जेबाक कथ्य-प्रभाव कम भेल अछि । जँ बूढ़ाक संवाद नाटकक अंतिम संवाद रहि जइतय त' उदयकान्त स्वार्थी मानल

जइतथि, दोषी मानल जइतथि । नाटकमे रमाकान्तक संवाद अछि, 'पहिल साँझ, दोसर साँझ... अन्हार राति । जा धरि ई राति रहत, स्वार्थक चमगुदड़ी फड़फड़ाइत रहत । चकभाउर दैत रहत । (झटका मारि झोड़ी लैत) फल्लां चललाह । ई नाटकक प्रभावकेँ, कथ्यकेँ एकभगाह क' दितय । से स्वाभाविक रूपसँ नकारात्मक होइत।

आधुनिक मैथिली नाटकक एहि सय वर्षक इतिहासमे वस्तुतः नाटकक विकास त' 1960क पश्चाते भेल अछि । से विषय, रूप विधान, टेकनिक ओ परिणाम सभ दृष्टियेँ भेल अछि । एहि विकासमे कोलकाता, पटना, बोकारो, जमशेदपुरक संग मधुबनी ओ जनकरपुर, बेगूसरायक सार्थक योगदान रहल अछि । जहाँ धरि नाटकक कथ्य ओ तदनुरुप शिल्पक विकासक प्रश्न अछि सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक 'भफाइत चाहक जिनगी, (1974), लेटाइत आँचर, (1975), पहिल साँझ, (1982), ओ लगक दूरी (1987)क महत्व नाट्य शिल्पक नव प्रयोग ओकर अनुरूप कथा ल' क' अछि । वस्तुतः शेखरजी ओहि कालक रचनाकार छथि जकर मानसिक शिल्प, नव टेकनिककेँ ल' क' बेसी चिन्ताकुल रहल अछि । से सभ विधा मे । किछु नव करबाक लेल उद्यत । तैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी अपन खास नाट्य-शिल्पक अनुसंधानमे एक सेट ओ एक कालखण्डक नव नाट्य-प्रयोग मैथिलीमे अनलनि । एहि प्रयोगक ओ प्रवर्त्तक भ' गेलाह । हुनकर नाटकक सम्बन्धमे देवशंकर नवीनक टिप्पणी माकूल अछि, 'वस्तुतः जतबा काल प्रेक्षक हिनकर नाटककेँ भोगैए ततबहि कालक घटना पूर्ण कौशलसँ हिनका नाटकमे चित्रित रहैत अछि-से हिनकर नाट्य-शिल्प आ कथा-विन्यासक अतिरिक्त गुण थिक ।' मुदा 'भफाइत चाहक जिनगी' ओ 'पहिल साँझ'क कथा सन 'लेटाइत आँचर' ओ 'लगक दूरी' कथा नहि भ' सकल अछि । 'लेटाइत आँचर' मे दहेजक मारल परित्यक्ता स्त्रीक व्यथाकेँ बाप ओ तीनू भाइक क्रिया-कलाप, सोच ओ विचार द्वारा तीव्र नहि कयल जा सकल । तैं अभीष्ट प्रतिकूल प्रभाव क्षीण भ' गेल अछि । 'लगक दूरी' मे एक वृद्ध पारिवारिक व्यक्तिक व्यथा-कथा पर नामी साहित्यकारक सुख-दुख हावी भ' गेल अछि । तैं नाटक अपेक्षित प्रभाव नहि छोड़ि पबैत अछि । मुदा ई बात पढ़ला पर लगैत अछि । रंगमंच पर प्रदर्शन देखला पर प्रभावक सम्बन्धमे विचारसँ परिवर्त्तन सम्भव थिक । मुदा से अभिनेता ओ निर्देशकक योगदानसँ होयत । सुधांशु 'शेखर' चौधरी आधुनिक नाटकक मूल वृत्ति प्रवाहकेँ मानैत छथि । अपन नाटकमे सभसँ विकसित नाट्य-शिल्प 'पहिल साँझ'केँ कहैत छथि । एक कालखण्डी नाट्य-प्रयोगक जे सभ ओरिआओन भ' सकैत अछि से सभ ओहिमे अछि । शेखरजी अपन चारू नाटकमे एके सेट पर, डेढ़-दू घंटाक कार्य-व्यापारसँ घटनाक अव्याहत प्रवाहसँ हाँड़ीमे रन्हाइत भातक एके दानाकेँ पीचि क' सम्पूर्ण हाँड़ीक भातक सम्बन्धमे अर्थात् जीवनक सम्बन्धमे जे बात कहलनि अछि से हुनक जीवन-दृष्टि पर

आधारित अछि । ई जीवन-दृष्टि समाजसँ बेसी व्यक्तिकेँ सत्ता देबाक जीवन-दृष्टि थिक । ओ नव हाँड़ी अनलनि, आगि पजारबाक उपकरण बदललनि मुदा ओहिमे नव चाउरक भात नहि रान्हि सकलाह । नव चाउरसँ हमर तात्पर्य जीवनकेँ समाज-सापेक्ष दृष्टिसँ देखैत अन्तर्वस्तुक चयन अछि । मुदा, एतबा धरि अवश्य जे रंगकर्मक प्रति निष्ठा, रंगमंचसँ दीर्घ सम्बद्धताक कारणे ओ अपन नाटकमे परिवेशक सृजन ओ नाट्य-प्रेक्षककेँ सामाजिक-समस्या पर सोचबा-विचारबाक लेल विवश करैत अछि । सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाट्य-शिल्पक ई कमाल देखबा जोगर अछि । ई कमाल हुनका समकालीन नाटककार सभसँ एकदम फराक सिद्ध क' दैत अछि ।



सामाजिक परिवर्त्तन आ मैथिली पत्र-पत्रिका

❑ अशोक

मैथिली पत्र-पत्रिकाक सय वर्षक यात्रापर टिप्पणी करैत तारानन्द वियोगी कहैत छथि जे, 'देसी-भावनाक उत्थान अभिप्सा संग शुरु कयल अभियान अन्ततः एहि बन्ध्या संतोषपर आबि कऽ टिकल जे मैथिली रचनाक मैथिलत्व ओकर भाषा थिक। चिन्तन, भाव-बोध आ संवेदन-प्रणाली बीचसँ निपत्ता भऽ गेल। दोसर, तहिया समाज सुधारक मिशन लऽ कऽ कार्यारम्भ भेल छल। किछु दशकक बाद एकर स्थान लेलक 'समाज परिवर्त्तन'। युग सापेक्ष समझ छल ई। मुदा कोनो कार्य-नीति नहि छल पत्रकारिता लग, जकरा बलपर ओ अपन समझकेँ क्रियान्वित करितय। संपादकीयमे लिखल जाइवला अलंकार वाक्यटा ई साबित भेल। स्वयं पत्रिकेमे छापल जाइत रचनासँ एकर तालमेल बैसैत हो, ततबोटा जरूरी नहि बूझल गेल। उपलब्धि शून्य।' एही संग ओ ई प्रश्न सेहो रखलनि अछि जे 'समाजमे परिवर्त्तन तँ अवश्य घटित भेल अछि, मुदा तकर कारक हमरा लोकनि पत्रकारिताकेँ मानी, तकर की साक्ष्य अछि?' (घर-बाहर, जुलाइ-दिसम्बर 2004) वियोगीक एहि टिप्पणीसँ एतबा स्पष्ट अछि जे मैथिली पत्रकारिता हुनक नजरिमे समाज-सुधारक मिशनसँ शुरू भेल आ बादमे समाज-परिवर्त्तनक दृष्टि सेहो ओहिमे आयल। एहि मामिलामे हुनकर शिकायत छनि जे सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टि-बोधकेँ क्रियान्वित नहि कयल गेल। सम्पादकीय दृष्टि संग पत्रिकामे छपल रचनामे तालमेल बैसायबकेँ जरूरी नहि बूझल गेल। तँ समाजमे होइत परिवर्त्तनक साक्ष्य मैथिली पत्रिकामे नहि भेटैत अछि। एही संग ओ इहो प्रश्न उठबैत छथि जे पत्रकारितासँ सामाजिक परिवर्त्तन भेल अछि तकर की साक्ष्य अछि? प्रश्नक ध्वनि कहैत अछि जे हुनका मतेँ कोनो साक्ष्य नहि अछि।

हमरा लगैत अछि जे सामाजिक परिवर्त्तन आ मैथिली पत्रकारिता पर वियोगीक टिप्पणी संगत नहि छनि। खिसिआयल लोक सन छनि। एकरे संग ओ पत्रकारिता ओ पत्रिकाक सम्पादनकेँ 'एक्टीवीज्म' धरि खींचि कऽ लऽ गेलाह अछि। हुनक दृष्टिमे पत्रिका ओ सम्पादकक काज समाजमे परिवर्त्तन अनबाक स्पष्ट चिन्तन ओ निष्ठाक संग एक कार्य-नीति तैयार कऽ ओकरा क्रियान्वित करबाक थिक। एहन अपेक्षा करब अन्याय नहि तँ बलधकेल अवश्य लगैत अछि। वस्तुतः सामाजिक परिवर्त्तनक लेल वियोगीक अपेक्षा एक सामाजिक आन्दोलनक छनि जकर विचार ओ कार्य-नीति, कार्य-क्रम आदि मुखपत्र रूपमे, पेम्फलेट, फोल्डर रूपमे निकालल जाइत अछि। ओ पत्रकारिताकेँ स्वतंत्र रूपमे नहि देखि रहल छथि। संगहि सामाजिक

आन्दोलनक भार सम्पादक लोकनिपर सेहो दऽ रहल छथि। दोसर, वियोगी एहा बातकेँ मैथिलीक सन्दर्भमे उठा कऽ वस्तु स्थितिसँ दूर चल गेलाह अछि। हुनक दृष्टि वस्तुपरक नहि रहलनि अछि। जतऽ पत्रकारिताक आइधरिक उपलब्धि एतबे कहल जा रहल हो जे ओ पत्रकारिताक विकासक संभावनाकेँ जिऔने रहल अछि अर्थात वास्तविक अर्थमे पत्रकारिता प्रारम्भे नहि भेल अछि ततऽ सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टिसँ बहुत अपेक्षा करब अनर्गल नहि तँ तथ्यकेँ अनठायब अवश्य थिक। ओ एही संग सम्पादकसँ एक सामाजिक कार्यकर्त्ता होयबाक अपेक्षा सेहो कऽ रहल छथि। वस्तुतः पत्रकारिता सेहो समाजेक भीतरसँ समाजेक द्वारा ओ समाजेक लेल होइत अछि। तँ समाजसँ फराक ओकर विशिष्ट अस्तित्व नहि भऽ सकैत छैक। विशिष्ट व्यक्तित्वो नहि भऽ सकैत अछि? कतेक ऊपर उठि सकैत अछि? एकर आवश्यकता नहि छैक। ताहूमे मिथिलामे कोनो सामाजिक आन्दोलन परिवर्त्तनकामी ओ मैथिली चेतनाक संग समन्वित भऽ कऽ नहि भेल अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिका निकालबाक पाछू वैचारिक दृष्टि तँ रहल अछि मुदा व्यावसायिक आधार नहि। वैचारिक दृष्टि सम्पन्न पत्रिकोकेँ समाजक बीचमे व्यापक प्रसार-प्रचार देबाक निष्ठा ओ श्रमक अभाव रहल। जे दूटा दैनिक पत्र निकलल-स्वदेश ओ मिथिला-मिहिर तकर पाछू कोनो व्यावसायिक वा वै . क दृष्टि नहि छल। स्वदेश निकालबाक पाछां मैथिलीक प्रति सेवाभाव छल तँ मिथिला मिहिर हिन्दी दैनिक आर्यावर्त्तक कोरपच्छू रहय। ओहिमे आर्यावर्त्तक बासि-तेबासि समाचार छापल जाय।

सम्पादकक मनमे ई डर रहनि जे दैनिक मिथिला-मिहिर आर्यावर्त्तक व्यवसायकेँ प्रभावित ने करय। तँ बादमे ओ टुगर सेहो भऽ गेल। मोटामोटी अधिकांश पत्रिकाक पाछू मात्र मैथिलीक प्रति सद्‌भाव ा अथवा मैथिलीक नामपर किछु करबाक एकटा इच्छा मात्र रहलैक अछि। (बाबू साहेब चौधरी, देसकोस, नवम्बर 1981) तीक्ख तेवरवला पत्रिका 'शिखा'क सम्पादक अग्निपुष्पक अनुसार 'मैथिली पत्रकारिताकेँ विकसित नहि होयबाक पाछू सभसँ पैघ कारण जे मैथिली पत्रकारिता प्रतिक्रियाक पत्रकारिता रहल, उकटा-पैंचीक पत्रकारिता रहल। समष्टिक पत्रकारिता नहि भऽ कऽ व्यष्टिक पत्रकारिता रहल।' (देसकोस, 1982)। हमरा लगैत अछि जे पत्रकारिताक विकास नहि होयबाक पाछां जे कारण सभ अग्निपुष्प गनौलनि अछि से सत्य मुदा मैथिली पत्रकारिताक विकासक सम्भावनाकेँ जियौने रखबामे एहि कारण सभक उकटा-पैंचीमे नुकायल वैचारिक कारण सभक हाथ अवश्य रहल अछि। व्यक्तिगत उकटा-पैंची वैचारिको होइत अछि। से मिथिला मिहिर ओ मिथिला मोदक बीचक हो वा मिथिला मिहिर ओ विभूतिक बीचक, मैथिल महासभाक पक्ष-विपक्षक हो वा विभूति ओ भारतीक बीचक, मैथिली पत्रिका तँ एही कारण सभक बीच निकलैत ओ बन्द होइत रहल अछि। एही कारण सभकेँ चीन्हि 'आरम्भ'क सम्पादक राजमोहन झा अपन पत्रिकाकेँ आइयो उकटा-पैंचीक चरित्र प्रदान कयने छथि। एही उकटा-पैंचीवला

प्रतिक्रिया सभक बीच पत्रिकाक वैचारिक गतिशीलता बनल रहैत छैक। बिना कोनो सामाजिक दवाबकेँ आर कतेक आशा कयल जा सकैत अछि? तेँ मैथिलीक आड़ धरिक पत्रकारितासँ समाजिक परिवर्त्तनक बेसी आ व्यापक अपेक्षा करब ततेक समीचीन नहि होयत। हँ, जेना **चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे कहने छथि जे मैथिली पत्रकारिताक आड़ धरिक उपलब्धि एतबे कहल जा सकैत अछि जे पत्रकारिता विकासक सम्भावनाकेँ जियौने रहल अछि तहिना इहो कहल जा सकैत अछि जे मैथिली पत्र-पत्रिका अपना भीतर एतबा साक्ष्य अवश्य रखने अछि जे समाजमे होइत परिवर्त्तनकेँ ओहिमे अकानल जा सकय।** यैह बात मैथिलत्वक सम्बन्धमे सेहो कहल जा सकैत अछि। एहू बातक साक्ष्य पत्र-पत्रिकामे भेटि सकैत अछि जे मैथिली रचनाक मैथिलत्व केवल भाषा धरि सीमित नहि अछि। ओकर वास्तविक स्वत्वक निर्धारण-प्रक्रिया लगातार चलैत रहल अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिकामे सामाजिक परिवर्त्तनक स्वरकेँ हम अकानी एहिसँ पूर्व ई देखब आवश्यक अछि जे परिवर्त्तनक विरोधी धारा समाजमे कोना अपन जड़ि जमौने छल आ ओकर प्रभाव पत्र-पत्रिका पर कतेक रहय। पहिल मैथिली पत्रिकाक जन्म 1905 मे भेल। ई ओ काल छल जखन मिथिलेश छलाह रमेश्वर सिंह। ओ सनातन धर्मक संपोषक रहथि। सम्पूर्ण देश हुनका सनातन धर्मक रक्षक रूपमे चीन्हि रहल छल। हुनका अपन राजमे बढ़ैत विभिन्न असंतोषकेँ दबयबाक लेल मैथिल बुद्धिजीवी लोकनिक एकजुट सहायताक आवश्यकता अनुभव भेलनि। दरबारसँ सम्बद्ध उदार ओ रूढ़िवादी बुद्धिजीवीक बीच सेहो वैमनस्य पनपि रहल छल। एहिसँ हुनका खतरा छलनि। एही सभ कारणसँ ओ मैथिल महासभाक स्थापना लेल अपन स्वस्ति देलनि। महासभाक पहिल अधिवेशनमे महाराज सभापतिक आसनसँ भाषण दैत मैथिली ब्राह्मणक जाति गौरवकेँ सनातन धर्मसँ जोड़लनि आ सनातन धर्मक पहिल अंग राजभक्तिकेँ मानैत लोकसँ अपील कयलनि जे राजशासन प्रणालीक विरुद्ध आचरण नहि करी। महाराजक आशय स्पष्ट छल। ओ अपना विरुद्ध उपजैत असंतोषकेँ रोकबाक लेल धर्मक ईंटा ओ ब्राह्मण जातिक गौरवक सिमेंटसँ बनल मजबूत छहरदेवालीक निर्माण चाहैत छलाह। तकर निर्माण भऽ गेल। एहिमे कोनो नवता नहि छल। एहन छहरदेवाली तँ सभ युगमे बनैत रहल अछि। कने परिवर्त्तनक संग आइयो बनैत अछि। मुदा हर्ज ई भेल जे ओइ छहरदेवालीक भीतर मैथिली चेतनाकेँ सेहो क्रमिक रूपेँ घेरि कऽ राखि देल गेल। एहि लेल महराज ओतेक दोषी नहि जतेक मैथिली चेतनासँ सम्पन्न बुद्धिजीवी। महाराजक एजेंडामे मैथिली नहि छल। मुदा बुद्धिजीवी लोकनि अपन स्वार्थवश मैथिली चेतनाकेँ ड्योढ़ीक भीतर लऽ गेलाह। मैथिल महासभाक निर्धारित एजेंडाक अनुसार पत्र-पत्रिका काज करऽ लागल। एजेंडाक गुणगान साहित्यसँ बेसी कयलनि। एकर बाद रमेश्वर सिंहक सनातन धर्मक विकास कुमार गंगानन्द सिंहक व्यापक हिन्दू धर्ममे भेल। गंगानन्द सिंह हिन्दू

महासभाक अध्यक्ष सेहो भेलाह। ओ मिथिला पत्रिकाक वर्ष-1, अंक-6 मे 'हिन्दू संगठन रूपी क्रान्ति' नामक निबन्धमे लिखलनि जे 'हिन्दू धर्मसँ हमर तात्पर्य हिन्दू संस्कृति, सभ्यता तथा विनिमय द्वारा हिन्दू जातिक आत्मरक्षा प्रणालीक बोध करायब अछि।' आब मैथिली चेतना सनातन धर्मसँ आगू बढ़ि हिन्दू संस्कृति, सभ्यता दिस बढ़ल। एकरे लगक एक धारा भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क छल। ओ 'विभूति' रहथि। मैथिलीमे प्रगतिशील रचनाकार सेहो मानल जाइत छथि। ओ भारतीय राष्ट्रीय धारासँ प्रभावित भऽ धार्मिक पर्वकेँ मिथिलाक जातीय (राष्ट्रीय) पर्वक रूपमे मनयबाक बात अपन पत्रिकामे रखलनि। जानकी नवमीकेँ राष्ट्रीय पर्वक रूपमे मनयबाक बात सेहो शुरू भेल। मुदा एकरे संग भुवनजी ब्रिटिश महाराज-महारानी, राजकुमारी सभक प्रति सेहो अपन अनुराग प्रकट कयलनि। हुनका सभसँ बहुत किछु सिखबाक लेल प्रेरित कयलनि। ई राज दरभंगाक आगू पैघ प्रभुताक डाँरि खीचब छल। राज दरभंगासँ हुनका झगड़ा रहनि। मैथिली चेतनाक विकास, धर्म, जातिक बाद राष्ट्रक रूपमे सेहो समक्ष आयल। दरभंगा महराजसँ अपील कयल गेल जे ओ मैथिल राष्ट्रपति बनि शीघ्र मिथिलाक अभ्युदयक हेतु प्रयास करथु। मैथिल अभिजन वर्गक यैह मनोकामना विकसित भऽ स्वतंत्रताक बाद मिथिला राज्यक निर्माण लेल आन्दोलनक आधार बनल। एहि प्रकारेँ बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिलाक राजनैतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्यकेँ पुनः स्थापित करबाक प्रयासक परिणति मिथिला राज्य आन्दोलनक रूपमे भेल। परन्तु ई मिथिला आन्दोलन कोनो नव राज्यक स्थापना लेल नहि अपितु मिथिलाक पुरान राजनीतिक स्थितिकेँ पुनः स्थापित करबाक प्रयास छल। वस्तुतः ई राज्य मैथिल अभिजनक आदि गौरव अर्थात् अंग्रेजीराजसँ पहिनेक एक संप्रभुराज तिरहुत छल। एहि मिथिला राज्य आन्दोलन ओ मैथिल राष्ट्रीयताक कोनो आर्थिक आधार नहि छल। युवा इतिहासकार पंकज कुमार झा 'मैथिल राष्ट्रीयताक आर्थिक आधार' नामक अपन निबन्धमे (आब हुनक Imaging Mithila '1875-1955' पोथी आबि गेल अछि) लिखलनि जे 'मिथिला नव विचार पचयबामे असमर्थ छल, इहो स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक सामाजिक संरचना अर्थ व्यवस्थाक व्यापरीकरणक अभावक कारण सेहो छल। खेत मालिकक रैयतक संग शोषणकारी कटु सम्बन्ध तथा अतिरिक्त उत्पादनक उपभोगक भयंकर सामंती प्रवृत्ति कृषि क्षेत्रक अतिरिक्त उत्पादनकेँ पूंजीक औद्योगिक निवेशक दिशामे बाधक भेल। सुव्यवस्थित योजनाक अभाव तथा आधारभूत सुविधाक कमीसँ कृषि आधारित उद्योगक विकास मार्गो खुजि नहि सकल। एकर परिणाम स्वरुप एकटा एहन बुद्धिवादी अभिजन वर्गक निर्माण भेल जे स्वभावतः 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना' लोकक समूहमे विखण्डित छल आ ओकरा लेल ई सम्भव नहि छलैक जे ओ मिथिला जनपदक सामान्य लोककेँ राज्य निर्माणक प्रक्रियासँ जोड़ि सकय अथवा ओहि कार्यलेल ओकर समर्थन प्राप्त कऽ सकय। एहि तरहेँ आर्थिक स्तरपर मैथिल समाजक उच्च वर्गीय विभाजन तथा सामन्ती मानसिकताक कट्टरपना एहिठाम राष्ट्र निर्माणक आधारभूत उपागमक निर्माण नहि कऽ सकल।

स्वाभाविक छल जे एहन बुद्धिवादी अभिजन वर्गक मैथिल चेतना परिवर्त्तनकामी नहि भऽ सकैत छल। सामाजिक परिवर्त्तनक मादे ओ सोचियो नहि सकैत रहय। ओ तँ अपन समर्थन यथास्थितिवादक पक्षमे दैत रहल। मैथिल अभिजन वर्गक सांस्कृतिक वर्चस्व समाजमे कायम रखबाक सेहन्ता ओकर मनमे चकभाउर दैत रहलैक। ई सेहन्ता ओकरा साम्प्रदायवादक आंगनमे ठाढ़ कऽ देलकैक। जकर पाछू सनातन धर्म ओ जाति गौरवक अन्ध परम्परा छलैक। एहन मानसिकता धर्मनिरपेक्ष ओ परिवर्त्तनकामी कोना भऽ सकैत छल? ई मानसिकता मिथिला, मैथिली ओ मैथिलक बहुत अहित कयलक। आइयो ई मानसिकता खतम नहि भेल अछि। विद्यानन्द झा मैथिली कवितामे साम्प्रदायिकतासँ ओतप्रोत पांती लिखनिहार कविकेँ मैथिली कविताक जनपदसँ बारि देबाक बात कहलनि अछि। (आरम्भ, नवम्बर, 2004)

मैथिल महासभाक माध्यमसँ सनातन धर्म ओ जातीय गौरवक ई साम्प्रदायिक धारा मिथिला मैथिल ओ मैथिलीकेँ लगातार संकुचित ओ अतीतगामी बनबैत रहल। एहि संकुचन ओ अतीतगामिताक प्रभाव स्वाभाविक रूपे पत्र-पत्रिका, मैथिली आन्दोलन, मैथिल संस्था सभक गतिविधिसँ लऽ कऽ मैथिली शिक्षण व्यवस्था-अध्यापन प्रणाली तकमे पड़ैत रहल। मुदा एहि सभक बावजूद मिथिला, मैथिल ओ मैथिली आइ धरि प्रासंगिक बनल अछि तँ एहिमे संलग्न एहन चेतना सम्पन्न बुद्धिजीवी लोकनिक कारणे जे परिवर्तनकामी ओ धर्मनिरपेक्ष रहलाह अछि। मैथिली पत्र-पत्रिकामे सेहो हिनकर हस्तक्षेप ओ योगदान प्रारम्भेसँ चलैत आबि रहल अछि। यात्री फरवरी 1938 क 'विभूति' पत्रिकामे मैथिल महासभाक मैथिलत्वक मानदंडपर टिप्पणी करैत आक्रोश व्यक्त कयलनि- 'मिथिलेश-सुधारक मिथिलेश(?)-जाहि संस्थाक कर्णधार होथि, तकर एहि प्रकारक संकुचित सिद्धांत देखि मिथिलाक लाख-लाख अधिवासी-जे मैथिल होइतहु मैथिल नहि-क्षुब्ध छथि। चिरकालसँ अपनहि घरमे, अपनहि बन्धुवर्ग द्वारा ठोंठिऔल गेल मिथिलाक सन्तान आइ यदि आजिज आबि अपनाकेँ 'बिहारी' कहब आरम्भ कयलक अछि तँ एहिमे दोष ककर?' स्वाभाविक अछि जे आइयो यदि वियोगी, सुभाष चन्द्र यादवक कथन 'मैथिलीमे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा थिक' (सन्धान, जुलाइ 2000) क आधार लऽ ई आरोप लगबैत छथि जे मैथिलत्व भाषे धरि सीमित भऽ गेल अछि तँ हुनकर आशय स्पष्ट अछि। मुदा वियोगीकेँ सुभाषचन्द्र यादवक सम्बन्धमे सेहो अपन टिप्पणी मन रखबाक चाहियनि। सुभाषक कथामे हुनका 'अकहानी तत्व' सर्वाधिक प्रस्फुटित रूपमे देखाइ पड़ल छलनि। आ 'अकहानी' केँ ओ परम्परा निर्धारित आ सामान्य-समर्थित गुणधर्मसँ मुक्त कहानी मानैत छथि। (सन्धान, जुलाइ 2000) एहनामे सुभाषसँ ओ मैथिलत्वक सम्बन्धमे आर की कहबाक आशा करैत छथि। जखनकि मैथिलीक स्वातंत्र्योत्तर कथा-प्रवृत्ति सभकेँ विश्लेषित करैत मोहन भारद्वाज (मिथिला मिहिर, 9 एवं 16 नवम्बर 1975) ई विचार रखने छलाह जे कोनो भाषाक कथा मात्र एहि लेल ओहि भाषाक साहित्य नहि होइछ जे ओ ओहि भाषामे लिखल गेल अछि। प्रत्येक भाषामे

अपन विवशता, मुक्ति प्रयोजन, सीमा, संस्कार, परम्परा आ विशिष्टता होइत छैक-समय, परिवेश आ व्यक्तित्वक कारणे।' अथवा विद्यानन्द झा पछिला दशकक मैथिली कवितापर विचार करैत मैथिल परिचिति (मैथिलत्व) क सम्बन्धमे जे दूटा प्रश्न उठौलनि अछि से मैथिलत्वक निर्धारणक लेल गम्भीर प्रयास नहि मानल जयबाक चाही? आरम्भ, नवम्बर 2004क अंक मे ओ लिखैत छथि जे 'एहि समयक बहुलांश मैथिली कविता वा कमसँ कम एकटा महत्वपूर्ण अंश स्मृति-स्थित गाममे अछि। की ई एहि कारणे जे भारतीय राष्ट्र राज्यक नगरमे हमरा सभक मैथिलक रूपमे कोनो अस्तित्व नहि छल वा अछि? आ तँ मात्र एकटा स्मृतिमे बसल गाम। वा की एहि कारणेँ जे गुन्टर ग्रासक जिद्दी बच्चा जकाँ हमरा सभ भारतीय राज्य-व्यवस्थामे भाग नहि लेबाक लेल पैघ नहि होयबाक निर्णय लेलहुँ? एहि बातपर विचार होयबाक चाही। दोसर, बिन्दु अछि भारतीय राष्ट्र-राज्य, मैथिल परिचिति आ ओकर अन्तर-सम्बन्धक। कारगिल, चीन, कश्मीर, काश्मीरी पंडित-बेसी काल एहि दशकक मैथिली कविता एकटा केन्द्रीकृत, अन्धराष्ट्रवाद दिस अग्रसर राष्ट्र-राज्यक समर्थनमे ठाढ़ भेल अछि। ई ठाढ़ होयब हमर मैथिल परिचितिकेँ कोना प्रभावित करैत अछि-एकर हमरा सभकेँ जाँच करक चाही।' विद्यानन्दक आशय आ चिन्ता स्पष्ट अछि। मैथिल परिचिति (मैथिलत्व) क निर्धारण लेल धर्मनिरपेक्ष ओ परिवर्त्तनकामी स्वत्वक परिचय एवं ओकर विकास तथा गामक अतीतमुखी स्मृतिक 'बच्चा सन जिद' छोड़ब आवश्यक भेल जा रहल अछि। मुदा बहुतोकेँ एहिमे 'मैथिलत्व'क रंग धोखड़ि जयबाक आदंक छनि। एहि आंदककेँ हिन्दीक राम विलास शर्मा सन बुद्धिजीवी आर बढौनहि छथि। मुदा एहिठाम फेर यात्री हमरा लोकनिकेँ आश्वस्त करैत छथि। हमरा जनैत एहि लेल मैथिल सामाजिक परम्पराक जीवन्त ओ युगानुरूप परिवर्त्तनक गुणसूत्रक खोज ओ परिचय मैथिली रचनाकार लोकनि लेल आवश्यक छनि नहि तँ ओ भारतीय चिन्तन, इतिहास, समाज-संस्कृतिमे मिथिलाक अपन निजत्वक संग योगदान नहि कऽ सकताह। जखनकि भामीक शब्द प्रमाण अछि जे, उत्कलक इतिहास तथा प्राचीन साहित्यक अपेक्षा मिथिलाक इतिहास किंवा प्राचीन साहित्य-सम्पति उनैस नहि, बीसे बुझबाक थिक-विश्वक पैघ-पैघ ऐतिहासिक तथ्य एहि बातक गवाही दऽ सकैत छथि। मिथिलाक धन-जन सेहो उत्कलसँ कोनो हिसाबें कम नहि।' (विभूति, फरवरी, 1938)

मिथिलाकं इतिहास-संस्कृतिमे जेना जीवन्त ओ युगानुरूप गुणसूत्र सभ विद्यमान अछि तहिना पत्र-पत्रिका सभमे सेहो परिवर्त्तनकामी चेतनाक तथ्य दृष्टिगोचर भऽ सकैत अछि। मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हित साधन' मैथिल समाजक दशा सुधारबाक हेतु प्राथमिक शिक्षाक प्रसारपर जोर देलक। लिखब, पढ़ब, गणित, भूगोल, इतिहास आदि सामाजिक शिक्षाक मिथिलामे नितान्त आवश्यकताकेँ देखैत महाराज दरभंगासँ अपील कयल गेल जे शहरमे नली-नाला, टाउन हॉलक निर्माणक बदला

प्राथमिक शिक्षाक प्रचार लेल मिथिलाक अनेक प्रान्तमे प्राइमरी स्कूल स्थापित कयल जाय। समाजक स्थितिमे प्राथमिक शिक्षाक प्रसारसँ परिवर्त्तन अनबाक ई दृष्टि तत्कालीन पृष्ठभूमिमे परिवर्त्तनकामिये दृष्टि रहय। एहि लेल व्याकरण, गणित, भूगोल आदि बालोपयोगी पोथी लिखबाय ओकर प्रकाशन सेहो कयल गेल। साहित्यिक विषयकेँ प्रमुखता नहि दऽ समाजकेँ मुख्य रूपसँ आधुनिक शिक्षा दिस अभिमुख करब ओहि पत्रिकाक मुख्य उद्देश्य रहैक। 1929 मे 'मिथिला' पत्रिकाक पहिले अंकमे लिखल गेल जे, 'भाषा सम्बन्धे हम मिथिलावासी प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र, कायस्थ, मुसलमान, अंगरेज, बिहारी, बंगाली, मारबाड़ी, कानकुब्ज एवं वैष्णव, शाक्त, दयानन्दी, रमानन्दी, कबीरपंथी तथा अन्यान्य मतावलम्बीकेँ एक दृष्टिसँ मैथिल कहै छिऐन्ह एवं हुनका लोकनि सँ मैथिलीक प्रति एक रंग सेवाक आशा करैत छी। उदार विचारक सर्वदा हमरा लोकनि पक्षपाती रहब तथा अपना नीतिक विरूद्धो लेखकेँ (यदि ओहिमे किछु तथ्य रहलैक तँ) पत्रमे प्रकाशित करब।' **'मिथिला'** समाजमे स्त्रीक अवनतिपर सेहो साकांक्ष रहय। स्त्रीक दशाक सम्बन्धमे हरिमोहन झाक रचना सभ ओहिमे छपल छल। पत्रिकाक एक सम्पादक भोलालाल दास आधुनिक विचारक लोक रहथि। पत्रिका मानैत छल जे हिन्दू जातिक अवनति स्त्रीगणहुक अवनतिपर ओतबे निर्भर अछि जतबा नीच जातिक अवहेलनापर।' ई कहल जा सकैत अछि जे स्त्रीगणक उत्थान लेल ओकर दृष्टि सवर्ण समाज धरि सीमित छल। मुदा ई तथ्य अछि जे स्त्रीक मामिलामे सवर्ण ओ अवर्णमे कोनो भेद नहि अछि। दलित स्त्री तँ दोहरी मारि सहैत अछि। घरमे पुरुषक मारि आ बाहरमे सवर्ण वर्चस्वक मारि। वर्ण व्यवस्थाक प्रभाव ओकरा दुनूठाम प्रताड़ित करैत अछि। 'मिथिला' समयानुसार सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा साहित्यिक परिवर्त्तन अथवा 'क्रान्ति' करबकेँ अपन उद्देश्य मानलक। ओहिमे सामाजिक लेखनक प्रधानता रहल। ओना यैह ओकर बन्द होयबाक कारणो बनल। भोलालाल दास अपन सम्पादकीयमे युवक आन्दोलनपर सेहो जोर देलनि। युवक आन्दोलनकेँ सामाजिक क्रान्ति (Socialistic revolution) क रूपमे परिभाषित कयलनि। एही संग ओ इहो कहलनि जे, 'हम जहिना अपन रूढ़ि प्रथाक अन्ध अनुकरण करबाक घोर विरोधी छी।' हमरा सभ जनैत छी जे 1917 मे रूसमे बोलशेविक क्रान्ति सफल भेल छल आ ओतऽ लेनिनक नेतृत्वमे समाजवादी सरकारक गठन भेल। ओहि विचारधाराक प्रभाव सेहो मैथिली पत्रिकामे एहि प्रकारेँ दृष्टिगोचर होअऽ लगैत अछि। मुदा से अपना शर्त्तपर, अपन आवश्यकताक अनुरूप। एहि प्रकारक सामाजिक परिवर्त्तनक मानसिकता ओ आकांक्षाकेँ 'मिथिला' मे देखल जा सकैत अछि। मुदा चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन पत्रकारिताक इतिहासमे लिखलनि अछि जे, 'मिथिला एक दिस मैथिलीक अस्तित्व रक्षाक हेतु सन्नद्ध छल तँ दोसर दिस स्त्री शिक्षाक प्रबल पक्षधर सेहो। ई समाजक हेतु नीक भेल अथवा अधलाह एहि बिन्दु पर वैमत्य भऽ सकैत अछि। भौतिकवादी दृष्टिसँ विचार कयनिहार एकर समर्थन करताह। भारतीय परम्पराक समर्थक नहि, कारण आधुनिक

शिक्षाक प्रसारसँ जे पारिवारिक जीवनमे वैषम्य आबि रही अछि, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ई जे अपवर्ग चतुष्टयक प्राप्ति भारतीय जीवनक लक्ष्य छल, ताहिमे अर्थ, काम मात्र बचि गेल अछि, जाहि कारणे समाजक बीचक जे एक सौहार्द ओ सौमनष्य छल तकर लोप भइये गेल पारिवारिको जीवन टूटि रहल अछि।' स्पष्ट अछि जे अमरजीक भारतीयतामे मैथिलत्वक अवधारणा कूपमंडूक ओ वर्णवादी-पुरूष वर्चस्वक रहय। जखन कि यथार्थ से नहि थिक।

'मिथिला'क बादक पत्रिका सभ 1960 सँ पूर्वधरि क्रमशः भाषा आधारपर 'मिथिला' प्रान्तक गठनक समर्थन ओ विरोधमे अपनाकेँ लगौने छल। एहि पत्रिका सभ द्वारा मैथिल समाजक राजनीतिक दृष्टिकोणकेँ अभिव्यक्त होयबामे सहायता भेटलैक। हिन्दीक विरोध ओ कांग्रेस शासनक विरोधक स्वर एहिमे प्रमुख रूपेँ देखाइ पड़ल। डा० लक्षमण झाक 'मिथिला' साप्ताहिक एहि दिशामे अग्रगण्य कहल जा सकैत अछि। एही संग एहनो मैथिलीभाषीक संख्या थोड़ नहि रहय जे मैथिलीकेँ कण्ठ दाबि घरमे बैसा देबाक हेतु हिन्दीक समर्थन फाँड़ बान्हि कऽ रहल छलाह। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' दरभंगासँ प्रकाशित होइत एहन हिन्दी पत्रिका सभमे कुलानन्द नंदनक सम्पादकत्व मे 'पंचायती राज' आ प्रो० धर्मप्रिय लालक सम्पादकत्वमे 'उदय' नामक पत्रिकाक नामोल्लेख कयने छथि। आठम दशकसँ मैथिली पत्रिकामे जनसामान्यक समस्याकेँ उठयबाक प्रवृति बढ़य लागल। जनभाषा, जनसाहित्यक खगता अनुभव कयल जाय लागल। सरकारक विरोधक स्वर मुखर होअऽ लागल रहय। एकर प्रारम्भ 1971 मे 'मिथिला टाइम्स' सँ भेल। एकर सम्पादक रहथि विजय कान्त ठाकुर। मिथिला टाइम्सक सम्बन्धमे अमरजीक मन्तव्य अछि जे 'एक विचारधारा विशेषक राजनीतिज्ञ लोकनिमे कम्युनिस्ट पार्टीक नेता एहि क्षेत्रक भाषाकेँ अपन माध्यम बनाय विचारक प्रचारमे सुविधा होयत तकर अनुभव कयलनि, यैह एकर सभसँ पैघ उपलब्धि हम मानैत छी। आन कोनो राजनीतिक दलक ध्यान एहि दिस नहि गेलनि अछि। यदि सत्य कहल जाय तँ एहि प्रेरणाक मूलमे छलाह श्री भोगेन्द्र झा (सांसद), तेँ एकर श्रेय हुनके छनि। जेँ ई दल अपनाकेँ जनवादी कहैत अछि तेँ भाषाक दृष्टिसँ सेहो ई जनभाषाक अधिक निकट छल। परिणामतः साहित्यक भाषासँ ई दूर चल गेल छल।' मिथिला टाइम्समे प्रकाशित लेख, समाचार-विचारक अध्ययनसँ सामाजिक परिवर्त्तन सम्बन्धी साक्ष्य सम्पादकीय दृष्टि संग भेटि सकैत अछि। आठम दशकमे **'शिखा'** सेहो अपन तीक्ख ओ विद्रोही स्वर द्वारा सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टिकेँ जगजियार कयलक। वर्ग समाज आ लेखन, जन साहित्य, लेखकीय एकता, आजुक कथा, नक्सलवादी आन्दोलन, मैथिली पत्रकारिता आदि विषयपर ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टिएँ विचार उपस्थित कयल गेल। ओहिमे 'वर्त्तमान' नामक स्तम्भ अन्तर्गत् देशसँ मिथिला धरिक समाचार-विचार आदि परिवर्त्तनकामी दृष्टिकोणक संग छापल जाइत छल। आपातकालमे व्यवस्था विरोधी एहन लेखन बहुत साहसक काज रहय। एकर पाछू एक दिस नक्सलवादी आन्दोलनक प्रभाव छल तँ सामाजिक परिवर्त्तनमे आस्था रखनिहार मैथिली पत्र-पत्रिकाक चेतना सम्पन्न सम्पादकक परम्परा सेहो विद्यमान

रहय। एहिसँ पूर्व **सन्निपात** (1971), **अग्निपथ** (1973) निकलि चुकल छल आ सोमदेव मैथिली कविताक पहिल अग्नि संकलन निकालि चुकल छलाह। एहिठाम धरि अबैत-अबैत सामाजिक परिवर्त्तनक अवधारणामे सेहो क्रमिक विकास होइत गेल छल से संकीर्णताक सर्वथा उकन्ननपर आधारित रहय। एहि कालक एकर स्वर बेसी तीक्ख आ तीव्र भऽ गेल। स्वाभाविक छल जे चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' अपन पत्रकारिताक इतिहासमे एकरा अधकच्चू ओ उद्धत युवक लोकनिक अभारतीय चिन्तन कहलनि। पत्रिका सभक भाषापर अमर्यादित होयबाक आरोप लगौलनि।

शताब्दीक अंतिम दशक धरि अबैत-अबैत स्थितिमे व्यापक परिवर्त्तन भऽ गेल छल। सोवियत संघक पतन भऽ गेल। विश्व एक ध्रुवीय भऽ गेल। भारतोमे मिश्रित अर्थव्यवस्थाक बदला उदारवाद अथवा व्यापारीवाद अपन पैर पसारलक। विश्वमे भूमण्डलीकरणक बिहाड़िमे अपन भाषा ओ संस्कृतिकेँ बचा कऽ राखब सभसँ पैघ चुनौती बनि गेल। अस्मिताक संघर्ष बढ़ि गेल। सोवियत संघक पतन ओ भूमण्डलीकरणक प्रसारसँ धर्म ओ जातिपर आधारित राजनीतिकेँ खुलि कऽ खेलयबाक अवसर भेटि गेलैक। धर्म ओ जातिक राजनीतिकेँ भूमण्डलीकरणसँ कोनो विरोध नहि छलैक। एहनामे मैथिल परिचितिकेँ बचाकऽ रखबाक लेल परिवर्त्तनकामी दृष्टि ओ धर्मनिरपेक्षताक आवश्यकता आर बढ़ि गेल छलैक। जनसामान्यसँ संवादक खगता आ मैथिलीकेँ जनसामान्य धरि लऽ जयबाक बेगरता गम्भीरतासँ अनुभव कयल जाय लागल। मैथिल परिचितिकेँ बचाकऽ रखबामे अवरोधक यथास्थितिवादी ओ वर्णवादी विचारक विरोध सेहो तीव्रतासँ कयल जाय लागल। परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक राष्ट्रवादकेँ सिंहासनरूढ़ देखि उल्लसित यथास्थिति आ वर्णवादी सभ सेहो खुलि कऽ खेलाय लागल। प्रगतिशील ओ धर्मनिरपेक्ष चेतनाकेँ 'कम्युनिस्ट' कहि गारि पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीयोमे बढ़ऽ लागल। 1999 मे परिवर्त्तनकामी रचनाक संवाहक पत्रिका **'अंतिका'** दिल्लीसँ निकलल। ई पत्रिका मैथिलीक महन्थान सभक फासीवादी चरित्रकेँ उघार करबामे अपनाकेँ सन्नद्ध कयलक। एकरा संग अंतिम दशकमे **सन्धान** (1997), **संकल्प** (1991) ओ **जिज्ञासा** (1995) समकालीन आवश्यकताकेँ देखैत गम्भीरतासँ सामाजिक-सांस्कृतिक ओ साहित्यिक प्रश्न सभकेँ विमर्शक विषय बनौलक। दोसर दिस राजनैतिक-सामाजिक चेतनाक संवाहक रूपमे **समय-साल** (2000) मैथिली पत्रकारिताक टेक धयने रहल। वस्तुतः एकर पृष्ठभूमि पछिले दशकसँ अर्थात नवम् दशकमे तैयार भऽ गेल छल। **माटि-पानिमे** मिथिलाक संस्कृति, शिक्षा, औद्योगिक विकास, स्त्रीक पराभव आदि विषयपर विचारोत्तेजक लेख आदि प्रकाशित होअऽ लागल छल। एही संग **देसकोस** (1981), **आरम्भ** (1982), **भाखा** (1987), **चिनगी** (1988) ओ **बसात** (1987) पत्रिका गम्भीरतासँ मैथिली साहित्य आ समाजपर आलोचनात्मक दृष्टिसँ विचार करैत प्रगतिशील वातावरणक निर्माणमे

सहायक भेल छल। एहि पत्रिका सभमे बहुतो लेख आदि द्वारा वर्त्तमान स्थितिक विश्लेषण परिवर्त्तनकामी दृष्टिकोणक संग कयल गेल। एहि लेख सभकेँ पढ़लापर लागत जे नव मैथिल बुद्धिजीवीक समक्ष सम्पूर्ण मिथिलाक सम्पूर्ण वर्त्तमान वृहत्तर परिपेक्ष्यमे आबि रहल अछि। ई लेख सभ पत्रिकाक सम्पादकीय दृष्टिकेँ सेहो पुष्ट करैत अछि। एहि सभकेँ देखैत ई कहल जा सकैत अछि जे बात बदलि रहल अछि। आब कोनो जाति विशेषक बात नहि, मिथिलाक सम्पूर्ण समाजकेँ ध्यानमे राखि समस्याक निदान ताकल जा रहल अछि। तखन तँ हमरा लोकनि अन्य भारतीय भाषाक पत्रकारिताक तुलनामे एक सय वर्ष आ भाषा आन्दोलनमे सत्तरि वर्ष पाछू चलि रहल छी तँ प्रगतिशील, परिवर्त्तनकामी ओ धर्मनिरपेक्ष मैथिलत्वक संग भारतीय मैथिल बनबामे पचासो वर्ष तँ लगबे करत। एहन लगाओकेँ वियोगी सेहो अनर्गल नहि कहताह। वस्तुतः लगाओ ध्वंस ओ निर्माण दुनू लेल जरूरी होइत छैक। निर्माण ध्वंसक बिना नहि भऽ सकैत अछि। सामाजिक परिवर्त्तन लेल सेहो सड़ल-गलल मान्यता ओ प्रतिगामी विचार ओ परिचितिकेँ नष्ट करब पहिने आवश्यक अछि। एही संग नव ओ प्रगतिशील विचारक संस्थापन जरूरी। एकर न्यों तकबाक लेल मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहासकेँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'सँ फराक परिवर्त्तनकामी पृष्ठभूमिमे देखब वर्त्तमानमे जरूरी बुझना जाइत अछि।



आयोजन

वर्ष 2005 मे तीन सितम्बर केँ हमरालोकनि ई निर्णय लेने रही जे रमानाथ झा (जन्म 21 सितम्बर 1906) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (जन्म 02 अक्टूबर 1906) आ कांचीनाथ झा 'किरण' (जन्म 01 दिसम्बर 1906)क जन्म शताब्दी मनाओल जाय। से समारोह रमानाथ झाक मार्च-अप्रील 2006 मे, मधुपजीक अगस्त-सितम्बर 2006 मे आ किरणजीक नवम्बर-दिसम्बर 2006 मे हो। ओहि अवसर पर दू दिनक संगोष्ठी हुअय। दू दिना संगोष्ठी मे पहिल दिन पहिल सत्र मे उद्घाटन ओ ओहि साहित्यकारक रचनाक पाठ हुअय। दोसर सत्र मे लिखित आलेख तीनटा रहय जाहि मे एक मूल आलेख आ दू टा विमर्श आलेख हुअय। संगहि संगोष्ठी मे उपस्थित प्रतिनिधिलोकनिक बीच सँ जिज्ञासा आ विमर्श हुअय। विश्रामक बाद तेसर सत्र मे साहित्यकारक रचना पर आधारित आडियो ओ भिडियो (दृश्य-श्रव्य) कार्यक्रम हो। दोसर दिनक संगोष्ठी मे दू सत्र रहय। दूनू सत्र मे एक मूल आलेख ओ ताहि पर दूटा विमर्श आलेख पढ़ल जाय। ओहि पर जिज्ञासा ओ विचार-विमर्श हो। अन्त मे समापन भाषण हो। दू दिना संगोष्ठी मे साहित्यकारक व्यक्तित्व ओ कृतित्व पर फोल्डर, फोटो अलबम, पुस्तक-प्रदर्शनी ओ साहित्यकारक नव प्रकाशित पोथीक लोकार्पण आदिक ओरिआओन कयल जाय। एक स्मारिका सेहो ओहि अवसर पर निकलय। आयोजन लेल एक संस्थाक गठन कयल गेल आ तकर नाम 'प्रतिमान' राखल गेल। संस्थाक अध्यक्ष राजमोहन झा, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र झा आ सचिव हम भेलहुँ। संगोष्ठीक स्वरूप, विषय आ वक्तालोकनिक निर्धारण हेतु बैसक भेल। निर्धारणक उपरान्त सभके पत्र देल गेल। पत्र मे कार्यक्रमक उद्देश्य, विषयक अवधारणा तथा वक्ता सँ अपेक्षा पर विस्तार सँ लिखल गेल। कहल गेल जे एहि तीन साहित्यकारक जन्म शताब्दी मनेबाक उद्देश्य मात्र हुनकर स्मृति के जगायब तथा जोगायब नहि होयत, वर्तमान मे हुनकर प्रासंगिकता तथा भाषा-साहित्यक वर्तमान दशा केँ आँकब-परेखब सेहो होयत। पत्र मे फराक सँ विषयक अवधारणा तैयार क' संलग्न कयल गेल। वक्तालोकनि सँ एहिप्रकारेँ आलेख मे आयोजनक सन्दर्भ मे की अपेक्षित अछि सेहो कहल गेल छल। निर्धारित वक्तालोकनि मुदा ससमय आलेख नहि पठा सकला। हुनकालोकनि केँ स्मार

पत्र देलहुँ। एहि क्रम मे पूर्व निर्धारित समय पर कार्यक्रम आयोजित नहि भ' सकल। अन्ततः हमरालोकनि केँ दू जुलाई 2006 केँ ई निर्णय कर' पड़ल जे रमानाथ झा आ मधुपजीक जन्मशती समारोह संयुक्त रूपें मनाओल जाय। ई संगोष्ठी तीन दिनक हो। एहि प्रकारें 15 सँ 17 सितम्बर 2006 केँ आचार्य रमानाथ झा आ कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जन्मशतीक राष्ट्रीय संगोष्ठी ज्योतिरीश्वर नगर, दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान, शास्त्री नगर, पटना मे आयोजित भेल।

ई आयोजन प्रतिमान, पटना आ भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक संयुक्त तत्वावधान मे भेल। गोष्ठीक उद्घाटन राजनीतिशास्त्रक विद्वान आ मैथिली साहित्य परिषद्क पूर्व प्रधान मंत्री डा. शंकर कुमार झा केलनि। उद्घाटन सत्रक अध्यक्ष रहथि कैलीफोर्निया मे अंग्रेजीक प्रोफेसर डा. प्रभाकर झा (आब स्वर्गीय)। ओ संगोष्ठी मे सक्रिय रूपें भाग लेलनि। विमर्श मे मनोयोगपूर्वक सहभागी भेला। आइ हुनकर स्मृतिएटा शेष अछि। तहिना डा. जयधारी सिंह सेहो आब नहि छथि। ओहि आयोजनक छह मासक भीतरे फरबरी 2007 मे हुनकर देहावसान भ' गेलनि। ओ 'रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना' विषय सँ सम्बन्धित सत्रक अध्यक्षता केने रहथि। आइ त' मैथिलीक प्रसिद्ध गायक महेन्द्र झा सेहो नहि छथि जे ओहि आयोजन मे उद्‌बोधन गीत 'के थिक मैथिल, की थिक मिथिला' गौने छला। एम्हर प्रसिद्ध साहित्यकार मायानन्द मिश्र सेहो हमरासभकेँ छोड़ि क' चल गेला जे 'काशीकान्त मिश्र 'मधुपक महत्व' विषय सम्बन्धी सत्रक अध्यक्षता केने रहथि। एहि चारु मनीषीलोकनिक स्मृति के नमन करैत छी।

संगोष्ठीक सम्पूर्ण कार्यवाही टेप भेल रहय। उद्घाटक, विभिन्न सत्रक अध्यक्षलोकनि, विमर्श मे भाग लेनिहार विमर्शीलोकनि जे बजला सभ रेकार्ड भेल। आलेखक संग ओ सभ मौखिक भाषण एहि पोथी मे सम्मिलित कयल जा रहल अछि। ई काज जे सम्भव भ' सकल तकर एकमात्र श्रेय तारानन्द वियोगी केँ छनि। दसटा कैसेट सँ ओ सभक भाषण कागज पर उतारलनि। एहि प्रकारक मेहनति ओ महत्वपूर्ण काज लेल वियोगी केँ हम बधाई आ धन्यवाद दैत छियनि। एहि राष्ट्रीय संगोष्ठी मे दिल्ली सँ, दरभंगा, सहरसा, कोलकाता आ गाम सभसँ सहभागीलोकनि आयल रहथि। पटनोक बहुत साहित्य-प्रेमी सम्मिलित भेला। हिन्दीक विद्वान-साहित्यकार कर्मेन्दु शिशिर आ साहित्यकार-पत्रकार अरूण नारायणक सेहो सक्रिय सहभागिता रहल। अरूण नारायण त' अखबार मे एक रिपोर्ट सेहो आयोजनक मादे लिखलनि से एहि पोथी मे देल गेल अछि। तीन दिना संगोष्ठी मे कुल छह सत्र भेल रहय। उद्घाटन सत्र मे रमानाथ झाक महत्व पर मोहन भारद्वाज आ श्रीधरम्क आलेख रहय। तहिना दोसर सत्र मे मधुपक महत्व पर भीमनाथ झा आ रमण कुमार सिंहक आलेख छल। तेसर सत्र 'रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना, विषय पर केन्द्रित छल। जाहि मे देवशंकर नवीन ओ तारानन्द वियोगीक आलेख रहय। ई तेसर सत्र संगोष्ठीक दोसर दिन 16 सितम्बर 2006 के भेल। ओही दिन चारिम सत्र 'रमानाथ झा आ मैथिली भाषा' विषय पर छल। जाहि मे आलेख रामलोचन ठाकुर आ विभूति आनन्दक रहय। सत्रक अध्यक्षता केने रहथि प्रसिद्ध समाजशास्त्री हेतुकर झा। तेसर दिन अर्थात् 17 सितम्बर केँ दू सत्र 'मधुप आ मैथिली गीत' तथा 'मधुप आ मैथिली काव्य' विषय पर आधारित छल। 'मधुप आ मैथिली गीत' मे आलेख नवीन चौधरी आ नारायणजीक रहय आ अध्यक्षता केने रहथि प्रसिद्ध गीतकार ओ कवि रविन्द्र नाथ ठाकुर। अंतिम सत्र 'मधुप आ मैथिली काव्य' मे आलेख फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ देवकान्त मिश्रक छल। अध्यक्षता केलनि पं. गोविन्द झा। समापन भाषण मोहन भारद्वाजक रहय। समारोहक अन्त मे अशोक कुमार मेहताक स्वर मे गाओल समुदाउन सभकेँ भावुक बना देलक। तीन दिना संगक बाद विछोह सभ के कचोट' लागल। एहि आयोजन मे विभिन्न विमर्शीलोकनिक सहभागिता सम्पूर्ण विमर्श के जेना जीवन्त बना देलक। प्रायः एतेक रोचक ओ ज्ञानवर्द्धक विमर्श लोक पहिने नहि देखने छल। एहि लेल सभ सहभागी धन्यवादक पात्र छथि। आयोजन मे नरेन्द्र झा, अग्निपुष्प, अजित कुमार आजाद, प्रमोद कुमार झाक मेहनति आ सक्रियता सदैव मोन रखबा जोगर अछि। अग्निपुष्प एहि अवसर पर एक स्मारिकाक सेहो सम्पादन केलनि जे लोकार्पित भेल।

सभक इच्छा रहय जे आयोजन मे पठित आलेख, भाषण, विमर्श केँ पोथीक रूप मे प्रकाशित कयल जाय। मुदा एहि मे बहुत विलम्ब भेल। सात वर्ष भ' गेल। मुदा आइ प्रसन्नता अछि जे ई पोथी प्रकाशित भ' रहल अछि। कांची नाथ झा 'किरण'क जन्मशती पर आयोजन 25-26 नवम्बर 2006 के सम्पन्न भेल रहय। ओकरो कार्यवाही टेप करबाक व्यवस्था छल। मुदा बिजली आदिक गड़बड़ीक कारणे से भ' नहि सकल। किछु भेल किछु नहि भेल। तैं ओहि आयोजन मे पठित आलेखटा प्रकाशित भेल अछि। 'किरण' नाम सँ प्रकाशित ओहि पोथीक सम्पादक छथि मोहन भारद्वाज।

एहि पोथीक प्रकाशनक अवसर पर जखन सम्पूर्ण आयोजनक परिकल्पना आ कार्यान्यनक सम्बन्ध मे विचार करैत छी त' लगैत अछि जे, हमरालोकनि जेना सोचलहुँ

से सभटा ओहिना भ' नहि सकल। तथापि जे भेल से कम नहि अछि। सार्थक ओ उपयोगी अछि। एकर आलोक मे काज के आगू बढ़ाओल जा सकैत अछि। ई संगोष्ठी एहि रूपें महत्वपूर्ण रहल जे एहि मे खुलि क' जीवन्त वाद-विवाद भेल। हमरालोकनि संवाद दिस आगू बढ़लहुँ। लगैत अछि जे खाली सोचला सँ नहि होइत छैक, कयला सँ होइत छैक। संवाद लेल वाद-विवाद कर' पड़त। से दिमाग आ हृदय खोलि क' कर' पड़त। एहि प्रक्रिया सँ बिना गुजरने समाज आ साहित्यक सम्बन्ध मे श्रेयस आ सार्थक संवाद धरि पहुँचब सम्भव नहि थिक।

रमानाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आ कांचीनाथ झा 'किरण'क जन्मशतीक अवसर पर भेल संगोष्ठी मे पठित आलेख आ विमर्श सँ ई स्पष्ट लगैत अछि जे मिथिला ओ मैथिलीक प्रति एहि तीनू मनीषीलोकनिक जे जुड़ाओ ओ लगाओ रहनि जे संलग्नता ओ प्रतिबद्धता रहनि से अद्‌भुत छल। मतभेदक ओ दूरीक अछैत ई स्वीकारल जेबाक चाही जे भूमि आ भाषाक प्रति ओहेन जुड़ाओ ओ लगाओ हमरालोकनिक लेल बहुते आवश्यक अछि। ओहेन गहन निष्ठा आ सक्रियता जँ हमरा सभ मे आबि सकय आ मैथिली भाषा ओ साहित्य कें वर्त्तमानक अपेक्षाक अनुरूप आगू बढ़ा सकी त' से हुनकालोकनिक प्रति यथार्थ कृतज्ञताज्ञापन होयत।

हम प्रतिमानक दिस सँ ओहि राष्ट्रीय संगोष्ठी मे सहभागिता लेल सभक प्रति आभार व्यक्त करैत छी। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक प्रति सेहो आभार जकर आर्थिक सहायता सँ रमानाथ झा आ मधुपक संयुक्त जन्मशती आयोजन सम्भव भ' सकल। संगहि किरणजीक जन्मशती आयोजन मे आर्थिक सहायता लेल किरणजीक पुत्र केशरीनाथ झा तथा पौत्र वसंत कुमार झाक प्रति सेहो आभार व्यक्त करैत छी

एहि पोथीक प्रकाशनक अवसर पर फेर सँ सभ किछु मोन पड़ि रहल अछि। एहन आयोजन फेर हमरालोकनि क' सकब की नहि, कहल नहि जा सकैत अछि। मुदा इच्छा त' अछिए जे काज आगू बढ़य। एहन आयोजन फेर हुअय। आयोजन सभ आर जीवन्त ओ सार्थक हुअय। समाज लेल उपयोगी हो।

पोथी प्रकाशन मे विलम्ब त' भेल मुदा आब छपि गेल अछि। आशा अछि, पाठक एकर स्वागत करता।

पटना **अशोक**

14-12-2013

❑ अशोक

मनुक्खक धर्रोहि थिक कविता

जहिया कोनो नजायज बातक विरुद्ध टिप्पणी लिखैत छी, हाकिम कहैए – कविता करै छथि।

जहिया कोनो महंथक बात नहि गीरल होइए, महंथ कहैए– कविता करै छथि।

जहिया–जहिया लोक भीतर सँ तमसाएल रहैए, मुदा किछु नहि क' पबैए, तँ कहैए– कविता करै छथि। जे लोक आइ– काल्हि कविताक खिधांस करैए, कविता पर तमसाएल रहैए, से निश्चित मानू, डेराएल लोक अछि। ई सभ डेराएल लोक जे बाघक बाना धेने रहैए, से छागर–भाव आ हरिण कविता चाहैए। चाहैए जे कविता ओकरा चाटै, चुम्मा लैक। दुलरबै, सोहरबै। मुदा, शिश्नपूजी लोकक बेलंपात नहि थिक कविता।

कविता आब घात–प्रतिघात सहैत इमन्दारी सँ जीबैत बढ़ल चल जाइत मनुक्खक धर्रोहि थिक। ई धर्रोहि जकरा नहि बरदास्त होइ छै, से कहैए – कविता करै छथि।

एकैसम शताब्दीक घोषणापत्र

अहाँ कोन रूप मे एकरा लैत छी। हम एकरा सभ दिन कार्यशालाक रूप मे लेलहुँ। कहिओ फिनिस्ड कथा ल' क' नहि गेलहुँ। ओकर बाद कथा मे परिवर्तन कएल। हमरा लेल बहुत उपादेय अछि।

जावतधरि अपन कथा पर टिप्पणी सुनबाक आ ओहि पर विचार करबाक आवश्यकता कथाकार कें अनुभव होइत रहतनि तावत तक एकर भविष्य बनल रहत। स्वाभाविक रूप स' एकर भविष्य अबैत कथाकार, नव कथाकार, नव समीक्षक पर निर्भर करैत अछि।

कोनो सुझाव नहि। एकर उपादेयता, एकर भविष्य आदि पर शंका, प्रश्न आदि के बिसरि एकर नियमित आयोजन पर ध्यान दी। एहि मे आन कार्यक्रमक सोङर नहि घुसिआबी। एहि मे बहार सँ शासन/अनुशासन नहि आनल जाय। बस्स...।

-अशोक, पटना।

किरण आ मैथिली साहित्य

अशोक

काञ्चीनाथ झा **'किरण'** अपन निबन्ध 'फकड़ा' मे मैथिली समाजक युवकलोकनि केँ सम्बोधित करैत एकटा फकड़ा कहलनि अछि,

ने रूपे नीक ने रंगे नीक
जे हित करय सेहे नीक
सुन्नर महकारीक जंगलवास
काठ सन कुसियारक घर-घर चास॥
ने बयसेँ जेठ ने देहे जेठ
जकरा ज्ञान रहै सेहे जेठ
ललका महकारी केँ पैरक ठेस।
कारी जामुन बनय सनेस॥

कुल की? बाप की? गुनक करू मान
सितुआक पुत मोतीक के हयत समान?
मोतिक माय सितुआ कमलक माय थाल।
व्यासक माग्र गोढ़नी गुनक इहे हाल॥

तहिना मैथिलीक साहित्यकारक लेल फकड़ा के आर अधिक उपादेय कहलनि अछि। ओ कहैत छथि जे कविता-कहानीक विलक्षण प्लाट अछि ओहि मे,

बूढ़ बिआहय गामक सुख लेल।
उचगर हाट मे बारह बाट॥
आत्मा जानय पाप, माय जानय बाप।
गरिब गारि सन दोसर नहि गारि॥
दाइ ले लगै छनि टाट
दाइ तकै छथि टाटक फाट॥
बहय बड़द से भुस्सा खाय।
बकरी खाय बदाम॥

भीतर घिनाइ छनि चिनबार।
तनिकर चानन बड़ जगजियार॥
मने-मन चरित्र देखैत जाउ आ
कविता-कहानी लिखैत जाउ॥

साहित्यक सम्बन्ध मे किरणक धारणा एकदम स्पष्ट छलनि। ओ साहित्यक प्रयोजन समाजक जागरण लेल मानैत छला। समाजक असली चित्र लेल ठेठ शब्द, स्पष्ट अर्थ, सोझ विलक्षण छन्द केँ ओ आवश्यक मानलनि अछि। ओ कहैत छथि जे मनुष्यक जीवन प्रणाली मे जँ जँ प्रदर्शन-आडम्बरक भाव अबैत गेल तँ तँ छन्दो झमटगर होइत गेल। रहबाक लेल चारिटा घर, आदर्श भेखक लेल धोती-तौनी, मिरजै पाग, भोजन मे दालि-भात छौ नौ तरकारीक नियम बनल तँ ताहि समाजक साहित्य मे आडम्बरपूर्ण नियमबद्धता आयल।

समाजक जागरण लेल किरण एहन साहित्य चाहैत छला जाहि मे पुरौनाक नाम पर शब्द-पाँतिक ढेर नहि भेटय। व्यर्थ पाँती वा शब्द नहि भेटय। ओ कहैत छथि जे, 'जेहेन काँच-कोचिल, उसिनल-पकौल भोजन तेहने भाषा-पद। मुदा पोषकता तँ उसिनल-पकौल सन तरल छौंकल मे नहि रहैत छै। वर तरल दुःखद भय जाइछ। तहिना कहि सकैत छी जे पण्डितक बहुत काव्य तरल तरकारीक समान गुणहीने नहि अस्वास्थ्यकर भय गेल छनि।' स्पष्ट अछि जे समाज लेल ओ एहन साहित्य चाहैत रहथि जे पोषकता सँ परिपूर्ण ओ स्वास्थ्यकर हो। किरणक साहित्यक सम्बन्ध मे ई धारणा साहित्यक पारम्परिक अवधारणा सँ फराक छल। ओहि अवधारणा सँ फराक छल जे साहित्यक अभिजात्य परम्परा ओ सौन्दर्य बोध पर आधारित रहल अछि। ओ एहि अभिजात्यक कटु आलोचक बनि हमरा लोकनिक समक्ष अबैत छथि।

नैना मे लहुक लेश ने छै उपमान हेतैक सरोज कोना?
जागल छै छातीक हाड़ हाड़ चकबा बनतैक उरोज कोना ?
पेट पीठ सटि एक भेल सोपान मनोजक हैत कोना
बच्चा बिलखै छै दूध बिना बनतै कहु सोमक घैल कोना
बतरी बंका झाउक बन मे हैत कोना मधुश्रीक विकास
अन्न न पेट न दम तन मे के गाओत मलार मनोहर रास ॥

किरणक आँखि मे मिथिलाक जनसामान्यक चित्र बसल छल। एहेन जनसामान्य जे अदौकाल सँ दरिद्रताक पराभव भोगि रहल छल। जेकरा लेल दूनू साँझक भोजन सपने बनल रहैक। जकर घरक चार नीचू नहि रहैक। रौद-गरमी, जाड़, बरसात मे जकर पराभव बढ़ि जाइक। जकरा लेल बसंतक कोनो महत्व नहि छल। महत्व छल त' अगहनक। ओहि अगहनक जाहि मे 'धुम-धुम मुस्सर 'डिकिर-डिक ढेकी' घर-घर मे तान दैत छै। जखन एहन मिथिलाक चित्र ओ विद्यापतियोक गीत मे नहि पबैत छथि त' कहि उठैत छथि, 'विद्यापति एक तँ बहुत गीत भगवतीक, गङ्गा, राधाकृष्ण तथा महादेबहिक लिखलनि। ओहि गीत सभ मे मिथिलाक चित्र नहि पाबि सकैत छी। जाहि गीत मे राधाकृष्णक नाम नहि अछि से बड़ साँकड़ भूमिक चित्र दैत अछि। ओ प्रगतिशील विचारक छला। राधाकृष्णक प्रेमक वर्णन बड़ दूरदर्शिता सँ कयलनि मुदा दृढ़मूल संस्कार के हँटा नहि सकलाह।' ओ कहैत छथि जे विद्यापतिक गीतक अनुसार मिथिला मे एकोटा कारी कन्या नहि छल। सभ गोरि छल। अत्तत्तह गोरि। गोरिएटा नहि। धनकानिओ खूब छथिन हुनक नायिका। सोन-मणि-मुक्ताक गहना छनि। चानन कस्तूरी लेपले रहै छनि। मस्तो तेहेन छथिन जेहेन धनी घरक खायल-पीयल देह वा कल्पना संसारक हुअय। ई नायिका सभ पढ़लि-लिखलि कामशास्त्रके जननिहारि छथि। गमैक लोक केँ ओ घृणाक दृष्टि सँ देखैत छथि। किरणजी पुछैत छथि जे, 'एहनि सोन सनि गोरि हीरा-मोतीक हार पहिरने पढ़लि-लिखलि ह्रष्टपुष्ट कयटा माउगि छलि हयति मिथिला मे? विषयो एकेटा। स्त्री ओ पुरुषक आकर्षण सम्बन्धी! स्त्रीक भिन्न-भिन्न बयसक वर्णन, अंग-प्रत्यंगक वर्णन, श्रृंगारक वर्णन, रति, विपरीत रति, कोबर-गमन, विरह, परपुरुष प्रेम, व्यभिचारक गोपन, अभिसार, सभठाम पंचसरक खेल! जेना हुनका समय मे पराधीनता, अत्याचार, अभाव आदि सब छले नहि।' 'किरणजी एहि सभ सँ अकच्छ भ' शंका प्रकट करैत छथि, 'विद्यापतिक समय मे पाठान आक्रमण बारम्बार भय रहल छल। देश अत्याचार ओ आतंक सँ ग्रस्त छल हयत। कखनहुँ तँ हमरा सन्देह होइछ जे विद्यापति पदावलीक बहुत गीत देशभक्त वीर शिवसिंहक महामंत्री दूरदर्शी कवि विद्यापतिक थिके नहि।' किरणजी मानैत छथि जे मिथिलाक जीवनक पूर्ण परिचय पयबाक लेल ब्राह्मण-क्षत्रिय सँ ल'क' डोम-दुसाध

धरिक जीवनक्रमक अध्ययन आवश्यक अछि। तहिना ओ मिथिलाक पूर्णचित्र देखबाक लेल पण्डितक काव्यक संग-संग लोक साहित्यक अध्ययन आवश्यक मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे पण्डितक काव्य पाँच प्रतिशत लोकक चित्र अछि त' लोक-साहित्य पंचानबे प्रतिशत लोकक। एहिठाम ई मोन पाड़ि लेब आवश्यक जे उपनिवेशकाल मे 'लोक' शब्द केँ गमारक अर्थ मे संकीर्ण क' देल गेल जे एहि शब्दक व्यापकता के बहुत क्षति केलक। मिथिला मे वेद सँ पहिने लोक केँ रखबाक परम्परा विद्यमान रहल अछि। एहि दुनूक बीच आबाजाही सोंसे चलैत रहल अछि। 'लोक' जनसामान्यक अर्थमे प्रयुक्त होइत रहल अछि। एहिठाम पंचानबे प्रतिशत लोकक साहित्य कहब ध्यातव्य थिक।

ई बात स्पष्ट अछि जे देसिल बयना केँ सब जन मिट्ठा कहनिहार आ बनौनिहार जन-जनक कंठहार विद्यापतिक सौन्दर्य-चेतना अभिजात्यक सीमा के तोड़बा मे बहुधा सफल नहि भ' सकल अछि। मुदा सुपुरुष अथवा सत्यपुरुष केँ उत्कर्ष देनिहार विद्यापति लोकपुरुष के अवश्य चिन्हलनि। रमानाथ झाक कहब छनि जे ई विद्यापतिक उर्वर दिमागे छल जे अपन लग-पासक जीवन केँ देखलक आ ओहि जीवनक चित्र केँ चुम्बकीय सामर्थ्यक संग अपन गीत मे अभिव्यक्त केलक। हुनकर राधाकृष्णक गीत सम्पूर्ण पूर्वोत्तर मे पसरि गेल। मुदा अपन मिथिले मे नहि पसरि सकल। किरणजी एकर कारण राधाकृष्ण गीतक प्रचार नहि होयब के मानैत छथि। एहि लेल ओ यथास्थितिवादी पण्डितलोकनि केँ उत्तरदायी मानलनि अछि। ओ कहैत छथि जे, 'पण्डितलोकनि जाहि गीत केँ समाज मे जाय देलनि तकरे प्रचार भेल। गोसाउनिक गीत, उचिती आदि व्यावहारिक गीत मे कोनो विचार तारतम्यक अवसरे नहि छलैक। महेशवाणी-नचारी अपन रुचिक अनुकूल छलनि तेँ ओकर प्रचार होबय देलथिन आ राधाकृष्णक गीत केँ पोथी सँ बाहर नहि होबय देलनि।' एहि दूनू सन्दर्भ मे सामंती समाजक विद्वान राजपुरुष विद्यापतिक सामर्थ्य ओ सीमा केँ बूझल जा सकैत अछि। ई बूझल जा सकैत अछि जे आजुक नजरि सँ विद्यापति केँ देखब समीचीन नहि होयत। मुदा एहि मे एकटा पेंच एखनो फँसले अछि।

विद्यापति ओ हुनक समय मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक स्वत्वनिर्धारणक प्रस्थान-विन्दु थिक। कोनो रूप ओ विधा मे हो, ओ एखन धरि विमर्शक विन्दु बनले अछि। विद्यापति ओ विद्यापति पर्वक अध्ययन एखनो धरि चलिए रहल अछि। नारा आ मिथ बनि जेबाक बीच विद्यापतिक यथार्थ स्वरूप ओ अवदान केँ आँकब आइ मैथिली साहित्य आ समाज लेल जरूरी काज भ' गेल अछि। खास क' तखन जखन ओ मैथिल राष्ट्रीयताक प्रतीक बनि गेल होथि। से अहू कारणे जरूरी जे अजुको मैथिली साहित्य मे पण्डिताउ आ संकीर्ण समाजक चित्र उपस्थित करब रचनाकारलोकनिक दृष्टि-सीमा बनले अछि। हरिमोहन झा, ललित, राजकमलक आधुनिक चेतना, यात्रीक प्रगतिवादी चेतना आ किरणक प्रगतिशील लोकवादी चेतनाक बावजूद मैथिली समाजक चित्र मैथिली साहित्य मे तीस प्रतिशत सँ आगू नहि बढ़ल अछि। मिथिलाक सत्तरि प्रतिशत लोकक प्रवेश एखनहु धरि मैथिली साहित्य मे नहि भेलैक अछि। एखनहु मैथिली मे सामंतीकालक महाकाव्य धुरझार लिखल जाइत अछि आ साहित्य अकादेमी ओकरा पुरस्कृतो करैत अछि।

किरणजीक फकड़ा आ लोकसाहित्य दिस ध्यान आकृष्ट करायब हुनक लोकचेतनाक द्योतक थिक। ओ अपन 'आधुनिकताक आरम्भ' नामक निबन्ध मे मैथिली मे आधुनिकताक आरम्भ लेल फतूरी कविक अकाली कविता केँ देखबाक आग्रह मैथिली आलोचक लोकनि सँ करैत छथि। किरणजीक आशय स्पष्ट अछि, ओ कविवर चन्दा झा सँ आधुनिकताक आरम्भे मानबाक मैथिली आलोचक लोकनिक मान्यता पर ई कहि प्रश्न चिन्ह लगबैत छथि जे चन्दा झा मैथिली भाषाक प्रति एकनिष्ठ नहि छला। किरणजीक लेल मैथिली भाषा जन भाषा थिक। आलोचक रमानाथ झा सेहो एकरा जनभाषा कहलनि अछि। दुनू गोटे एकर आरम्भ ब्राह्मणेत्तर वर्ग द्वारा रचल साहित्य सँ मानैत छथि। रमानाथ झाक कहब छनि जे, 'अवहट्ठक रूप मे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यतः पण्डितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जनसमाजक साहित्य थिक। यथार्थ अर्थ मे लोक साहित्य थिक जकर रचना प्रायः डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेत्तर जातिक कएल थिक।' किरणजी

अपन वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन मे ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर केँ सलहेसक गीत जातिक वस्तु मानैत छथि। हुनकर कहब छनि जे ज्योतिरीश्वरक आगू अनपढ़-निरक्षर समाज छल। ओकर रुचि, ओकर क्षमता केँ देखि रचना करय बैसल छला।

मैथिली मे लोकपुरुषक रूप मे नैका बनिजारा, सलहेस, लोरिक, दुलरादयाल, दीना-भद्री आदि लोककंठ मे लोकगाथाक रूपमे विद्यमान रहल छथि। भगैत मिथिलाक एक अद्‌भुत धार्मिक ग्राम्य-गायन-शैली थिक। एहि मे ओहेन महापुरुष लोकनिक गाथा गाओल जाइत अछि जे अपन जीवनकाल मे अद्‌भुत क्रियाकलापक माध्यम सँ अपन महत्ता कायम केलनि आ अपन जन्म केँ सार्थकतापूर्वक अलौकिक बना देलनि। एहि मे धर्मराज, ज्योति, कारु महराज, बेनी, बिसहैर, खिरहैर, कालीबन्दी, बरहम, हरियाडोम, गहील, अन्दू बावा, मीरा साहेब आदि लोकपुरुषक जीवनगाथा भगैतक गायन के मुख्य आधार थिक। ई सभ लोकपुरुष वा मनुखदेवाक गाथा शौर्य, हिम्मति, पराक्रम आ जनकल्याण लेल जीवन अर्पित करबाक गाथा थिक। एहि सभ गाथा पर किछु काज भेल अछि। मुदा ने सभक संग्रह भेल अछि ने अध्ययनक व्यवस्थित प्रयास। जत' विद्यापतियोक सभ गीतक एक संग्रह पाठ शुद्धिक संग नहि आयल हो ओत' लोकगाथा आ लोकगीतक वैज्ञानिक रूप सँ संग्रहक कल्पना करब कोना सम्भव थिक। एहि लेल जे परिश्रम, दृष्टि आ धनक प्रयोजन अछि से एखन धरि सम्भव नहि भ' सकल छैक। ओना डा० ब्रजकिशोर वर्मा एहि लोक गाथा सभ केँ औपन्यासिक रूप देलनि। डा० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ डा० विश्वेश्वर मिश्र लोकगाथाक अध्ययनक क्षेत्र मे विशेष ख्याति अर्जित केने छथि। मैथिली रंगमंच पर कुसुमा-सलहेस केँ कुणाल आधुनिक रंग-शिल्पक संग प्रस्तुत क' चुकल छथि। नाटककार महेन्द्र मलंगिया लोकगाथा लोकनाट्य सभ पर एम्हर गम्भीरता सँ काज प्रारम्भ केलनि अछि। डा० महेन्द्र नारायण रामक एक स्वतंत्र पोथी कारिख पजियार पर आयल अछि। डा० अणिमा सिंहक लोक गीत संग्रह एक प्रसिद्ध पोथी अछि। मैथिली लोकगीत सभ मे स्त्री दुर्दशाक बहुत मार्मिक वर्णन भेल अछि। स्वयं स्त्री, स्त्रीक रूपमे जन्म लेबा सँ डराइत अछि–

धियाक जनम नहि दिअह विधाता
धिया डुबैत बीच धार
जाहे दिन आगे बेटी तोहरो जनम भेल
घरे-घरे ठोकल केबाड़ हे।

कोनो कन्याक जन्म सँ उल्लास नहि होइत अछि। मांय-बाप पर्यन्त ओकर स्वागत नहि करैत अछि। बेटाक जन्म सँ मायक सम्मान बढ़ैत अछि। आइयो एहि स्थिति मे कतेक परिवर्त्तन भेल अछि से विचारबाक विषय थिक। एहि क्रममे ई बात निश्चित जे बहुतो लोकगीत जाहि मे स्त्री दुर्दशाक मार्मिक वर्णन अछि, पुरुष द्वारा लिखल गेल। एहि गीत सभ मे भाग, करम के दोष दैतो दु:स्थिति सँ त्राण पयबाक, अपन स्थिति मे परिवर्त्तनक आकांक्षा लुप्तप्राय रहल।

स्त्रीक मामिला मे आधुनिक लिखित साहित्य आरम्भे सँ सजग ओ सतर्क रहल अछि। बुच्ची दाइ, पारो, कला, बिजली, हीरा, सकीना मैथिली उपन्यासक मोन रह' बला चरित्र थिक। तहिना कथा मे मीनाक्षी, मधुरमनि, केतकी, फुलिया, अजनास आदि स्त्री-चरित्र केँ बिसरब कठिन छैक। मैथिली साहित्यक स्त्री-विमर्श सीताराम झाक विद्यापति पर लिखल कविता सँ ल'क' आइ धरिक कविता मे लगातार चलैत रहल अछि। तखन आइयो मैथिली मे स्त्री-पुरुषक प्रेमकथा लिखब चुनौतीपूर्ण काज बनले अछि। एहि प्रसंग कथाकार राजमोहन झाक कथन एखनो प्रासंगिक अछि जे, 'मैथिलीक नायक-नायिका केँ प्रेमक अभिव्यक्ति लेल हिन्दिए आ अंग्रेजीक आश्रय लेब' पड़ैत छै। 'आइ लव यू' केँ मैथिली मे कहनाइ मुश्किल।'

किरणक साहित्य ओ हुनक रचनाकार व्यक्तित्वक सम्बन्ध मे आलोचक लोकनिक विचार फरिछा क' स्पष्ट रूप सँ सोंझा नहि आयल अछि। एकर बहुतो कारण अछि। प्रमुख कारण मे हुनक समस्त साहित्य प्रकाशित भ' उपलब्ध नहि होयब थिक। 1986 सँ पूर्व किरणक मात्र 'चन्द्रग्रहण' उपन्यास, वीर प्रसून (सम्पादित बाल कथा), जय जन्म भूमि एकांकी, विजेता विद्यापति नाटक पोथीक रूप मे उपलब्ध होइत अछि। 1986क बाद सँ किरण कवितावली, कथा-किरण, पराशर, कतेक दिनक बाद (कविता) किरण निबन्धावली ओ वर्णरत्नाकरक काव्य शास्त्रीय अध्ययन

प्रकाशित भेल अछि। किरणक देहावसान 1989 मे भेल। साहित्य अकादमी पुरस्कारो हुनका मरणोपरान्त 'पराशर' पर भेटलनि। हुनक साहित्य अप्रकाशितो बहुत छनि। से जखन सभटा प्रकाश मे आबि उपलब्ध होयत त' किरणक रचनाकार व्यक्तित्व पूरा-पूरी फड़िच्छ भ' सकत।

आलोचक कुलानन्द मिश्रक विनिबन्ध किरण केँ बुझबा लेल सर्वाधिक व्यवस्थित प्रयास थिक। कुलानन्द मिश्रक कहब अछि जे 'किरण प्रगतिशील चेतनाक कवि होइतो ओहि राजनीतिक दर्शन मे प्रकट आस्था नहि रखैत रहथि जे एहि चेतनाक पाछाँ कार्यरत् मानल जाइछ। हिनक प्रगतिशीलता, जे मिथिलाक सामाजिक विषमताक आग्रहहीन व्याख्या मे प्रतिबिम्बित भेल अछि, वस्तुत: भक्त कविलोकनिक मानवतावाद तथा सामान्य रूप सँ प्रबुद्ध मनुक्खक आदर्शवाद तथा गैर मार्क्सवादी समाजवादक समस्त विशिष्टता सँ अनुप्राणित थिक, यद्यपि ठाम-ठाम 'किरण' आदर्शवादक प्रकट विरोध मे ठाढ़ नजरि अबैत छथि।'

आधुनिक समय मे मनुक्खक सत्ता आ मनुक्खक गरिमाक प्रश्न प्रगतिवादी आ लोकवादी धाराक महत्वपूर्ण प्रश्न बनल अछि। किरणजीक प्रगतिशील चेतना हुनक लोकवादी चिन्तन पर आधारित वा ओहि सँ अनुप्राणित छल। किरणजीक लोकवादी चिन्तन आर्थिक विषमता केँ मूल कारण मानियो क' सामाजिक विषमता केँ मिथिलाक परिप्रेक्ष्य मे प्रमुखता देलक अछि। किरणजी कर्पूरीजी (स्व० कर्पूरी ठाकुर, पूर्व मुख्यमंत्री) संग सोसलिस्ट पार्टी मे रहथि। मुदा भाषाधार प्रान्तक निर्माणकाल मे हुनका सोसलिस्ट पार्टी सँ विकर्षण भेलनि। मिथिला मे गैरमार्क्सवादी समाजवादक राजनीतिक लाइन लोहिया-कर्पूरी-रामनन्दन मिश्र-सूरज नारायण सिंहक राजनीतिक लाइन थिक। यैह राजनीतिक लाइन मिथिला प्रान्त आन्दोलन केँ वैचारिक आधार देनिहार डा. लक्ष्मण झाक सेहो रहनि। मुदा हुनको मिथिला राज्य आन्दोलनक क्रममे सोसलिस्ट पार्टी सँ मतभेद भ' गेलनि। मिथिला मे वर्गभेद, जाति ओ वर्ण भेद एक संग मीलि सामान्य लोकक पराभव केँ लगातार बढ़बैत रहल अछि। तैं राजनीतिक विचारधाराक रूप मे शोषितक संग दलितक पक्षधरता अपन जगह सुनिश्चित क' लेलक अछि। दलितक संघर्ष-मनुक्खक गरिमाक संघर्ष-इज्जतिक संघर्षक रूप मे मैथिली साहित्य मे अभिव्यक्त होइत रहल अछि। इज्जतिए पर आक्रमण सँ ओ प्रतिरोधक

सामूहिक संघर्ष वर्ग-संघर्ष दिस बढ़ैत अछि। एहि प्रगतिशीलताक स्पष्ट चित्र यात्रीक उपन्यास 'बलचनमा' मे देखबा मे अबैत छैक।

मैथिलीक प्रथम आलोचक रमानाथ झा जखन मैथिली साहित्य केँ आधुनिक चेतनाक संग व्यवस्थित रूप देबा मे संलग्न भेला त' हुनका मैथिली साहित्य केँ जातीय (राष्ट्रीय) रूप देबाक खगता अनुभव भेलनि। ओ एहि खगता केँ विद्यापति आ विद्यापतिकालीन मिथिलाक स्वतंत्रताक अभीप्सा सँ जोड़लनि। विद्यापति मैथिल राष्ट्रीयताक प्रतीक बनि गेला। रमानाथ झा विद्यापतिक संग शिवसिंह केँ सेहो मिथिलाक स्वातंत्र्य चेतना सँ लैश राजपुरुषक रूप मे प्रतिष्ठित केलनि। ओ राष्ट्र-राज्यक जे स्वरूप निर्मित केलनि से राष्ट्रवादी चेतना सँ सम्पन्न अभिजात्यक सांस्कृतिक गौरव बोध पर आधारित छल। मुदा विद्यापति आ शिवसिंहक स्वातंत्र्य चेतनाक ऐतिहासिक रूप सँ जे स्वरूप बनल से वर्त्तमान मे मिथिलाक आर्थिक ओ सांस्कृतिक विकास सँ जुड़ि गेल अछि। एहि मे अभिजात्यक गौरव-बोध अर्थात् ओ पुरान तिरहुत राज्यक पुर्नस्थापनाक बात एकदम अप्रासंगिक भ' गेल अछि। मुदा किछु लोकक पुनरुत्थानवादी सोच केँ सेहो ई दुलरबैत रहल अछि अवश्य। एहन लोकक सोच अत्याधुनिक परिवेश मे अन्धराष्ट्रवाद सँ जुड़ि क' मैथिली समाजक ओ साहित्य लेल खतरनाक साबित भ' रहल अछि। ई वस्तुतः विद्यापति आ शिवसिंहक मिथिलाक राष्ट्रीय चेतनाक विरुद्ध सेहो थिक। एहना मे विद्यानन्द झाक ई चेतौनी बहुत सामयिक अछि जे कारगिल, चीन, काश्मीर, काश्मिरी पण्डित-बेसीकाल मैथिली कविता एकटा केन्द्रीकृत अन्धराष्ट्रवाद दिस अग्रसर राष्ट्र-राज्यक समर्थन मे ठाढ़ भेटैत अछि। ई हमर मैथिल परिचिति केँ कोना प्रभावित करैत अछि– एकर हमरा सभ केँ जाँच करक चाही।

मिथिलाक स्वातंत्र्य चेतना सँ जुड़ियो क' किरणजीक जे राष्ट्र-राज्यक परिकल्पना अछि से लोक स्वराज्य अथवा जन सामान्यक अपन राज्य पर आधारित अछि। तैं साहित्यक प्रसंग हुनकर सौन्दर्य-चेतना सेहो जनसामान्यक सौन्दर्य-बोध सँ सामान्य जनताक रुचि केँ आधार बनबैत सामाजिक-आर्थिक स्थिति सँ त्राण पयबाक चेतना सँ जुड़ि गेल अछि। मुदा एहि क्रम मे किरणजीक संग एक विडम्बना अछि जे ओ राष्ट्रीयताक परिकल्पना मे हिन्दू नामक जातिक अस्तित्व के अस्वीकार करितो कखनहुँ केँ अपन

रचना मे ओहि सँ ओझराइत देखल जाइत छथि। कखनहुँ के हुनकर सोच बकौल कुलानन्द मिश्र आपत्तिजनक भ' जाइत अछि। कुलानन्द मिश्र किरणजीक उपन्यास चन्द्रग्रहण तथा कविता ताजमहलक प्रसंग एहि आपत्तिक बात केने छथि। मुदा ध्यान देला पर लगैत अछि जे, जेना चन्द्रग्रहण उपन्यास मे धार्मिक कट्टरताक नियमन ओ सामाजिक चेतनाक विकास सँ कर' चाहैत छथि तहिना ताजमहल मे प्रेमक उदात्त चेतनाक विकास हुनक लक्ष्य थिक।

वस्तुतः किरणजीक प्रगतिशीलताक आधार मातृभाषा प्रेम आ लोक चेतना सँ लैस मनुखता थिक। आइ जखन भूमण्डलीकरण अथवा बाजारवादक हड़विरड़ो मचल अछि त' ओकर प्रतिकार लेल सामूहिक परिचिति एवं मनुखता केँ बचेबाक-बढ़ेबाक खगताक अनुभव हरेक विचारवान लोक क' रहल छथि। एही संग एहि बातक खगताक अनुभव सेहो कयल जा रहल अछि जे गति ओ परिवर्त्तन केँ अभीष्ट दिशा देबाक तागति विचारधारा सँ उत्पन्न होइत छैक। एहना मे सामाजिक परिवर्तनक अभीष्ट दिस अग्रसर हेबा मे किरणजीक मैथिली भाषा प्रेम ओ मनुखताक पक्षधरता विचारधाराक निर्माण मे बहुत दूर धरि सहायक भ' सकैत अछि। जन-सामान्यक लेल परिवर्त्तनक चेतना सँ लैस साहित्यक निर्माण जनभाषे मे सम्भव छैक। ओहि जनभाषा मे जकर अभीष्ट रूप दिस किरणजी संकेत करैत देखाइत छथि। अपन रचना सभ मे ओहि दिस अभिमुखो भेल छथि। एहि अर्थ मे किरणक महत्व ओ प्रासंगिकता के स्वीकारल जेबाक चाही।

■

सन्धान–1

सम्पादकीय

मिथिलाक खोज

हमरा सभ सनक लोक जे मिथिला मे जन्म लेलक, मिथिलाक प्रति आकर्षण उपजलैक, आइ मिथिलाके ठीक सँ जनबाक लेल बेकल अछि । की थिक मिथिला? जे आइ धरि इतिहास, साहित्य आदि द्वारा कहल गेल अछि? अथवा किछु आन जे एखनधरि नहि कहल गेल अछि । हमरा सभक कान मे मैथिली, मैथिल आ मिथिला शब्द पड़ैत रहल । देखलहुँ किछु गोटे एहि पाछू बेहाल छथि । जाहि किछु लोक के बेहाल देखलहुँ ओहि मे किछु ब्राह्मणत्त्वक हड्डी पर मैथिलत्त्वक चाम चढ़बैत भेटलाह । किछु लोक अपन पतक्का ऊँच करबाक लेल मैथिलीक ढोल पीटैत भेटलाह। किछु के अपन सर्वस्व मैथिलीक पाछू स्वाहा करबाक उन्माद मे सेहो देखलहुँ। एतेक प्रताड़ना, पराभव, गिंजनक बाबजूदो कतेक आँखि मे आशा आ विश्वासक दीप ओहिना निरन्तर जरैत देखलहुँ । मुदा अधिकांश मैथिली आ मैथिलक नाम पर अपन मुँह नुकबैत भेटलाह । हीनताबोध सँ किछुके पतनुकान लेने त' उच्चताबोध मे गौरवे आन्हर सेहो देखलहुँ । मोटा मोटी ई सभटा बात मिथिला समाजक क्रीमी लेयर सँ सम्बन्ध रखैत अछि । विशिष्ट वर्ग सँ सम्बन्धित अछि । मिथिला समाजक सामान्यजन खास क' कए निरक्षर, अर्द्धसाक्षर, निम्नवर्गक आ निम्नमध्यमवर्गक लोक (जे संख्या मे अत्यन्त विशाल अछि) एहि हलचल सँ एकदम फराक, निरासक्त, निरपेक्ष रहल अछि । ओकरा धरि एहि विषयक कोनो चेतना नहि पहुँचि सकल ।

की मिथिला माने केवल गंगा, गण्डिकी तथा कौशिकी एहि तीनू नदीक तट पर स्थित भू भाग मात्र थिक ? की मिथिला माने खाली गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा सँ मण्डित एक उज्ज्वल अतीत मात्र थिक ? की मैथिलीक भजन करैत अपनहुँ पाग पहीरि अनको पहिरा क' अपना मे मिलेबाक भ्रम पसारैत मंचीय परम्परा क इतिहास, मिथिलाक इतिहास के प्रतिविम्बित करैत अछि ? की एहि सांस्कृतिक परम्परा पर गौरव बोध करबाक अधिकार मात्र मिथिला समाजक ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ के छनि? की एहि गौरव बोधक जयघोष आन जाति वर्ग मे हीनताबोध भरैत अछि से सोचबा-विचारबाक पलखति विशिष्टवर्ग के भेटल अछि ? की वर्त्तमान मे मिथिला समाजक स्थिति एकदम दयनीय आ सोचनीय नहि भ' गेल अछि ? की एहू स्थिति मे जीवनक प्रति आसक्ति, संघर्षशीलता, उत्सवधर्मिता, अतिथिस्नेह, सामाजिक-साम्प्रदायिक सदभाव सनक मूल्य कोन संजीवनीक बलें मिथिला समाज मे बचल अछि से तकबाक बेगरता नहि होइत अछि ? वर्तमान मे मिथिला समाजक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उन्नति आ विकास लेल सोचैत-विचारैत की ई नहि लागि रहल अछि जे मिथिलाक

खोज नवछोर सँ प्रारम्भ कर' पड़त । एकांगी दृष्टिक पटाक्षेप क' सर्वांगी दृष्टि आ एकात्म भावक संग वैज्ञानिक पद्धति एहि लेल जरूरी नहि बुझाइत अछि?

पं० जवाहरलाल नेहरू भारतक खोज मे सभ उपलब्ध पोथी पढ़लनि । हजारो कि० मी० क यात्रा केलनि । विभिन्न जाति, वर्ग, क्षेत्र, भाषाक लोक सभ सँ भेंट केलनि। महल सँ खोपड़ी धरि गेलाह तखन हुनका ज्ञात भेलनि जे भारत अपन विशाल जन सामान्य, जन समुदाय मे बसैत अछि । एही सन्दर्भक संग कोनो स्वतंत्रता सेनानी आ विचारकक लिखल किछु पंक्ति मोन पड़ि रहल अछि । 'हमरा सभके अगस्त 1947 मे स्वराज्य भेटल । केवल एहि दुआरे नहि भेटल जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल उच्च, मध्यमवर्ग स्वराज्य के लड़ाई मे सम्मिलित भेल । एहि दुआरे भेटल जे गाँधी जीकें नेतृत्व मे जतेक व्यापक सहयोग भरिसक भगवान बुद्ध के समय मे ओहि जन आन्दोलन, ओहि सुधारवादी आन्दोलन के भेटल छलैक ताहू सँ बेसी व्यापक सहयोग भरिसक गाँधी जी के भेटलनि । गाँधीजी एकरा कोना सुलभ केलनि ? गाँधी जी अंग्रेजी पढ़ल-लिखल विशेष वर्ग कें एहि प्रकारें सुशिक्षित केलनि जे ओ वर्ग जनसामान्य, अपन भूमि, अपन भूमिजन, अपन परम्परा सँ पीठ नहि फेरलक। कोनो नदीक द्वीप सन लोक कटल-कटल नहि रहल । स्वराज्य लेल जनसामान्य सापेक्ष होयब जरूरी छल आ जनसामान्य सापेक्ष लेल ओ अनेक रचनात्मक कार्यक्रम चलौलनि। ओ हमरा सभके एक सोझ-साझ मन्त्र देलनि जकरा चरखा कहल जाइत अछि । जे एक प्रतीक रूप मे सभ कें जनसामान्यक लग पहुँचा देलक । गाँधीजी जे चरखा के यन्त्र बना दलनि ओ यन्त्र प्रतीक छल ओहि मन्त्र के जे ओ देलनि कि अपन विशेषताक उपयोग हमरा लोकनि जनसामान्यक सेवा लेल करब- सामाजिक विकास लेल करब। .भेष आ भाषा दूनू सँ ।'

मुदा मिथिलाक प्रसिद्ध समाजशास्त्री डा० हेतुकर झा मिथिलाक सन्दर्भ मे विशिष्ट जन आ जनसामान्यक सम्बन्ध पर टिप्पणी करैत एक निबन्ध मे दूनूक बीच विरोधाभासक चर्चा करैत छथि । ओ कहैत छथि जे मिथिला समाजक विशिष्ट जाति आ जनसामान्यक विरोधाभास मे अनेक ऐतिहासिक ओ संस्थागत कारण विद्यमान अछि।ओ इहो कहैत छथि जे मैथिलीक उन्नति बिना मिथिलाक उन्नति सँ असम्भव अछि । संगहि मिथिलाक सर्वांगीण विकास लेल आवश्यक अछि विशाल जनसमूहक विकास जकरा उच्चवर्ग सँ बहुतो पुश्त सँ विरोधाभासक सम्बन्ध रहलैक अछि । अन्ततः डा० झाक कहब छनि जे निम्नवर्गक विशाल जनसमूहक जागरण सँ मिथिलाक पुनर्जागरण संभव ।

आइ एहि सभ कथन-चिन्तन पर विचार करैत ई आवश्यक बुझना जाइत अछि जे हमरा सभहक लेल जनसामान्यक पीड़ा जानब जरूरी अछि । जनसामान्यक दुख, कष्ट सँ एकाकार होयब जरूरी अछि । तखनहि विरोधाभासक विडम्बनाक अन्त सम्भव अछि । तखनहि अपन विशेषताक, उपयोग हमरा लोकनि जनसामान्यक सेवा लेल क' सकब-सामाजिक विकास लेल क' सकब । वास्तव मे जनसामान्यक पीड़ा जानब मिथिलाक पीड़ा जानब थिक ।

एकटा पौराणिक प्रसंग मोन पड़ैत अछि । नारदकें सनत कुमार एक महान मेधावी मनोवैज्ञानिक विद्यालय शिक्षकजकाँ शिक्षित क' रहल छलथिन। ऋषि नारद क प्रश्न सभहक अंतिम रुप सँ उत्तर दैत ओ कहलथिन जे हमरा लोकनि किछुओ

नहि जानि सकैत छी यदि हमरा लोकनिकें सभ किछुक जानकारी नहि अछि । जेना एक नीक चिकित्सक शरीरक कोनो भागक पीड़ा तावत तक नहि जानि सकैत अछि जावत तक ओ शरीरक भौतिक, संरचनात्मक आ दैहिक सम्पूर्ण जानकारी नहि रखैत हो ।

तैं मिथिलाक पीड़ा जनबाक लेल, किछु अनकहल कहबाक लेल मिथिलाक खोज जरूरी अछि पहिने । मिथिलाक खोज अर्थात सभ किछुक जानकारी, सम्पूर्ण जानकारी। की मिथिलाक पैघ-पैघ विद्वान, समाजशास्त्री, राजनीतिविज्ञानी, दार्शनिक, भाषाशास्त्री, वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ, न्यायविद्, धर्मशास्त्री आदि एहि दिशा मे डेग उठेबाक लेल प्रस्तुत छथि ? की जाहि माटि-पानि सँ ई देह पोसाएल अछि जाहि परिवेश मे विभिन्न संस्कारक वीजारोपण भेल अछि, तकरा प्रति, ताहि समाजक प्रति अपन विकसित दिमागक उपयोग करब बहुत लज्जाजनक अछि? मिथिलाक सेहो हमरा सभ किछु धारने छियैक से चुकेबाक विकलता अनुभव किएक नहि भ' रहल अछि ?

ई पोथी मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक रचनात्मक अभिव्यक्ति लेल समर्पित ओ प्रतिवद्ध अछि । मुदा कोनो प्रकारक रूढ़ि सँ सर्वथा पृथक सेहो अछि । प्रगतिशील चेतनाक लेल जरूरी पोथी बनि जाय तकर सेहन्ता त' कएल जा सकैत अछि मुदा लक्ष्यक पूर्ति बिना लेखक आ पाठकक सहयोगें सम्भव नहि लगैए । सन्धान कें अनियतकालीन रूपें निकालबाक लेल तत्काल अभिशप्त छी । ओना कम सँ कम दू बेर वर्ष मे निकलि सकय तकर कोशिश रहबे करत । प्रस्तुत अंक लेल अपन रचना द' जे लेखक, कवि सहयोग केलनि अछि हुनका प्रति आभार व्यक्त करब आवश्यक बुझैत छी । कवि-चिन्तक हरेकृष्ण झा सामग्री संग्रह एवं परामर्श लेल विशेष रूप सँ धन्यवादक पात्र छथि । अन्य सभ मित्र, शुभचिन्तक जे सन्धानक संचालन ओ सम्पादन लेल अपन सुझाव देलनि हुनको प्रति आदर व्यक्त करैत आशा करैत छी जे भविष्य मे हुनका लोकनिक संग अन्य पाठक लोकनि सेहो त्रुटिक दिस ध्यान आकर्षित करबैत अपन सुझाव सभ सँ अपनत्वक परिचय देताह ।

प्रसिद्ध कथाकार राजमोहन झा कें सन्धानक दिस सँ वर्ष 1996 क साहित्य अकादमी पुरस्कार लेल बधाइ । एहि अंक मे प्रस्तुत हुनका सँ भेल अन्तरंग वार्त्ता पुरस्कार घोषणाक किछुए दिन पूर्वक थिक ।

अन्त मे विज्ञापनसँ सहयोगक लेल विज्ञापनदाता लोकनिक प्रति सेहो आभार व्यक्त करैत छी । शेष त' सभ पाठकक हाथ मे अछिये....। इति ।

✍ –अशोक

सन्धान -1

पोथी-1

हसीना मंजिल

दूर देस पलायनक मृगतृष्णा आ' श्रमशील स्त्रीक संघर्षगाथा

'हसीना मंजिल' उषाकिरण खान क नवका उपन्यासक नाम थिक । ई उपन्यास प्रकाशन मंच, बन्दर बगीचा, पटना सँ छपल अछि । श्रीमती खानक अनुत्तरित एवं दुर्वाक्षत नाम सँउपन्यास पहिनहुँ मैथिली मे निकलि चुकल अछि। चर्चित प्रशंसित भेल अछि। हिन्दी आ' मैथिलीक कतेको प्रसिद्ध कथाक रचनाक कारणे उषाकिरण खानक नाम आब बिहार मे जानल-बूझल अछि ।

पहिल नजरि मे, कोनो किताबक दोकान पर राखल 'हसीना मंजिल' मैथिली उपन्यास नहि, हिन्दीक किताब बुझाइत अछि । मुदा पोथी उनटबिते लगले बूझि जाइये लोक जे ई मैथिलिए उपन्यास थिक । उपन्यासक आवरण चित्र पद्मश्री उपेन्द्र महारथीक बनौल अछि । सुन्दर, मुस्लिम युवतीक चित्र । श्रीमती खान कहैत छथि जे ई कथा नायिकाक चित्र थिक । उपन्यासो मे एकर वर्णन अछि।

उफ्न्यास हाथ मे ल' पढ़बाक कोशिश कयला पर प्रारम्भ मे भाषाक अटपटी कने स्वाद बिगाड़ैत छैक । मुदा लगले भाषाक ठाठ आ कथाक प्रवाह 'काकटेल' क आनन्द दिअ' लगैत छैक । बड़का, छोटका हिन्दू आ मुसलमानी मैथिली क मजा लिअ' लगैत अछि पाठक । कोरो, बाती आ जौउर सँ बान्हल गेंठसन तीनू जाति-वर्गक मैथिलीक अपूर्व ठाठ,ठाढ़ करैत छथि लेखिका ।

हसीना मंजिल उपन्यास लहेरियासराय लगं रहनिहार लहेरी जातिक मुसलमान परिवारक कथा थिक । लहठीक निर्माण आ विक्रय सैह हिनका लोकनिक मुख्य धन्धा छनि । राशि-राशिक लहठी बना ओकरा छिट्टा मे ल' कए भौरी लगाएब दस्तूर। काज-रोजगार । जीवन निर्वाहक साधन । उपन्यासक प्रारम्भे मे नायिका सकीनाक लहठी बनेबाक इलम सीखबाक वर्णन अछि संगहि मिथिला मे लहठीक महत्ता, उपयोगिताक संकेत सेहो । 'कनेके टा सँ अब्बा संगे बैसिक' जे सीखलक सकीना सएह जीवनक आधार भ' गेलैक । लाह बरकएबा मे कत्तेक आँचक जरूरति होइत छैक, कतेक लाह कतेक बालु आ कतेक कचरा फेंटल जाइत छैक तकर सही-सही अनुपातक ज्ञान जाहि लहेरी के भ' गेल से सभ सँ सेसर। पन्नी कतरब, मौका पर चप्प द' साटब आ बेलना पर लहठी रोलब, ई सभटा लूरि सकीना अब्बा सँ सिखलक। मोट-मोट लहठी बनएबा मे ओतेक इलिम के जरूरति नहि छैक । मिहिक्का तीसीफूल, कतरी आ सहाना बनएबा मे असली कारीगरी देखल जाइत छैक । आ अइ सभक जोर लगन मे सउसे तिरहुता मे होइ छै । जहाँ तलुक नजरि जाइ छइ सकीना के तहाँ तलुक तिरहुता छइ । आ तिरहुता मे लगन मे लोक इहे कच्चा लहठी पहिरलकं। ओइ

बिनु ने वियाह होइ छै, ने दुरागमन । ने बच्चा के छठियार पुजाइ छैक, ने मुड़न, जनेउ होइत छैक। छोटका सँ बड़का धरि लहठीक हाहि मारैत रहैत छैक ।'

एही लहेरी परिवारक दुखदर्द, संयोग-वियोग, साहस पलायन, अवनति-उन्नति, आत्मनिर्भरता, कर्मठता तथा मिथिलाक अन्य जातिक संग रचबाक-बसबाक कथा अछि हसीना मंजिल मे । सम्पूर्ण उपन्यास मे बूढ़ा उसमान पसरल अछि । सकीनाक त' सम्पूर्ण संघर्ष, दर्द, विछोह आ उपलब्धिक इतिहासे कहैए उपन्यास । सकीनाक माए हसीना । चौधरी जी क परिवार । अन्य अनेक महत्वपूर्ण चरित्र हसमत, विक्को मियाँ, मदीना, कमरू आदि । बूढ़ा उसमान जे कहियो जवान छल । देकुली सँ अइ नगर अपन बाबू संगे सीसाबला कंगना पहुँचाब' आबे । दुर्गापूजा मे लहठी बहुत रास बिकाइ। ओहिठाम एक दिन ओकर लगन के गप्प भेलै। हसीना संग निकाह भ' गेलै बीस टाका दैन मोहरक करार पर । से हसीना छल गजब के सुन्नरि । श्रीमती खानक शब्द मे, 'उज्जर शेखिन सन सकल आ आँखि केहेन कारी-कारी जेना चेड.। माछ तमचीनीक नबका कटोरी मे छटपटाइत होइ।' हसीना गौना भेलाक कइएक वर्षक बाद जखन गढुआरि भेल तखनहि लहेरियासराय मे दंगा-फसाद मे खून खच्चर भेल छलैक तकर आगि पझा गेल रहैक । मुदा किछु गोटेक हृदय क्षत-विक्षत भ' गेल छलैक । किछु नीक भविष्य आ' नवका सपनाक कारणें पड़ाय चाहैत छल । उसमान तकर प्रारम्भ केलक। नीक अवसर ताकि हसीना के कहलक, 'हसीना, हम तोरा सँ एकटा गप्प कहै छियह धियान सँ सुनह । हमरा संग पाकिस्तान चलह। ओतय नब राज मे बड़ पूछि छैक । एतय के पूछत अपना आर के । बतीस दाँतक बीच मे आँकर पाथर ज़काँ रहब ।' मुदा हसीना नहि मानलकै । ओ मानैत छल जे, 'अइठाम की घर, खेत आ रोजगार नहि अछि ओतय दूर देस मे की गादी लागल छैक ।' कतबो पोल्हौलक, तर्क देलक, आँखि देखौलक उसमान परन्तु हसीना किन्नहुँ पाकिस्तान जाय लेल तैयार नहि भेल । अपन पति उसमान संग नहि गेल । 'सभटा गहनाक पोटरी लेलकै आ चलि देलकइ ।' उसमान पाकिस्तान मे उद्योग-धंधा केलक। बियाह दान केलक। सुख सँ रह' लागल । एम्हर, 'उस्मानक बेरूखी सँ दुखी खाना-खोराक लेल तरसैत हसीना खुल्ला करा क' उसमानक छौ मास असरा देखलक । जखन ओ नहि आएल त' अपनहि बहिनोइ अहमद मियाँक घरनी भ' गेल।' एहि सँ पूर्व ओकरा एकटा बेटी भेलैक सकीना । अपन पूर्व पति उसमानक देल 'बेरूखी' के सहैत अपन पैर पर ठाढ़ हेबाक कोशिश केलक। श्रमशील नारीक आत्मविश्वास हसीना मे भरल छैक। सैह गुण ओकर बेटी सकीना मे आर नीक जकाँ अयलैक। उसमान पूर्वी पाकिस्तान मे रहय । जखन बंगलादेश बनलैक त' ओकर संसारे उनटि-पुनटि गेलैक । उसमानक शब्द मे, 'सभटा बेचि बिकिनि जनून मे आबि पाकिस्तान चल गेल छलहुँ । ई नहि क़हबह जे औत्तय जाए उन्नति नहि कएलहुँ। से त' कएबे केलहुँ आ खूब धन-मान अरजलहुँ । परिवार बढ़एलहुँ । आन लोक जकाँ बंगाली सब सँ कहियो कोनो झंगड़ा-झाँटी नहि केलहुँ, ककरो किछु ने बिगाड़लहुँ। तइयो राज बदलि गेलै तँ हमरा निकालि देल गेल । निकालत की सउसे परिवारक काटिकए फेकि देलक, हमहु ओही मे रही बाँचि गेलहुँ । हमर ओइ मुलुक मे कोनो अपराध कएल नहि छल । हम बिनु अपराधे सजाय पओलहुँ । हँ, अइ मुलुक मे जरूर अपराध कएलहुँ, बूझि पड़ैत अछि ताही अपराधक ओहेन बड़का डंड भेटल।' पड़ा कए भारत आयल । घूमैत-फिरैत

पुनः लहेरियासराय । सभ दिन पहिने ठेंगा ठुक-ठुकबैत सकीनाक घर लग चल आबय। ने कोनो काज ने रोजगार। बाद मे ओकरे आहिठाम रह' लागल। सकीना के चीन्हि गेल जे ई ओकरे बेटी छियैक। बेटीजकाँ मानहु लागल ओकरा । अपन डाँड़ मे राखल बाँचल सभ गहना-गुड़िया ओकरा द' देलक । मुदा अपन 'चिन्हाइन' नहिये कहलक। सकीने सँ बुझलक जे ओकर पति अरब गेल छैक कमाइ लेल । मुदा ओकरा ई देखि अजगुत लगलै जे 'अरब कमेनिहारक कमाइ जाहि घर मे अओतैक तकर कनियाँ एहन टूटल-फूटल मट्टिक घर मे रहतै ? अइ गरम पसेना मे आगि फूकि लाह बरकौते आ' एहन जीर्ण-शीर्ण पियन लागल फूलदार पंजी नुआ पहिरतै । बिना टुम-टाम के देह, टूटल गेह आ दुब्बर खद्दु सनक बौआइत बुतरू के देखि के कहतै जे अइ घरक स्वामी अरब कमाइ छै ।' मुदा बूढ़ा ऊसमान के नहि बूझल रहैक जे, 'समद अपन गाँव हसनपुर मे जमीन कीनलक अछि आ हसनपुरक एकटा डाक्टरक बेटी सँ अरब मे निकाह करा लेलकै अछि ।' आब समद के 'सकीनाक देह पसीना जकाँ महकै'। ओ बड़का साहेब जकाँ रहय। मुदा अरब जाइत काल सकीनाक सभ गहना गुड़िया, टाका पैसका संग सौंसे मकान बन्हक ध' कए चल गेल छल। अरब सँ अयला पर ने घर गिरबी छोड़ेलकै ने सकीना के पर्याप्त टाका देलकै । सकीना सेहो अपन माय हसीना जकाँ लहठी बना छिट्टा मे राखि भौरी लगाबय । अपन धिया-पूताक पालन-पोषण करए। बाद मे बूढ़ा उसमान ओकर सहायता सेहो कर' लागल। ओकरा नवका सीसावाला लहठी बनाएब सिखा देलकै । जे लहठी 'मार्किट मे हल्ला' मचा देलक । लहठीक नाम राखल गेलैक 'नगीना' । खूब बिकाय लगलै । सकीनाक व्यापार बढ़ैत गेलैक। आब ओ अपन दोकान खोललक अपन घर मे । नाम रखलक 'हसीना मंजिल'। सरकार पन्द्रह अगस्त के सकीना के सम्मान केलकै ओकरा लोककला (लाहक चूड़ी) के विशिष्ट ज्ञान लेल कला अकादमीक माध्यम सँ। मैथिलबन्धु लोकनि सेहो सकीनाक सम्मान केलनि । ओकर नाम-यश भेलै । मुदा अंत धरि ओ अपन बाप लेल छटपटाइत रहल। बूढ़ा उसमान अपन परिचय नहि देलकै। एक राति भूकम्प अयलै। उसमान मस्ज़िद मे चल गेल रहए । धरती डोल' लगलै। लहेरियासराय-दरभंगाक पुरना घर सभ भहरि के खसि पड़लै । मस्जिद आ मदरसा सेहो ओहि चपेट मे अयलै। मस्जिद सँ खटिया पर लादि क' उसमानक निस्पन्द शरीर आनल गेल। करेज टा धक-धक करैत छलै । विक्को मियाँ सकीना क मौसा ठेंगा ठुकठुकबैत आंगन पहुँचलै। उसमान के चिन्हलकै ओ । सकीना के कहलकै, 'ई तोर अब्बा उसमान छथून । हमर संगी । हमर सार उसमान ।' 'सकीनाक विलाप सँ भोरपरहक, दाना टुनका पाबय लय आकास दिस उड़ैत पंक्षी हठात थमकि गेलै ।' विक्को मियाँ हाथ आकाश दिस उठौने फातेहा पढ़य लगलाह...हसीना मंजिल मे उसमान अपन आखिरी साँस लेलक।

सम्पूर्ण उपन्यास पढ़ि तत्काल मोन मे बूढ़ा उसमानक नाटकीय अंत अपन प्रभाव छोड़ैत अछि । कचोट आ पीड़ा दैत छैक । सोचबा-विचारबाक लेल विवश करैत छैक। अपराधबोध सँ ग्रस्त उसमान अंत धरि बेटी लग रहियो क' अपन परिचय ओकरा नहि दैत अछि । कहि नहि पबैत अछि जे ओ ओकर पड़ायल बाप थिकैक । अपन पहिल पत्नी हसीना क संग कयल व्यवहार ओकरा अपन दुर्दशाक कारण बुझाइत छैक । मुदा सकीनाक पति समद के से सभ किछु नहि होइत छैक । ओकरा कोनो कचोट वा अपराध वोध नहि छैक । ओकर पलायन आ सुख-समृद्धिक मृगतृष्णा घुरिके

पाछू तकबाक लेल एखन धरि विवश नहि कैलकैक अछि । अरबक जगमगी औकरा मे प्रदर्शनप्रियता आ अपन देस आ लोकवेदक प्रति हीनमन्यता भरैत अछि । मुस्लिम पुरूखक दू पीढ़ीक ई मानसिकता हसीना मंजिल मे जगजिआर होइत अछि । ओना ई मात्र मुस्लिम पुरूखटा क मानसिकता नहि थिक, नहि भ' सकैत अछि । कोनो जाति वा' धर्मक पुरूख एहि मानसिकता सँ ग्रस्त भ' सकैत अछि । उल्लेखनीय तथ्य एतबेटा भ' सकैत अछिजे अपना ओहिठामक अथवा भारतक अन्य क्षेत्रोक मुस्लिम पुरूखक स्वतंत्रतापूर्वक पीढ़ी अपन कामना आ स्वप्न पाकिस्तान संग आ बादक पीढ़ी अरब देश संग जोड़ब सुविधाजनक मानैत अछि । अन्य जाति वर्गक लोक के एहि तरहक कोनो सीमा नहि छैक । मुदा, उपन्यास लेखिका के एहि बात के कहबा सँ बेसी प्रताड़ित आ पुरूखक 'बेरूखी' क आघात सहनिहारि स्त्रीगणक संघर्षगाथा कहबा मे रूचि छन्हि । उपन्यास क अंत एकटा दोसरो कोण सँ विचार करबाक लेल वाध्य करैत छैक । अकस्मात् मस्जिद मे भूकम्पक कारणे उसमानक जीवनक अंत किएक? उसमानक मृत्यु लेल प्राकृतिक आपदाक कोन प्रयोजन छलैक? की अपन पत्नी हसीना संग कएल अपराधक दण्ड आ प्रायश्चित भूकम्पे सँ आ मस्जिदे मे भ' सकैत छै? अथवा एहि देस मे बत्तीस दाँतक बीच आँकर-पाथर बनि नहि रहबाक आ' नवदेस पाकिस्तान मे अपन भविष्य देखबाक अपराध एहन अपमृत्यु के कारण अछि ? धर्म आ मजहब पर आधारित द्विराष्ट्रवादक सिद्धान्त क एहन करूण प्रायश्चित मस्जिदे मे सम्भव छैक ? अल्लाक घर मे ? ईश्वरक गोड़थारी मे? उपन्यासक आ बूढ़ा उसमानक अंत नाटकीय भइयो के अपन प्रभाव मे एहि सभ प्रश्न के उठबैत अछि। जहिना ई सभ प्रश्न ओ विचारक कोनो समाधान हठात् नहि देल जा सकैत अछि, सम्भव तत्काल नहि लगैत अछि, तहिना लेखिका सेहो एहि चुनौती के बूझि भरिसक एहन अंत सृजित केलनि अछि । एहि प्रकारें एहन नाटकीय अंत विचारक प्रश्न उठेबाक सामर्थ सँ ओत-प्रोत रहबाक कारणें उपन्यासक-कमजोरी नहि बनि पबैत अछि । जखन की प्रथमदृष्टि मे आन तरहक प्रभाव छोड़ितो कमजोरी लगैत छै।

उषाजीक आन उपन्यास एवं कथा सभक जेना अहू उपन्यास मे स्त्रीक कर्मठता, स्त्री संग कैल गेल अन्याय, स्त्रीक आर्थिक स्वाबलम्बन सँ अर्जित सामाजिक प्रतिष्ठा क गप्प नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि । लहेरी परिवार आ चौधरी परिवारक निकटता, मोह-ममत्व, इज्जति देबाक कथा सँ मिथिला मे साम्प्रदायिक सद्भावक उदाहरण सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि, जे नीक लगैत छै । अनेक छोट-छोट घटना आ वर्णन सँ उपन्यास लेखिका कथा-प्रवाह के पूर्णतया नियंत्रित केने छथि आ पाठक के एक बेर उपन्यास उठा लेला पर किछु कालक बाद छोड़बाक मोन नहि करैत छैक । उपन्यास क शैली विन्यस्त अछि।

मिथिला समाजक मुस्लिम परिवार क सुख-दुख, अभाव-अभियोग, समयक संग बदलैत मानसिकता, विकासक इच्छा, मिथिलाक प्रति प्रेम आदि विषय पर इंगित-आधारित बहुतो कथा मैथिली मे आएल अछि । मैथिली क आधुनिक कथा मे 'माइलस्टोन' मानल जाए बला स्व० ललितक कथा 'रमजानी ' मुस्लिम परिवारोक कथा कहैए। स्व० राजकमल चौधरीसँ लऽ कए रमेश धरि अनेक कथाकार क कथा मे मुसलमान चरित्र आ मुस्लिम परिवारक इति-वृत्त खूबे आएल अछि । उपन्यासो सभ मे आएल अछि । मुदा सम्पूर्णतः मिथिलाक अदौकालक बासिन्दा (डीही) लहेरी

परिवार पर आधारित उपन्यास मैथिली मे पहिल बेर आयल अछि । एहि अर्थ मे उषा किरण खानक लिखल हसीना मंजिल एकदम टटका आ पठनीय अछि । उपन्यास क एहि अकाल आ विकाल समय मे एहि उपन्यासक आगमन एक सुखद अनुभूति जगबैए तथा भविष्यक प्रति आश्वस्त करैए जे श्रीमती खानक संग आनो लेखक लोकनिक ध्यान एहि दिस जेतनि । मोटा-मोटी मैथिली उपन्यास अधिकांशत: मैथिल ब्राह्मण परिवारक कथा कहैये । मिथिला आ भारतक सार्वभौम समस्या सभ के उठबैत अछि । मुदा 'हसीना मंजिल' उपेक्षित आ पिछड़ल लहेरी परिवारक सुख-दुख क कथा कहि मैथिली उपन्यास लेखन के नव क्षेत्र मे प्रवेश करौलक अछि । कथानकेक क्रम मे आएल उपन्यासक किछु विन्दु-यथा मुस्लिम दू पीढ़ीक मानसिकता, नवदेस पलायन क महत्वाकांक्षा, कामना, अपन देस आ परिवारीक प्रति हीनभावना आदि उपन्यास के विचारो सँ लैस करबा मे सहायक बनल अछि । एतावता उषाकिरण खान के लहेरी परिवारक निकटता प्राप्त छनि, लहेरी जीवनके कहियो नजदीक सँ देखने छथि, लहेरी स्त्रीगणकश्रमशील स्वभाव, संघर्षशीलता आ' दैहिक-मानसिक सौन्दर्य प्रभावित केने अछि । उपन्यास क छपाइ साफ-सुथरा अछि। मुदा प्रूफक गलती अखर' वला अछि । एहन सुन्दर उपन्यास क प्रकाशन मे एहि प्रकारक लापरवाही नहि हेबाक चाहैत छलैक । भविष्य मे लेखिका एहि बातक ध्यान रखतीह से अपेक्षा सहजहिं हुनका सँ कएल जा सकैत अछि ।

—अशोक

चर्चित उपन्यास :
हसीना मंजिल, लेखिका-उषाकिरण खान,
प्रकाशक-प्रकाशनमंच, बन्दर बगीचा, पटना, वितरक-जिज्ञासा प्रकाशन,
बन्दर बगीचा, पटना-1
मूल्य-साठि टाका ।



सन्धान -1

पोथी-2

प्रसंग चारिटा कविता-संग्रहक

एकपेरिया आ राजपथ टपैत कविता

धार बहैत अछि टेढ़-घोंच
थोड़ेक गति लेल
बहुत भार छैक ओकरा माथ पर
गाछ सभके देबाक छैक भोजन
ओकरा चिड़ेक ठोंठ भिजयबाक छैक
भरबाक छैक गहूमक घास मे
हजारटा दाना
बहुत छैक भार ओकरा माथ पर
एकटा नान्हिटा धार
आ टेढ़-बकुली धार
(जीवकान्त)

डाकू छेकल बटोही जकाँ कलपैत
बसात बचा रौद तपैत
भाकुर माछ जकाँ मुँह बबैत
सत्तरि वर्षक बाबी
हारल नटुआ जकाँ झिटुका बिछैत छथि
आ घर सँ चोराक'
कीआ-ककबा
सिरहन्ना मे राखि लैत छथि
(उदय चन्द्र झा 'विनोद्र')

ओ अजन्मा भगीरथ !
पहिने पीढ़ीक उद्धार करू
तखन एहि बिकायलि धरती पर पएर धरू
ओना, अहाँक नाम
महाजनक खाता मे टिपा गेल अछि
सूद सहित मूर सभ लिखा गेल अछि,
जन्म लेबा सँ पूर्वहि अहाँक
जीवन बिका गेल अछि ।

(उपेन्द्र दोषी)

ई रुपया थिक/ दौड़ैत अछि, ई फाइल थिक/सड़ैत अछि, टाड. दुनूमे सँ ककरो नहि छैक, ई दूटंगे थिक जे ककरो दौड़बैत अछि, ककरो सड़बैत अछि,

(रमेश)

चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व 1996 मे लागल पोथी पंडालमे चारिटा सद्य: प्रकाशित कविता-संग्रह बेस चर्च-वर्च क संग आएल। वातावरणमे ककरो नाम, ककरो रूप चकभाउर कटैत रहल । एक विचित्रताक आभास दैत रहल पोथी सभ । स्वाभाविक रूप सँ विचित्रताक प्रति आकर्षण उपजै छै, से उपजलै । खाँड़ो (जीवकान्त) कहलनि पत्नी (उदय चन्द्र झा 'विनोद'),यंत्रणाक क्षण मे (उपेन्द्र दोषी), समवेत स्वरक आगू (रमेश) नाम पढ़लहुँ । पोथी सभकेँ उनटा-पुनटाक' देखलहुँ । सभहक छपाइ-सफाइ नीक । एक दिस 'खाँड़ो' आ दोसर दिस 'समवेत स्वरक आगू' बीच मे 'कहलनि पत्नी' आ 'यंत्रणाक' क्षण मे' । सभहक प्रकाशक अपन-अपन योग्यता-क्षमता प्रकट करैत। 'खाँड़ो' आ 'समवेत स्वरक आगूक' प्रकाशक किसुन संकल्प लोक, सुपौल तथा 'कहलनि पत्नीक' प्रकाशक उर्वशी प्रकाशन, पटना अपना दिस सँ कोनो 'प्रकाशकीय' वक्तव्य नहि देलनि अछि। मात्र 'यंत्रणाक क्षण मे' पोथीक प्रकाशक भूमिजा प्रकाशन, कलकत्ता 'प्रथम पुष्प' शीर्षक सँ लिखलनि अछि । अपन प्रकाशनक उद्देश्य प्रकट करैत प्रकाशक लिखैत छथि जे, 'मैथिली प्रेमी सुधी सभक प्रोत्साहन पाबि 'किछु' करबाक दिशामे एहि संस्थासँ सम्बद्ध हम सभ अग्रसर भेलहुँ ।' प्रकाशककेँ पोथी प्रकाशनक पूर्व अनुभव प्राप्त छनि मुदा मैथिली प्रकाशन क्षेत्र एकदम नवीन छनि । मैथिली प्रकाशन क्षेत्रक 'विहंगम सर्वेक्षण' कएला पर ई 'प्रतीत' भेलनि जे 'उपग्रह संचारक प्रेषणक युग मे एखनहुँ हम सब 'कठही गाड़ी' पर छी ।' तेँ आधुनिक प्रबन्ध आ प्रौद्योगिकी सँ मैथिली केँ जोड़बाक परिकल्पनाकेँ साकार करबाक क्रम मे प्रकाशककेँ मैथिली कविताक सशक्त हस्ताक्षर उपेन्द्र दोषी 'हाथ लागि' गेलथिन । एहि प्रकारेँ प्रथम पुष्प अर्पित भेल । प्रकाशकक प्रति आभार प्रकट कएल जा सकैत अछि । एहन दरिद्रभंजन मैथिलीक प्रति बहुत कृपापूर्वक 'किछु' करबाक लेल प्रेरित भेलाह । उर्वशी प्रकाशन अपने त' नहि किछु बजलाह अछि मुदा 'कहलनि पत्नीक' 'कभर' पर सभ किछु कहि देलनि अछि । 'चटनी' पिसनिहार आ ओलक साना, रैता बनौनिहारमे फर्क होइत छैक तकर फड़िछौट उर्वशी प्रकाशनकेँ क' लेबाक चाही । चारू पोथीक प्रकाशन के देखैत ई

स्पष्ट होइत अछि जे प्रकाशनक पाछू प्रकाशकक स्पष्ट मानसिकता, सोच आ सर्वांगीण जानकारीक कतेक जरूरति होइ छै । मैथिलीक आन क्षेत्र जकाँ प्रकाशनोक क्षेत्रमे गम्भीरताक अभाव आब बरदास्त सँ बाहर बुझाइत छैक । ओना मैथिलीमे प्रकाशक छथिहे नहि वास्तविक अर्थमे ।

डेरा पर पोथी सभ पढ़ब प्रारम्भ केलहुँ । दृश्य पर दृश्य उभरैत गेल । क्लोज अप, इम्पोज, सुपर इम्पोज, जूमक प्रयोग । साज बजैत रहल । इसराज...... सारंगी...डफरा-बंसुली...ढोल-पिपही...तासा...धुतहू....। शब्द गामक एकपेरिया, खेतक आरि, बलुआह धार, खरंजावला सड़क, पीचरोड, राजपथ, टपैत रहल। दृश्य-श्रव्यक समानान्तर एक जीवन सेहो चलैत रहल । रससँ भरल, द्वन्द्व आ आकर्षण मे पड़ैत-चौंकैत, पीड़ासँ छटपटाइत, सुखमे इतराइत, बच्चा जकाँ ठुनकैत आ'आक्रोशमे पतक्खा लेने आगूए आगू दौड़ल चल जाइत । एक सोझमतिया, संवेदनासँ परिपूर्ण, अपनो पर हँसि सकबाक क्षमता रखनिहार, प्रेमक मारल, स्थिति सँ झमारल, नाक पर क्रोध रखने शुद्ध मैथिल मनुक्ख प्रकट भ' जाइत अछि सोझाँ। लगैये जेना टी० भी० स्क्रीनसँ बाहर मूड़ी निकालि कोनो दार्शनिक सन ई मनुक्ख कहि रहल हो, हे, जहिया अहाँक जीवनमे दुखे-दुख रहि जाय, अहाँ बूझब जे संसारक सभसँ सूखी प्राणी अहींटा छी ।

एहि सुख-दुखक परिभाषासँ बलजोरी अपनाके बिलगबैत देखैत छी जे चारू कविता संग्रहक कवि तीन पीढ़ीक कवि छथि । एक दिस जीवकान्त दोसर दिस रमेश आ बीच मे एकहि पीढ़ीक उदयचन्द्र झा 'विनोद' आ उपेन्द्र दोषी। मोटा-मोटी उपेन्द्र दोषीकेँ छोड़ि तीनू कविक टटका कविता (वर्ष 1994 सँ ल' कए जुलाइ 1996 धरिक) सभ संग्रह मे अछि । दोषी जीक त' अधिकांश 1980क पूर्वहिक अछि । अंतिम एकटा 1991 क थिक । आब कने पृथक-पृथक कविता-संग्रह सभकेँ देखल-परेखल जाय ।

खाँड़ो : गति लेल चौंकबैत कविता

मैथिलीक श्रेष्ठ कवि जीवकान्तक कविता-संग्रह 'खाँड़ो' पढ़ैत लगैत अछि जे अन्तत: गति जरूरी अछि जीवन लेल । जड़ समाज आ ठमकल मनुक्खके स्वभावमे गतिशीलता अएबाक चाही । टेढ़-बकुली धार सैह सिखबैए । कवि जीवकान्त गति लेल चौंकि उत्पन्न करैत छथि, मुदा सम्पूर्ण कविता-संग्रहक आन्तरिक लयमे डूबल पाठक एहि गतिक चौंकि सँ चौंकि जाइये ।

जीवकान्तक कवि बहुत आवेस, लगाव आ ममत्व सँ प्रकृति केँ निहारैत अछि, दुलारैत अछि । पृथ्वीक प्रति, मायक प्रति, चिड़ै-चुनमुनीक प्रति, गाछपातक प्रति अनुरागसँ भरल आ एहि सभसँ जीवनरस पबैत जीवकान्तक कवि जीवन केँ सोझ मानैत अछि, देखौआ नहि बुझैए । ओ जनैत अछि जे जीवन ओतबे हरियर अछि जतबा हरियर छथि सूर्य सीसोक पात मे । जीवन लेल रस बचाक' रखनिहार धरतीक प्रति कृतज्ञताज्ञापन करैत अछि कवि ।

वायुमे बचल प्राणवायु आ संजीवनीक बल पर जीबैत प्रकृतिए सन सोझमतिया, रंग-विरंगी लोक छोट-छोट चिड़ै सभक साझी उड़ान, साझी स्वर, साझी जीवनक सुन्दर

एकलयता, मधुर एकस्वरता सँ मोहित होइत अछि । सोझमतिया लोकक संतोषी जीवनक रहस्य खोलैत कवि जीवकान्त कहैत छथि,

रंग उठाउ जतबा जरूरी हो जीबाक लेल
उठबैत अछि जतबा रंग आमक पात
नवका कलशमे
....
गन्ध ओतबे जे जरूरी हो जीबाक लेल
गन्ध जतबा आमक मज्जर उठबैत अछि ।

प्रकृतिमे व्यवहारिक ज्ञान पबैत कवि जीवकान्त अनावश्यक तथा अतिरिक्त साधन स्रोत हड़पबाक प्रवृत्ति छोड़बाक लेल सेहो कहैत छथि । प्रकृतिक लग रहनिहार लोककेँ लोभाइत नहि देखैत छथि कवि । एहन लोककेँ लग चालाकी आ अविश्वास नहि छैक । ओकरा शब्द सिखबाक कोनो छटपटी नहि छैक । मुदा एहन लोकक संतानकेँ ठक आ अंहकारी लोक हड़पि लैत अछि । संतान तखन शब्दक नटखेल सीखि जाइत अछि । ठक भ' जाइत अछि ।

किछु कविता मे शाश्वत ज्ञानसँ लोकमे संस्कार भरैत छथि कवि । बिना जरने कियो सूर्य नहि कहा सकैत अछि । सुगन्ध जोगेबाक लेल तपस्या कर' पड़ैत छैक। जीवनकेँ सार्थक कर' पड़ैत छैक । चुप्प रह' पड़ैत छैक एगारह मास । बनय पड़ैत छै गाछ, नीम चमेलीक गाछ । माए केँ देखि सेहो बहुत किछु सीखल जा सकैत अछि । माए अपसिंयात घरक-चुआठ सँ बीज केँ बचबैत छथि । माए बोध दैत छथि। ई बोध करबाक लेल बहुतरास बाँचल काज, बचएबाक लेल बहुत रास वस्तु दिस इंगित करैत अछि ।

कवि जीवकान्त गाममे सहज, उत्फुल्ल, रससिक्त बुझाइत छथि मुदा शहर मे डीजलक धुआँ पीबैत गाछ-वृक्ष, ट्रक-बस, सड़ल पानि सँ भरल नाली, करिया गादि देखैत छथि । शहरक प्रति कोनो आकर्षण नहि छनि । रोगाह कनैल गाछ केँ शहरो मे फुलायब नहि छोड़ैत देखैत छथि मुदा साफ-सफाइ कर' बला लोक शहर छोड़ि देलक अछि । श्रम कर'बला तथा प्रकति सँ प्रेम कर'बला शहर छोड़ि रहल अछि। शहर मे कविकेँ मात्र रचि-रचि क' बनाओल कटगर ग्रिल आकर्षित करैत छनि । खॉड़ोमे शहर आ गाम पर अनेक टिप्पणी अछि । चिन्ता अछि । शहरमे रहैबला लोक प्रकृतिसँ दूर आ आलसी भ' रहलए से लक्ष्य करैत छथि कवि जीवकान्त ।

शहर मे जेना कटगर ग्रिल दिस आकर्षित होइत छथि कवि तहिना गाममे बहैत धार सेहो आकर्षित करैत छनि, मुदा दूनूक आकर्षणमे निहित तत्व मे अन्तर बुझाइत अछि । ग्रिलक कलाकारी आकर्षक अछि त' धारक स्वभाव तथा स्वभाव बचा क' रखबाक प्रवृत्ति आकर्षक अछि । गति धारक स्वभाव छैक । अपन स्वभाव धार उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य पूर्ण करबाक लेल बचाक' राख चाहैत अछि । भले टेढ़-बकुली भ' जाय । तरूआरिक सम्बन्ध सेहो गति सँ छैक । खॉड़ो तरूआरि थिकीह। धारक प्रति लगाव गतिक प्रति लगाव थिक । कवि जीवकान्त मानैत छथि जे प्रकृतिसँ बहुत किछु सीखल जा सकैए । तैं प्रकृति सँ लोककेँ दूर नहि जेबाक चाही । एहिसँ लोकक स्वभाव बदलि जाइत छैक । लोक निष्क्रिय होइये।

कहलनि पत्नी : उत्तर दैत कविता

लोकप्रिय कवि उदयचन्द्र झा 'विनोद' क आठम कविता-संग्रह (दोहा लगाक') 'कहलनि पत्नी' मे पत्नी आ खास क' कए स्त्री पर आधारित बहुत रास कविता संग्रहीत अछि । विभिन्न बएसक स्त्रीक राग, अनुराग, लालसा, बिछोह, पीड़ा, बुधियारी चित्रित भेल अछि । आनो विषय पर आधारित कविता सभक अतिरिक्त कविता पर आधारित कविता सेहो अछि । जाहि मे कविता चाही आ' घुरिऔती कविता शीर्षक कविता कवि द्वारा कविता पर टिप्पणी थिक । कविता चाही मे कवि विनोद कहैत छथि जे कविता लिखब आइ आर अधिक भ' गेल अछि आवश्यक । संगहि हुनका इहो विश्वास छनि जे अन्हारकेँ उकन्नन करती कविता । ओ, अऔती, घुरिअऔती कविता । मुदा संग्रहक शीर्षक कविता 'कहलनि पत्नी' मे पत्नी पति केँ अंतिम रूपसँ कहैत छथिन जे–

काज की अछि कविताके
एहन सघन अछि अन्धकार
आनू सविताके
अपनो सोचियौ
रहल न दिन
बाँचल कविताके ।

कोनो पत्नी द्वारा कविता पर सन्देह आ अनास्थाक एहना स्थितिमे कविक कविता पर विश्वास; आस्था आ प्रयोजनीयताक विचार प्रस्तुत करब प्रशंसनीय कहल जा सकैए। लगैए जेना शीर्षक कवितामे कहल मन्तव्य पर कवि टिप्पणी क' रहल होथि । ओकर उत्तर द' रहल होथि ।

स्त्री पर आधारित विभिन्न कवितामे नीरव बालिका, बड़की पीसी, बाबी मे जीवनक प्रति लालसा, दुख, स्थितिबोध बहुत प्रच्छन्न रूपें प्रकट भेल अछि। कवि विनोद मैथिल जीवनक चित्र खींचबामे बहुत पारंगत मानल जाइत छथि। मिथिलाक गाम-घर, बाध-बोन, लोक-वेद, माटि-पानि हुनकर कवितामे अपन खास शब्दावली आ भंगिमाक संग अबैत रहल अछि । लोक हुनकर कविता सुनबा अथवा पढ़बाकाल मिथिला मे बुलबाक-टहलबाक सुख उठा लैत अछि । वातावरण आ चरित्र सभ मैथिलाम भेटि सकैत अछि विनोदक कवितामे । कविता कहबाक ढंग सेहो मैथिलाम रहैत अछि। भाषाक प्रकृति सेहो मिथिला समाजसँ उठाओल लगैत छै ।

बहुत ठाढ़ रहलियै
बैसि जइयौ अपने
बहुत रास रचौलियै
बैसि जइयौ अपने
बहुत फूसि बजलियै
बैसि जइयौ अपने
बहुत मंत्री बनलियै
बैसि जइयौ अपने ।

कवि उदयचन्द्र झा 'विनोद' क 'कहलनि पत्नी' केँ पढ़लाक बाद लगैए जे मिथिला आ मैथिल विनोदजीक खूबी आ सीमा दुनू छनि । जखनहि ओ एहि सीमा केँ टपबाक कोशिश करैत छथि देखार हुअ' लगैत छथि। मुदा अपन खूबी मे अप्रतिम छथि कवि

उदयचन्द्र झा 'विनोद' ।

यंत्रणाक क्षण मे : मकैक लाबा सन फुटैत कविता

भोक्ता कवि उपेन्द्र दोषीक कविता संग्रह' यंत्रणाक क्षण मे' पढ़लाक बाद एक सम्पूर्ण मैथिली कवि सम्मेलन सुनि लेबाक सुखद अनुभूति होइत छैक । कवि-समीक्षक भीमनाथ झा संग्रहमे अपनत्व सँ भरल 'भीड़ सँ फराक' भूमिका मे लिखैत छथि जे, 'जे कवि होइत अछि तकर हृदय सँ कविता फुटैत छैक-मकैक लाबा जकाँ । जेहन धीपल बालु, तेहेन फुटल-फुटल लाबा । बालु जँ धीपल नहि हो त' कवितो किरडी भ' जाइत छैक ।' यंत्रणाक क्षण मे संग्रहीत कविता सभहक अध्ययन-अवलोकन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कविता सभ मकैक लाबा सन फुटल अछि । बालु अवश्य धीपल छनि । मुदा ई नहि कहल जा सकैत अछि जे किरडी एकदम्मे नहि छैक । एकर कारण बेर-बेर बालुकेँ आगि पर सँ उतारब लगैत अछि। तैं कविक हृदय-कंसारक प्रबन्धन ठीक नहि छनि से कहल जा सकैत अछि ।

'यंत्रणाक क्षण' मे कविता-संग्रह के पढ़ैत कोनो संग्रहक सार्थकता आ परिभाषा पर विमर्श करबाक इच्छा हुअ' लगैत छै । संग्रहक अर्थ की ? आइ धरि जे किछु लिखल अछि-अपना मोन सँ, फरमाइसी सभटा केँ ओहि मे संग्रहीत क' दी ? आब पाठक 'वस्तुस्थिति' के चिन्हैत रहथु । 'व्यक्तित्त्व' तकैत रहथु । कथा वा कविताक संग्रहमे रचनाक तारतम्यता, आन्तरिक प्रवाह, एकसूत्रता, विषयक चयन, रूपक ठेकान राखब की आबो जरूरी नहि बुझाइत छनि मैथिली रचनाकार के ? मानल जे दोषीजी क ई पहिल कविता संग्रह छियनि । मुदा कोनो किशोर कवि त' ओ नहि छथि । दुनियाँ कत' सँ कत' चल गेल । व्यवस्था आ प्रबन्धकलाक एतेक विकास भ' गेल। दोषीजीकेँ जे मोन भेलनि तकरा उठाक' संग्रह मे ध' देलथिन । एहि सभमे दिमाग लगेबाक कोन काज ? बानगी सभ देखल जाय-

'सहटि चलू कोबर सँ भोर भेल बहिना.....',
'परसूखन श्री कृष्णजी अयला हमरा द्वारि.....',
'हे, रौ, फुलेना आ ने रौ......',
'भोजक समय तुलायल आ केरा धुकै छी हम....',
'एहि असार संसार मध्य उल्लू हमही छी......',
'मोन उखड़ल, बात उखड़ल सन लगै...ए....'
'सुधा बूझि पीबि गरल, काल सँ लड़ैत छी......'
'सुनगि गेल छै बन-पलास मे आगि.....'

गीत, गजल, भजन, कविता सभटा एक्केठाम गेंटल । जेकरा जे मोन हुअए तकर आनन्द लिअ' । एहिठाम सभ किछु भेटि सकैत अछि ।

ओना फराक-फराक कवि दोषीक कविताक आनन्द उठाओल जा सकैत अछि। जाहि विषयकेँ ओ अपन कविता मे उठबैत छथि ओकरा ओहि क्षण डूबि क' व्यंजित करबाक कोशिश करैत छथि । विन्यसित करैत छथि । असल मे कवि दोषीकेँ 'कमेन्ट पास' करबामे महारत हासिल छनि । उपेन्द्र दोषीक टिप्पणी/ मन्तव्य अपूर्व होइत अछि। प्रभावशाली होइत अछि । ओहिमे कने वक्रता हास्य-व्यंग उत्पन्न करैत अछि । एहि

कारणे कवि दोषीक छोट-छोट कविता वेसी सटीक लगैत अछि । जखनहि ओ विस्तार मे जाइत छथि ढील-ढाल भ' जाइत छथि । पैघ कवितामे बेसी सचेत सन सेहो लगैत छथि कवि दोषी। जेना पैघ कविता रचबाककाल हुनकर चेतना कने बेसिए साकांक्ष भ' गेल हो। तैं पैघ कवितामे तीव्रता आ' औचित्यक निर्वाह नहि भ' पबैये ।

सहजता दोषीक प्रमुख गुण थिक । सहजभाव सँ बिना कोनो पेंच-पांच कैँ ओ अपन बात कहि देबाक अभ्यासी छथि । जखने पेंच-पाँच कर' लगैत छथि देखार हुअ' लगैत छथि । कवि दोषीक यैह प्रकृति हुनका घिनाओन, झंझटिया विपरीत, परेशानी सँ भरल वातावरण सँ उबा दैत अछि । ओ एकरा सह्य नहि क' पबैत छथि । हुनका मोन हुअ' लगैत छनि जे एहि वस्तु, वातावरण क मूलोच्छेदन क' दी । ह'......ह'....ह'...चल...गेल...। यैह भाव 'संवैधानिक शिशुकेँ' बेर-बेर नपुंसक, डपोरशंखी, पतंगबाज, रीढ़हीन, भ्रष्ट जनमैत देखि क' विखिन्न भ' जाइत अछि । हुनका हुअ' लगैत छनि जे एहन कोनो 'वैज्ञानिक अस्त्र' होइते जे एहन शिशुके गर्भ सँ झीकि क' खलास क' दितैक,

आवश्यक अछि एहन कोनो वैज्ञानिक अस्त्र
जे गर्भस्थ शिशु केँ झीकि
क' दिअए खलास
कोखि भ' जाय-शुद्ध आ' बाँझ
ने रहत बाँस, ने बाजत बसुली....।

समवेत स्वरक आगू : चकविदोर लगबैत कविता

कथाकार-कवि रमेशक 'समवेत स्वरक आगू' पढ़ैत रचना सभ चकविदोर लगबैत अछि । पेटमे जेना किछु हौंड़' लगैए । शरीरक हवा जेना निकलि जाइए। एतेक लम्बा 'रेंज' छनि, आज्ञा डाला सँ ओनिडा-ओनिडा धरिक जे पाठक के लगैत छैक जे विशाल समुद्रक पानि घुमबैत-फिरबैत बलुआह जमीन पर पटकैत हो । मुदा एहि मे मजा सेहो अबैत छैक । एहि लेल लोक बेस उत्साह सँ समुद्रक कात जाइत अछि । रामहिंडोला पर चढ़ैत अछि । एहि सभमे 'एडभेंचर' अनुभव होइत छैक । हिंडोला पर घुमबाक, समुद्रक लहरि लेबाक। रमेशक तोड़-फोड़ समुद्रक ज्वार-भाटा सन बुझाइत छैक । मुदा एहि लेल रिस्क त' लिअहि पड़तैक । पहिनहिं जँ गरजैत समुद्रकेँ देखि पतनुकान ल' लेत त' सुख कोना उठाओत? मोती कोना भेटतै?

जहिना समुद्र निस्सीम अछि, तहिना रमेश सेहो कोनो प्रकारक बन्धन सँ मुक्त छथि । केवल अनुभव केलहुँ आ ओकरा अभिव्यक्त क' देलहुँ । कखनो लक्षणा-व्यंजना मे, कखनो ठाँहि-पठाँहि । कहबाक वेगरता, स्थितिक चुभनि हुनका तीलिया-फुलिया करबाक 'टेम' नहि दैत छनि । इहो भ' सकैए जे यदि ओ निचेन भ' कए कह' लगताह त' बात गड़बड़ा ने जाय । तें रमेशक कविताक लहरि लेबाक चाही । ओकर रूप आ अव्यवस्था सँ घबड़ेबाक, भरकबाक नहि चाही । लहरिलेबा मे अहाँक नाक-कान, मुँह बालु सँ भरि जा सकैत अछि । लहरि कखनो नीक जकाँ पटकियो देत। मुदा एहि सभ 'टीस', दर्द मे जे 'मजा' छैक से बैसले-बैसल रमेशक कविताकेँ पढ़ि उठाओल जा सकैए, जानल जा सकैत अछि।

'डाँस कटैत, जोनि मे कौआ लोल मारैत, पोसनिहार केँ कसाइक प्रतीक्षा, देखनिहार केँ असाइक नकघोंकची आ अपना-आपकेँ डकहाक प्रतीक्षा , डिड़िआइत-सड़लगड़ल तांत्रिक जकाँ, रड़ियाइत-बातरसी वृद्ध पहलवान जकाँ, मुक्ति-कामना-कालीघाटक वृद्धा वेश्या जकाँ, आँखि पथरायल-मिथिलाक थाकल-हारल कर्मकाण्डी जकाँ, क्रान्ति प्रतीक्षा ?- भारतीय बुद्धिजीवी जकाँ, एहि महापूर महींसक गोंत आ छेरकट सँ आब नकमनि भ' गेल भाइ',

रमेशक एहि नकमनि सँ नाक घोंकचायब त' हुनकर कविताक दोसर रूप कोना देखि सकब ?

'कतओक मन्वन्तर सँ नीम-भाँटा आ हुड़हुड़क छौंक ले हमर जीह पनिआएल अछि नानी, खड़ना आ पड़नाक कठिया-लाड़निक अर्थ के बुझाओत हमरा ? डराडोरि मे लहसूनक जाबा गाँथिक' दसमी मे रछिया देब' बाली आ बाकसक पात-भाँटिक मूड़ी पीसि क' खुरचन मे पियाब' वाली हमर नानी ! अहाँ दरदमेदाक रस पीबि क' कत' लटुआएल छी ? अहाँ गोठुल्ला मे किए बैसल छी-की भेलए नानी ?'

एहिना घुमबैत-फिरबैत, भीजबैत, तीतबैत, गरम हवा दैत, सुखबैत, घुर्मा लगबैत, हुलास भरैत रमेश 'अहाँके उठा क' ठाढ़ क' देताह । आ' जोर-जोर सँ हाथ चमका क' कह' लगताह,

'बर्फ मे गलबाक इतिहास मनुक्खक छै । आगि मे झरकबाक इतिहास मनुक्खक छै । भरल कटोरा माहुर एक छाक मे पीबाक इतिहास मनुक्खक छै। रेशमी तागक फाँस मुसकीक संग गरदनि मे पहिरि लेबाक इतिहास मनुक्खक छै । मुदा हारि मानबाक कोनो टा इतिहास मनुक्खक नहि छै ।'

रमेश अपन एहि 'ट्रीटमेंट' सँ अहाँके मनुक्ख बनब' चाहैत छथि से बुझबामे अहाँके भांगठ नहि रहबाक चाही । एहन मनुक्ख जे एहन विक्षिप्त समयमे बन्न कोठलीमे ठरड़ नहि-पाड़य ।

एहि प्रकारें चारू कविता संग्रह केँ पढ़ैत पाठक- प्रकृति, गाम, सोझमतिया लोक, सोझ-साझ जीवन केँ देखैत गति धरैत अछि । मोन मे ममत्व, शाश्वत ज्ञान ओ संस्कारक सुगन्धि लेने घर-बाहर करैत, मिथिला मे बुलैत-टहलैत, मैथिल सभ सँ भेंट-घाँट करैत, विभिन्न कमेंट सभ सुनैत अछि । गीत, गजल, भजन बजबैत अछि । मुदा नपुशंक वातावरण, घिनाओन समयक दबाब सँ विखिन्न होइए । ओ राम हिंडोला पर चढ़ैत अछि । समुद्रक लहरि लैत अछि । 'टीस' सहैत अछि। हुलसैत-फुलसैत अछि । विहुँसि क' सभटा विचार सुनैत अछि । मैथिली कविता के एक पेरिया आ राजपथ टपैत देखैए । कविताक मैथिल मनुक्खक उपदेश सहैए......।

—अशोक

चर्चित पोथी :

खाँड़ो— जीवकान्त, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, मूल्य-पन्द्रह टाका
कहलनि पत्नी-उदयचन्द्र झा 'विनोद', उर्वशी प्रकाशन, पटना, मूल्य-पन्द्रह टाका
यंत्रणाक क्षण मे—उपेन्द्र दोषी, भूमिजा प्रकाशन, कलकत्ता, मूल्य-तीस टाका
समवेत स्वरक आगू—रमेश, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, मूल्य—पन्द्रह टाका

□

संधान -3

सम्पादकीय

साहित्य हुनकर जीवन छलनि

प्रभास कुमार चौधरी आब नहि छथि । हुनकर अभाव सभ के खटकि रहल अछि । कतेक रास भरोस टूटि गेल अछि । भरोस छलैक जे प्रभासजी छथि त' बात बनि जायत । ओझराएल ताग सोझरा जायत । ठमकल डेग फेर उठि जायत । सभ के संग ल' चलबाक कौशल हुनका मे रहनि । योजना बनएबाक आ ओकरा कार्यान्वित करबाक ताकति हुनका मे छलनि । सभक सहयोग प्राप्त क' लेबाक क्षमता रहनि । सब बएस आ वर्गक लोक के आस्था हुनका संग जुड़ल छल। एम्हर ओ आर बेसी सक्रिय भ' गेल छलाह । सगर राति दीप जरयक माध्यमे, प्रवासी वा कथा-दिशाक माध्यमे अथवा युवालेखनक संग अनेक सृजनात्मक गोष्ठीक माध्यमे।

हुनका अपन पिताक बाद पत्नी ज्योत्सनाजीक देहावसान सँ अत्यधिक आघात लागल रहनि । ओ लगभग टूटि गेल छलाह । कमजोर भ' गेल छलाह । एहन स्थिति मे साधारण लोक एकान्त ताक' लगितए । पूजा-पाठ कर' लगितए अथवा शराब मे, भांग मे बुत्त भ' जइतए । प्रभासजी साधारण लोक नहि रहथि । साहित्य हुनकर जीवन छलनि । तँ ओ साहित्य मे आर बेसी अपना के सक्रिय केलनि । अपन मूल आस्था के पकड़लनि । अपना के बचा क' रखबाक चेष्टा केलनि । मुदा आघात पैघ छल। कने लापरवाह भ' गेलाह । यैह लापरवाही हुनका लेल घातक भ' गेलनि ।

दुख के बिसरबाक लेल ओ सृजनात्मक मंच के माध्यमक रूप मे किएक चुनलनि? साहित्यो मे हुनका लगभग सभ किछु प्राप्त भ' गेल छलनि जे साधारणतया कोनो मैथिली लेखक के काम्य भ' सकैत छैक । प्रसिद्धि, पाठकक संख्या, मोजर, पुरस्कार सभ भेटि चुकल छलनि । आब ओ राम-राम करैत जीवन बीता सकैत छलाह। पथ्य-पानि सँ रहि सकैत छलाह । मुदा नहि । हुनका भीतर जे निरन्तर एक आगि जरि रहल छल से आर धधकि उठल । साहित्य, सृजन हुनकर जीवन छलनि । ओ ओही मे अपना के सक्रिय, सार्थक केलनि । अपन मुक्ति तकलनि ।

प्रभास कुमार चौधरी जखन कथा लिखब शुरुह केलनि ओहि सँ पूर्व ललित, राजकमल, धीरेन्द्र, सोमदेव, रमानन्दरेणु, मायानन्द मिश्र, रामदेव झा, हंसराज आदि मैथिली कथा मे अपन विलक्षण आ महत्वपूर्ण योगदान क' रहल छलाह । स्थापित भ' गेल छलाह । आधुनिक मैथिली कथाक आधार के व्यापक ओ सुदृढ़ क' रहल छलाह । विश्वक आन भाषा-साहित्यक समकक्ष मैथिली के ठाढ़ करबाक लेल ओ लोकनि प्राण-प्रण सँ चेष्टारत रहथि । मैथिली कथा मे नव विषय, नवभूमि, नव भाव-बोध आबि रहल छल । हिनका लोकनिक हस्तक्षेप आ योगदान बिसरल जाइवला नहि अछि। मुदा हमरा ई आश्चर्य लगैत रहल अछि जे एतेक आधुनिक ओ सम्बद्ध बूझल जाइबला लेखक लोकनि अपन जीवन मे अन्तत: एतेक एकांगी, तन्त्र-मन्त्र मे आस्था रखनिहार, अतीत मे चल जाइबला, रोशनीक एक किरण लेल व्याकुल, सन्यस्त आ कट्टर किएक भ' गेलाह ? हालांकि एक तरहें देखी त' एहि सँ हुनकर रचना वा कथाक विकास प्रभावित नहि भेल अछि। ओकर मूल्य कोनो प्रकारें अस्वीकार योग्य नहि अछि । मुदा प्रश्न ई बहुधा उठैत रहैत अछि जे किछु अपवाद के छोड़ि ओ लोकनि सृजन सँ विमुख किएक भ' गेलाह ? अपना के पहिनहिं जकाँ साहित्य सँ, साहित्य मे आनल अपन दृष्टिबोध सँ जोड़िक' किएक नहि राखि सकलाह ? साहित्य आ जीवन मे अन्तर्विरोध किएक उत्पन्न भेल ? ओ ऊर्जा आ उष्मा हुनका भीतर अन्तधरि किएक नहि संरक्षित रहि सकल ? एहि सभ प्रश्नक उत्तर हमरा लोकनि के तकबाक चाही। तकबाक चाही जे लेखकक जीवन मे ई निराशा, जटिलता, टूटन किएक उत्पन्न भेल ? तखनहि हमरा लोकनि अपन जीवन आ लेखन के विकसित क' सकब । मैथिली कथा के आगू बढ़ा सकब । सार्थक जीवनक प्रारुप प्रस्तुत क' सकब । जे मनुक्खक गरिमा के आ ओकर जीजीविषा, प्रतिरोध एवं संघर्षक शक्ति के अभिव्यक्त क' सकत ।

हम सभ इहो देखैत छी जे प्रभासक पीढ़ी मे आबि क' स्थिति मे परिवर्त्तन आएल अछि । जीवन आ साहित्य मे विरोधाभास, अन्तर्विरोध कम भेल अछि । अनेक लेखक अन्तधरि अपन ऊर्जा संरक्षित रखने देखाइत छथि । राजमोहन झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन आदि नाम एहि बातक प्रमाण अछि । ई लोकनि अपन साहित्य मे एतेक जोर आ तेजी सँ नहि दौड़लाह जे हुनकर सांस फुल' लागनि। अपन जीवन ओ साहित्य मे एक तारतम्य बनाक' रखबा मे ई लोकनि सफल भेल छथि । ने तेज दौड़ी ने ठेस खसी । आवश्यकतानुसार परिस्थितिवश कखनहुँ के कदमताल सेहो करैत रहलाह अछि त' सशक्त आ गतिशील डेग सेहो उठौलनि अछि । मोटामोटी ई लोकनि अपन जीवन आ साहित्य मे सहज रहल छथि । प्रभास कुमार चौधरी मे जे गुण हमरा लोकनि देखैत छी से कोनो असगर हुनके टा मे नहि छलनि । हुनकर समस्त पीढ़ी मे कमो-बेश छनि । भले ही ओकर अभिव्यक्ति जेहेन हो, जेना हो ।

प्रभासजी के अपन पिता सुरेन्द्र चौधरी सँ अत्यन्त लगाव छलनि । अपन गाम सँ अत्यधिक जुड़ाव छलनि । ओ ई बात कहियो नहि बिसरि सकलाह जे सोलह बरखक अवस्था मे गाम हुनका सँ छूटि गेल रहनि । जीवन बनेबाक लेल गाम हुनका छोड़' पड़लनि । मुदा सोलह बरखक अवस्था धरि गाम मे बिताओल जीवन हुनकर हृदय मे 'फ्रीज' भ' गेल रहनि । जेकरा हुनका जखन आवश्यकता होइन कने धाह देखाक' घमा लेथि । एहि मे हुनकर पिता चिट्ठी द्वारा सहायता करथिन । वैह जीवन हुनकर प्रेरकशक्ति सेहो छलनि । हुनकर सीमो बनि गेलनि। एहिगाम मे सभसँ प्रमुख हुनका लेल हुनकर 'पिता' छलथिन । वियाहक बाद नोकरीक कारणे जखन ओ 'शहर' मे रह' लगलाह त' ओहिठामक प्रमुख हुनकर पत्नी छलथिन। गाम छल संयुक्त परिवार त' शहर छल सरकारी परिवार । गाम सँ शहर, संयुक्त परिवार सँ सरकारी परिवार दिस संक्रमण मे प्रभासजी फँसि गेलाह । एहि पार सँ ओहिपार नहि जा सकलाह । ताहू मे जखन मित्र जीवकान्त हुनका टोकारा द' देलथिन जे 'प्रभासक कथा मे कथानायक पिता आ पत्नीक बीच 'ओसिलेट' करैत अछि' त' ओ एकर संज्ञान ल' लेलनि । सचेत भ' गेलाह । जीवकान्तक टिप्पणी के कटबाक लेल ओ प्रसिद्ध कथा 'पिता' लिखलनि । ई बात, ई बोध अन्तधरि हुनकर पछोड़ नहि छोड़लकनि। अपन अन्तिम कथा 'अष्टाबक्रक शेष कथा' मे सेहो ओ अपन 'पिता' मे कहल बात के पुष्ट केलनि। एहि प्रकारें नेनपन मे बिताओल गामक जीवनक संग 'पिता' सेहो हुनका मे फ्रीज भ' गेलनि ।

प्रभास कुमार चौधरी पूर्व जमीन्दारक पौत्र छलाह । एक कवि-शिक्षकक पुत्र छलाह । बंगला साहित्य सँ नेनपने मे परिचित भ' गेल रहथि । हृदयक उदारता हुनका मे मानवीयता आ मानवीय सम्बन्धक उष्मा प्रदान केलकनि । ओ एहि उष्माक सृजनात्मक उपयोग केलनि । एहि सँ जरबो-पजरबो केलाह । सुख-दुख भोगलनि । मुदा ई उष्मा हुनकर हाथ सँ कहियो नहि छूटल । एही उष्मा सँ ओ लोक के, पाठक के प्रकाश आ गरमी परसलनि । जे ठिठुरैत जड़काला मे सुर्जक ताप ल' के आएल । एहि सन्दर्भ मे एहि बातक बड़ थोड़ महत्व अछि जे ओ अपन वर्ग सँ बाहर नहि निकलि सकलाह।

मुदा अपन वर्गक भीतरे रहि ओ जाहि आलोचनात्मक दृष्टिक संग ओहि वर्ग आ जातिक राग, द्वेष, टूटन, पतन, घमण्ड, आतंक-आदंक के तकलनि आ नपलनि से एहि सँ पूर्व मैथिली कथा मे एतेक व्यापकता सँ नहि आएल छल ।

प्रभास सर्वहारा, दलितक लेखक नहि छलाह । प्रभास मे दलित दृष्टि नहि छलनि। सर्वहारा, लेल, दलित लेल हुनका हृदय मे ममता छलनि । सहानुभूति छलनि । सहानुभूतिएक कारण ओ ओहि वर्गक गतिविधि पर सेहो नजरि रखने छलाह । समयक

संग चलि रहल परिवर्त्तन ओ आन्तरिक बैचेनी के ओ अखियासि रहल छलाह । मुदा हुनकर दृष्टि सामाजिक-सांस्कृतिक छलनि । ई अकारण नहि अछि जे दलित शोषितक जाहि विन्दु के-आत्मसम्मान आ इज्जतिक बिन्दु के ओ अपन रचना मे अभिव्यक्त केलनि ओ एम्हर 'आर्थिक शोषण' सँ आगू निकलि गेल अछि। ओकरे भजा क' आइ राजनीतियो भ' रहल अछि । सामाजिक न्यायक ई एक प्रमुख विन्दु मानल जाइए । प्रभासक कथा-उपन्यास मे ई विन्दु बीस तीस वर्ष पूर्वहिं सँ अभिव्यक्त होइत रहल अछि । हमरा जनैत आर्थिक शोषणक प्रति जागरूकताक लेल ई आधार बिन्दु थिक । प्रस्थान विन्दु सेहो भ' सकैए। मिथिला मे वामपन्थी आ समाजवादी आन्दोलनक व्यापक प्रभाव समाज पर पड़ल अछि । प्रभास जी गाम आ समाज सँ जुड़ल छलाह । तैं दोसरो पार सँ देखिक' ओ एकरा अकानि लेलनि । प्रभासक लेखन मे जे बात आएल से मैथिली मे पहिनहुँ सँ आबि रहल छल । यात्रीक 'बलचनमा' त' एकर ठोस आ प्रमाणिक उदाहरण अछिये । राजनीतिक रूप सँ सेहो अनेक संगठन एहि दिशा मे निरन्तर कार्यरत रहल अछि । ई फराक बात जे रोपलक कियो आ कटलक कियो ।

X X X

साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1998 क लेल मैथिलीक प्रसिद्ध कवि-कथाकार जीवकान्तक कविता-पोथी 'तकैत अछि चिड़ै' के पुरस्कृत कएल गेल अछि । एहि लेल सर्वत्र प्रसन्नता अछि । तकैत अछि चिड़ै' लेल जीवकान्त, के मैथिल समाज रहिका द्वारा सेहो किरण पुरस्कार देल जा चुकल अछि । महाकवि यात्रीक 'पत्रहीन नग्न गाछ'क बाद परुकाँ कीर्त्तिनारायण मिश्र केँ 'ध्वस्त होइत शांतिस्तूप' लेल साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत कएल गेल आ एहि वर्ष जीवकान्त के । एक्कैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ मैथिलीक समकालीन कविताक ई सम्मान रूढ़िवादी दृष्टि-बोधक पराजयक प्रतीक थिक । साहित्य अकादमी पुरस्कारक मान्यजूरी लोकनि एहि लेल धन्यवादक पात्र छथि । लगैए रौद मे कने गरमी आएल अछि । जाड़ फाटल अछि आइ प्रभासजी रहितथि त' अपन मित्र जीवकान्त के पुरस्कृत होइतं देखि प्रसन्न होइतथि।

मैथिलीक मान्य कवि-कथाकार जीवकान्त केँ साहित्य अकादमी पुरस्कारक लेल सन्धानक बधाइ ।

अशोक

सम्पादकीय

विकास-सन्दर्भ

किछु मास पूर्व एकटा मैथिल भेटलाह । बैंक मे अधिकारी छथि । गप्पक क्रम मे कहलनि जे मैथिलीमे एखनो पचास वर्ष पहिलुके साहित्य लिखल जाइत अछि। ओहिठाम चारि समाङे रही । बुझू त' लूझि लेलियनि । हुनका पानि पियाब' पर वित्त। ओ कहैत रहलाह जे दुनिया कत' सँ कत' चल गेल अछि । सूचना तकनीक-इंटरनेट, बेबसाइटके जमाना अछि । मुदा मैथिली मे ई सभ कतहु नहि भेटत । हमरा सभ हुनका एहि बात पर गोलियौने रही जे पछिला तीन वर्ष मे कोन-कोन मैथिलीक पोथी अहाँ पढ़लहुँ अछि । ओ माटि पकड़ैबला नहि रहथि । कहलनि जे पढ़बाक काज कोन अछि । सभा-सोसाइटा मे जाइत छी । गोष्ठी सभ मे भाग लैत छी । लोक सभक गप्प सुनैत छी । हमरा बूझल अछि जे मैथिली मे पढ़बा जोगर किछु नहि अछि । अन्तत: ओ भेंट एकटा तनाओ मे समाप्त भेल रहय ।

ओ भेंट मुदा मोनके एखनो छेकने अछि । होइए जे ओहि मैथिल केँ मैथिलीक पाठक बनाबी । देखा सकी जे मैथिली मे पचास वर्ष पहिलुक साहित्य नहि लिखल जाइत अछि । किछु मित्र कहैत छथि जे व्यर्थ चिन्ता मे पड़ल छी । ओहि मैथिल केँ मैथिलीक पाठक नहि बना सकैत छी । कहुना बनाइयो लेब त' ओ टिकताह नहि। कोनो ने कोनो लाथ लगाक' फेर हाथ झाड़ि लेताह । किछु आर नव गप्प सभ कह' लगताह । ई मृगतृष्णा छोड़ू । दोसर दुआरि देखू ।

एहि बातक खोज सेहो अछि जे मैथिल पाठक केँ सभ सँ प्रिय कोन रस छनि। पाठकक विकास केहेन भ' रहल अछि । कोन रस मे लटपटा क' हुनका राखल जा सकैए । किछु गोटा कहैत छथि जे शृंगार रस मे । मैथिल लोकनि अदौ सँ शृंगारिक छथि । किछु गोटा कहैत छथि जे हास्य रस मे । प्रो. हरिमोहन झा केँ प्रमाण रूपमे उपस्थित करैत छथि । मुदा किछु गोटे एहनो छथि जे मैथिलकेँ सभ सँ प्रिय रस मे

निन्दा रसकेँ मानैत छथि । ताहू मे अपन निन्दा हो त' महोमहो । एहि अपनक परिधि मे अपन लोक, अपन समाज, क्षेत्र अर्थात् जत' कतहु मिथिला आ मैथिली हो । मैथिल हो । तकर जतं विन्यास सँ निन्दा करब । जत्ते मसल्ला-तेल-आमिल-मेरचाइ द' क' परसव मैथिल पाठक के तत्ते पसिन्न पड़तनि । ओ अही रस मे अहाँक सृजनात्मकता-कलात्मकताक लोहा मानि सकैत छथि । एताबता निन्दा जँ तेल मे चपचप अँचार जकाँ परसल जाय त' मैथिल पाठक केँ अहाँ तृप्त क' सकैत छी ।

किछु गोटे दोसरे बात कहैत छथि । ओ कहैत छथि जे निन्दा असगर किछु नहि क' सकैए । ओहि मे झगड़ा-रगड़ाक तीत-कसाय स्वाद मिज्झर करब जरूरी अछि । नीम-भाँटा, पटुआ साग, करैला आ मेंथी-मंगरैल खएनिहार मैथिलक चटकार मे झगड़ाहु व्यसन के नहि अनठा सकैत छी । तैं साहित्यमे झगड़ादन के गप्प, रगड़ा-रंगड़ीक वर्णन हरबे-हथियारक संग अवश्य रहय । हथियार माने बम-गोली नहि। बम-गोलीवला साहित्यके त' मैथिल पाठक लगले बम बजा देताह । एहिठाम त' बोली मे गोली हेबाक चाही । साँप मारल हुअए वा नहि मुदा लाठी सँ ठकंठक अवश्य करैत रहू । नहि त' थोपड़ी बजबैत त' बाट पर जरूरे चलू । साप-कीड़ा ओहिना पड़ा जायत। मुदा सापो-कीड़ा आब गमि लेलक अछि । थोपड़ी सँ नहि पड़ाइये । मनुक्खक कथे कोन । एताबता झगड़ो-रगड़ाक गप्प खाली गप्पे रहय । खड़ त' अहाँ खड़खड़ा सकैत छी । ओहि सँ आगू बढ़बा मे कने धैर्य राखू । मतलब झगड़ो-रगड़ाक स्वाद मोने-मोन। वाह, खूब लड़ै जाइत छथि ! खूब लड़थु । हम त' बाँचल छी । हम त' तमशगीर छी । तमाशा देखब । हमरे भिड़ा देब एहन साहित्य सँ हम बाज अबैत छी बाबू।

किछु गोटे कहैत छथि जे पहिलुका रस सभसँ आब काज चल'बला नहि अछि। मैथिल लोकनि बदलि गेल छथि । जे पाठक हेताह से दुनिया देखने छथि । गाम छूटल छनि । स्वाद बदलल छनि । आब मेंथी-मंगरैल, पटुआ साग नहि खाइत छथि । रेडीमेड चलानी मसल्ला खाइत छथि । मेंथियो खाइत छथि त' काश्मीरी । तरकारियो खाइत छथि त' मिक्स्ड भेजीटेबुल । सोहारीक बदला तन्दूरी । मैगी आ चाउमिन । बटाटा बड़ा । उपमा-उत्तपम । पाव-भाजी । इटालियन सलाद, कोफ्ता । इंटर कान्टीनेन्टल डिशेज । हिनका लोकनिक जीह बदलि गेल छनि । तैं हिनका ओहने साहित्य चाही। ओहने कथा चाही । जाहि मे आर सभ किछु हो मुदा मिथिला नहि हो । बांगक गाछ, तनूफक फूलक कथे कोन तीरा-तग्गड़, अड़हुल धरि नहि हो । हुनका त' डेफोडिल, लिली, गोल्डमोहर, यूक्लिप्टस चाही । जाहि मे सुन्दरता त' हो मुदा सुगन्धि नहि हो। सुगन्धि सँ हिनका एलर्जी भ' गेल छनि । हिनका लेल कथा मे बजार सजा दिअनु

मुदा धोखो सँ कोनो विचारक प्रवेश नहि हुअय । जीवन ओहिना जंजाल भ' गेल छनि। विचार सुनितहिं भड़कि जाइत छथि जेना लाल कपड़ा देखिक' साँढ़ भड़कैए ।

किछु गोटे कहैत छथि जे अजुका पाठक नामक प्राणी लेल एहन साहित्यक निर्माण करू जाहिसँ हुनकर स्टेटस बढ़नि । दस गोटाके देखा सकथि जे देखू हम एहन चीज पढ़ै छी । एकदम इम्पोर्टेड माल । अपन सम्पूर्ण इतिहास सँ छुटकारा पाबि लिअ' । अपन संस्कृति के' यूज एण्ड थ्रो' बना लिअ' । अपन भूगोल के भूमण्डल मे बोरि लिअ'। सभटा आकार खतम क' दियौ । हवा-हवाइ भ' जाउ । हवा-हवाइ...।

एहि पाठक सभ सँ भेंटक बाद फेर मे पड़ि जायत कियो । ई हवा-हवाइ कोना भ' जायत । तखन रहि की जायत ? किछु बाँचलो रहि जायत की ? किछु बाँचल रहबाक की कोनो प्रयोजन नहि अछि ? ई त' आब अस्तित्वक प्रश्न भ' गेल । अस्मिता सँ लड़ाइ अस्तित्व पर आबि गेल । अस्तित्व रहत तखन ने अस्मिता । बाँचब तखन ने पहिचान-परिचिति । माटि रहत तखन ने मुरुत बनायब । तैं एहि वर्ग विशेषक हवा-हवाइ पाठकक मोह आब निर्ममतापूर्वक त्यागक चाही । सैह लगैए । जँ त्याग क' दैत छी त' एकटा वृहत्तर वर्ग सँ जुड़ि जेबाक सम्भावना बनैत अछि । ओहि वृहत्तरवर्ग सँ जे अस्तित्वक लड़ाइ लड़ि रहल अछि । ओकर अस्तित्वक लड़ाइ संग अपन अस्तित्वके एकाकार करबाक चेष्टा करी । एहि सँ लड़ाइ धरगर हेबाक सम्भावना बनि सकैत अछि । मुदा की ई एकाकार होयब सहज अछि ? अस्तित्व लेल संघर्षरत वर्ग के मैथिलीक पाठक बनाएब सहज अछि ? बूझैत छी जे एहि वर्ग केँ मैथिलीक पाठक बनौने बिना आब मैथिलीक अस्तित्व सेहो संकटग्रस्त अछि । तैं मैथिलीक अस्तित्व लेल सेहो एहि वर्ग सँ जुड़ब जरूरी । वृहत्तरवर्गक अस्तित्व संघर्ष आ मैथिलीक अस्तित्व संघर्ष एकमेत होयब जरूरी । ई होयत कोना ? मैथिली ओकरा अपन लागक चाही। ई लागक चाही जे मैथिली ओकर संघर्ष के बोल द' सकैत अछि । मैथिली मे ओ ताप ओ उष्मा आबक चाही । वृहत्तरवर्गक संवेदना सँ मैथिली साहित्यकेँ जुड़क चाही । की वर्चस्ववादी संस्कृति-साहित्य सँ से सम्भव अछि ? की लोक-संस्कृतिक महत्वपूर्ण अवदानके अनठौने से सम्भव होयत ? की लोकतान्त्रिक भेने बिना ओहि वर्ग सँ अपनाकेँ जोड़ि सकैत छी ? अर्थ शास्त्रक शब्दावली मे कही त' सकल घाटाक कारणे जमापूंजी खतम भ' रहल अछि । जमापूंजीक क्षरण भ' रहल अछि । या त' एहि संस्थाके बन्द क' देबाक चाही जाहिसँ घाटा आर नहि बढ़य अथवा एहिमे नवपूंजी जमा हेबाक चाही। नव-नव निवेश ताकल जेबाक चाही । जाहिसँ संस्थामे नव रक्तक संचार हो। नव लोकक संग जुड़ाव-लगाओ हो । लोक एकरा अपन घाटा-नफाक सौदा मानय।

जनैत छी जे किछु गोटे एहि घाटा-नफाक शब्दावली सँ भड़कि सकैत छथि। सांस्कृतिक क्षेत्रमे अनधिकार प्रवेश मानि अपन ठोर विजका सकैत छथि । मुदा एहन लोक ओहि वृहत्तरवर्गकं जोड़बाक बात सँ सेहो परहेज करैत छथि। घाटा के घाटा नहि मानैत छथि । जमा पूंजीक क्षरण पर सेहो प्रश्नचिन्ह लगा सकैत छथि । मैथिली ओकरा अपन लागय तकरा प्रयास पर टंटा ठाढ़ क' सकैत छथि । हुनका लोकनिक लेल मैथिलीक प्रश्न अस्तित्वक प्रश्न नहि अछि । अस्मिताक प्रश्न दोकानक साइनवोर्ड सन अछि । माटि सँ जुड़ल रहबाक भ्रम पसारैत एहन लोक वास्तव मे हवा-हवाइ छथि । हमरा अथवा हमर सहकर्मी-सहधर्मीकेँ हिनका लोकनि केँ चीन्हि लेबाक चाही । सामूहिक उत्तरदायित्वक यैह तकाजा अछि ।

सामूहिक दायित्व इहो अछि जे अपन कथा-कविता-उपन्यासक भाषा मे लोक-संस्कार केँ जगजियार करी । ओकरा सरल-सुबोध, पारदर्शी बनाबी । अलंकरणक नाम पर ओहिमे विशिष्ट वर्गक सौन्दर्य-बोध के हॉवी नहि हुअ' दी । वृहत्तरवर्गक सौन्दर्य-बोधसँ भाषाके नव संस्कार दी । वृहत्तरवर्गक संघर्ष चेतना सँ ओहि मे उष्मा आ ताप आनी। माटि-पानि सँ जुड़बाक अर्थ भुरभुरी माटि आ जमकल-गन्हायल पानि सँ जुड़ब नहि होइ छै । जिनका एहि भुरभुरी माटि सँ महादेव बनेबाक छनि । एहि जमकल पानिके गंगाजल मानि बोतलमे बन्द करबाक छनि । से करथु अपन काज। मुदा से हमर अहाँक सहकर्मी-सहधर्मी नहि छथि । ई बात हमरा सभके फरीछ भ' जेबाक चाही।

ई वृहत्तरवर्ग मिथिला समाज मे बसैत अछि । हमर माटि मिथिलेक माटि थिक। मुदा ई माटि आनोठामक माटि सँ जुड़ल अछि । हमर पानि मे आनो क्षेत्रक पानि आबि रहल अछि । हमर लोक आनोठाम रहि रहल छथि । ई सम्पूर्ण भारत कि सम्पूर्ण विश्व सँ हम जुड़ल छी । मिथिला समाज जुड़ल अछि । हम आब अपन फराक द्वीप बनाक' नहि रहि सकैत छी । आनठाम सँ बीया-बालि आनि सकैत छी । नव तकनीक आनि सकैत छी । नव आ उपयोगी विचार आनि सकैत छी । दृष्टि आनि सकैत छी । ई सभ बात उचित अछि । सार्थक अछि । मुदा आनल बिया-बालिकं पहिने मिथिलाक माटि मे छीटि क' देख' पड़त। एहिठामक माटि मे जनमैत अछि की नहि ? जनमैत अछि त' उपयोगी अछि की नहि ? पर्यावरण के संतुलित रखबा मे समर्थ अछि कि नहि ? लोकक विकास लेल उपयुक्त अछि कि नहि ? वृहत्तरवर्गक एहि मे हित अछि कि नहि ? सामाजिक यथार्थक परिप्रेक्ष्य मे मनुक्खक विकास एहिसँ सम्भव अछि की नहि ? शोषित-दलित वर्ग के ई सबल बनबैत अछि की नहि ? जीवन एहिसँ सार्थक ओ सुन्दर बनैत अछि की नहि ? मिथिला समाजक एहि सँ विकास होइत

अछि की नहि ? आखिर ई विकास थिक की ? नव द्वारा पुरानक स्थान ग्रहण करब, उदित भ' रहल के अस्त भ' रहलक जगह लेबहि के विकास कहल जाइत अछि। ईहो कहल जाइत अछि जे नव, पुरानके पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि, अपितु ओहिमे जे श्रेष्ठतम अछि ओकरा कायम रखैत अछि । वस्तुत: ओ श्रेष्ठतम के कायमे नहि रखैत अछि, ओकरा आत्मसात सेहो करैत अछि । ओकरा एक नव उच्चतर स्तर पर सेहो उठबैत अछि ।

कहि सकैत छी जे ई सभटा बात बिया-बालि अनबाक काल कोना बूझि जेबैक? तकनीक आ विचार आयात करैत काल कोना अनुमान क' सकब जे ई हमरा लेल उपयोगी अछि की नहि ? वृहत्तरवर्गक हित मे अछि की नहि ? एहि सँ समाजक विकास हैत की नहि ? एहि सभ प्रश्न पर एतबे टा कहि सकैत छी जे प्रथमत: अहाँ केवल आयात लेल उत्सुक छी । आनठामक चीज अहाँके चकबिदोर लगौने अछि । अपना के जनने बिना, अपन माटि के चिन्हने बिना अहाँ विकासक लौल क' रहल छी । अहाँ अपन इतिहास के नहि जानि रहल छी अथवा इतिहासक सम्बन्ध मे एकटा निरर्थक भ्रम पोसने छी । अहाँके अपन समाजक आंशिक ज्ञान अछि । अहाँ जँ बजारक चकचकी मे पड़ि गेल छी त' किछु नहि कहबाक अछि । मुदा जँ अहाँ अपन खगता जनैत छी आ अपन डाँड़क सम्बन्ध मे अहाँके कोनो भ्रम नहि अछि त' अहाँ अपना लेल उपयोगीए चीज बेसाहब । अपन घर के कबाड़खाना नहि बना लेब । अपन माटिक उर्वरता नष्ट नहि क' लेब । विकासक नाम पर विनाश दिस नहि बढ़ब ।

हमरा लोकनिकेँ एकटा आर सुविधा अछि । पछुआएल इलाकाक लोक होयबाक कारणे आर्थिक कारण सँ दुनिया मे पसरल छी । दुनिया के देखि रहल छी। सभठामक विकास आ ओकर परिणाम के आकलन क' सकैत छी । विकसित क्षेत्रक अन्तर्द्वन्द्व, ओकर दुष्परिणाम, दुर्गति, मानवीयताक ह्रास, समाजक ताना-बानाके छिन्न-भिन्न होइत, व्यक्तिवादिताक पैशाचिक लीला सभके देखि-परखि सकैत छी। मुदा एहि सभके देखबाक लेल मिथिला समाजक यथार्थ के, वृहत्तरवर्गक कष्ट-दुखके ध्यान मे राख' पड़त । उचित विकास लेल मानदण्ड निर्धारणकाल मिथिलाके विशेषत: आ भारत वा विश्व के सामान्यत: दृष्टि मे त' राखहि पड़त । त' सहजहिं हमरा लोकनि अपन मिथिला समाजक आर्थिक-सामाजिक आ सांस्कृतिक विकास लेल उपयुक्त प्रविधि-चिन्तन जोहि सकैत छी । कार्य-योजना बना सकैत छी । प्रारूप प्रस्तुत क' सकैत छी । ई सभ फूट-फूट नहि समन्वित दृष्टि सँ सम्भव अछि । मुदा एहि लेल अपना भीतर परिवर्त्तन सेहो आनहि पड़त । सभसँ पहिने त' सैह जरूरी अछि ।

ई सभटा बात कहबाक अर्थ ई नहि लगाओल जेबाक चाही जे एखन धरि सभ किछु ऋणात्मके अछि । कोनो क्षेत्र मे धनात्मक स्थिति त' भेटिए सकैत अछि । ठाम-ठीम प्रकाश, प्रयास आ विकास त' स्पष्ट अछिए । ई बात सांस्कृतिक क्षेत्रमे सेहो देखल जा सकैत अछि । तत्काल सन्दर्भ त' सांस्कृतिके अछि । आक्रमणो सांस्कृतिक क्षेत्र पर समधानि क' चलि रहल अछि । गदौस सेहो एही क्षेत्र मे भरल अछि ।

ओना कहि सकैत छी जे 'सन्धान'क एहि कथा केन्द्रित अंक मे बात के कत' सँ कत' ल' गेलहुँ । लेकिन सत्त पुछू त' कथे कहि रहल छलहुँ । कथे लेल बाजि रहल छलहुँ । स्वाभाविक रूप सँ बात चेतनाक धरातल पर चलब जरूरी अछि। किएक त' मामला सृजनक थिक । मुदा ई सभटा बात कोनो हमहींटा नहि कहि रहल छी। एहि सम्पूर्ण अंकमे विभिन्न विचारक, समालोचक, कथाकार कहि रहल छथि । हम त' खाली हुनके लोकनिक कहल बात के बूझू त' दोहरा रहल छी ।

एहि अंकमे मैथिली कथाक इतिहास आ विकासक किछु तथ्य रखबाक प्रयास कयल गेल अछि । हमरा एहि मे कोनो भ्रम नहि अछि जे सम्पूर्ण प्रयास मैथिली कथाक विस्तार के देखैत एखनो छुछुन्ने अछि । मुदा मैथिली कथा आइ जाहि विन्दु पर ठाढ़ अछि ओत' होइत आलोड़न-विलोड़नक किछु वानगी त' प्रस्तुत भेले अछि। भीतर मे चलैत वैचारिक द्वन्द्वक किछु विन्दु सभकेँ फरिछएबाक दिशा त' देखाइए द' सकैत अछि ।

मैथिली कथा मे अनेक परिवर्तन आयल अछि। परिवर्तन विभिन्न स्तर पर अछि। कथामे आयल परिवर्तन स्वभावत: कथाकार मे आयल परिवर्तनक सूचक थिक । कथा ओ कथाकार मे आयल परिवर्तन के समय ओ समाज मे आयल परिवर्तनक संग मैथिली कथाक विकास सँ सेहो जोड़ि क' देखल जेबाक चाही । ई काज मुदा मैथिली आलोचना फरिछा क' नहि क' सकल अछि। विकास देखबाक लेल नव के देख' पड़त ताहिमे ककरो सन्देह नहि हेतनि । विकासक सन्दर्भ मे जेना पूर्व मे कहने छलहुँ जे नव, पुरानके पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि । अपितु ओहि मे जे श्रेष्ठ अछि तकरा कायम रखैत अछि। आत्मसात करैत ओकरा नव, उच्चतर स्तर पर उठबैत अछि । एहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक विकास पर प्रकाश देबामे मैथिलीक आलोचक लोकनि मात्र परिश्रमक डरें समर्थ नहि भ' सकलाह अछि । जखन कि सन्दर्भ लेल डा. मेघन प्रसादक 'कथा-कोश' आइ मैथिलीके उपलब्ध छैक । दृष्टि सम्पन्न आलोचकक हमरा अभाव अछि से त' नहि कहल जा सकैए । मुदा हुनक संख्या अवश्य कम अछि । संगहि नव प्रतिभाक एहि क्षेत्रमे नहि आयब चिन्तनीय बनि गेल अछि । किछु हमर स्थापित कथाकारों केँ

एहि बातक भ्रम भ' गेल छनि जे नव कथाकार हुनका सिंहासन सँ उतार' चाहैत छथि। हुनका एहि सोचमे परिवर्त्तन आनक चाहियनि । सभ एक दिन पुरान होइत अछि । बेटो एक दिन बाप होइत अछि । फेर ओकरो बेटा-बेटी होइत छैक । बाप जँ बेटा संग दियादी करय त' तकरा की कहल जेतैक ? तैं हमर पुरान, स्थापित कथाकार केँ चाही जे ओ नव-नव कथाकार मे अपन विकास देखथि । आलोचक लोकनि ताकथि जे ओ श्रेष्ठ के अक्षुण्ण रखलक अछि की नहि । श्रेष्ठ के आत्मसात करैत ओकरा नव, उच्चतर स्तर पर उठौलक अछि की नहि ? यदि नहि उठौलक अछि त' तकर की कारण अछि ? की ओ श्रेष्ठ के नहि बूझि रहल अछि ? अथवा ओकरा आत्मसात नहि क' पाबि रहल अछि । आलोचक लोकनि मैथिली कथाक इतिहास बहुत कहलनि। आब विकासक गप्प करथु । विकासक बाट फरीछ करथु । स्वभावत: एहि लेल हुनका पुरान मे जे श्रेष्ठ अछि तकरा बिना कोनो हिचकिचाहटि के स्पष्ट कह' पड़तनि। ठाम-ठीम कहबो केलनि अछि । ओना ई काज केवल आलोचकेक नहि अछि । कथाकारोक अछि । जे कथाकार अपन परम्पराक सार्थकता के नहि चीन्हि सकैत छथि । चीन्हि क' ओकरा आत्मसात नहि क' सकैत छथि । मैथिली कथा के नव, उच्चतर स्तर पर नहि उठा सकैत छथि अथवा एहि दिशा मे कोनो प्रयास नहि कर' चाहैत छथि ओ मैथिली कथाक विकास मे अपन योगदान नहि द' रहल छथि । एहिठाम ई बात कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली कथाक विकास मे अग्रज कथाकारक योगदानकेँ बिसरल नहि जा सकैए । मैथिली कथाक विकासक पथ पर ओ लोकनि माइलस्टोन छथि । अद्यतन कथाक स्वर, भंगिमा, बोध, भाषा-शिल्प एहन कथाकारक ऋण सँ मुक्त नहि भ' सकैत अछि । सन्धानक एहि अंक मे आउ, आगू बढ़ैत मैथिली कथा-यात्राके देखी ।



वर्ष 1999क साहित्य अकादमी पुरस्कारक लेल साकेतानन्द केँ सन्धानक बधाइ । हुनकर कथा संग्रह 'गणनायक' के एहि पुरस्कार सँ सम्मानित कएल गेल अछि । संगहि विभारानीकेँ हुनक सन्धान मे प्रकाशित कथा 'रहथु साक्षी छठ घाट' केँ प्रसिद्ध 'कथा' पुरस्कार क लेल सेहो बधाइ । ओहि कथाक अंग्रेजी अनुवाद दिल्लीक महत्त्वपूर्ण संस्था 'कथा' द्वारा अन्य भाषाक विभिन्न कथाकारक कथाक संग प्रकाशित कएल गेल अछि । विभारानीक कथाक अनुवाद लेल श्री विद्यानन्द झा केँ तथा मैथिली मे प्रकाशन लेल 'सन्धान' के सेहो पुरस्कृत कएल गेल अछि । विद्यानन्द जी केँ बधाइ ! साकेतानन्द, विभारानी ओ विद्यानन्द झा मैथिलीक पाठक लेल सुपरिचित छथि।

अस्मिताक बात

अस्मिता संकटक बात एखन रहरहाँ कहल जा रहल अछि। खासक' मैथिल अस्मिताक सन्दर्भ मे। ओना अस्मिताक संकट एहीठाम टा उपस्थित नहि भेल अछि। आनो क्षेत्र, प्रान्त आ देशमे उठि रहल अछि। उठाओल जा रहल अछि। ई राजनीतिक प्रश्न बनि गेल अछि। सांस्कृतिक प्रश्नसँ बेशी। आब एहि आधार पर राज्य आ प्रान्त बँटि रहल अछि। आर्थिक विकास के सांस्कृतिक विकासक संग जोड़ि क' देखल जा रहल अछि। ध्यान देला पर ज्ञात होइत अछि जे अस्मिताक सम्बन्ध क्षेत्र विशेषसँ जुड़ल अछि। ओहि क्षेत्र विशेषक अस्मिता ओहिठामक मूल निवासी, आदिवासीक जीवन-शैली आ जीवनक प्रति ओकर दृष्टिकोण पर आधारित अछि। मुदा ई क्षेत्रीय अस्मिताक प्रति जागरण सए-दू-सए वर्षसँ लगातार चलैत रहल अछि। कतोक ठाम अहूसँ बेसी दिन सँ। एहि आधार पर ओहि क्षेत्रक सभ जाति-वर्ग आ धर्मक लोक एकजुट होइत रहल अछि। मुदा मैथिल अस्मिताक संग से बात नहि अछि। तैं एकैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ बुद्धिजीवी किछु किंकर्तव्यविमूढ़ सन भ' गेल छथि।

अस्मिता संकटक एक दोसर सन्दर्भ सेहो अछि। ई सन्दर्भ अछि भूमण्डलीकरणक। भूमण्डलीकरणक बिहाड़िसँ सेहो परिचिति उधियाइत सन बुझाइये। विश्वबाजार आ विश्वग्रामक बढ़ैत थाप परिचितिक केबाड़ पर स्पष्टतया सुनल जा सकैये। लगैये जेना केबाड़ चरमराके टूटि जायत। व्यक्ति, घर, परिवार, समाज सभ के लगातार खण्डित करबाक साजिश चलैत रहलए। सभमे सहस्त्रो छेद भ' चुकल अछि। वास्तवमे ई साजिश मनुक्खकेँ ओकर सम्पूर्ण परिवेशसँ काटि क' ओकरा मात्र हाड़-मांसक यन्त्र बनब' चाहैत अछि। मनुक्खके भविष्यमे सुखी बनेबाक नाम पर आइ ओकर सौन्दर्य-प्रेम के कोनो ने कोनो बहाने थकुचि देब' चाहैत अछि। किएक त' ई स्थिति भूमण्डलीकरणक अनुकूल होयत। मनुक्ख बजारक समक्ष आत्मसमर्पण क' देत।

भूमण्डलीकरणक आक्टोपससँ पूर्व उपनिवेशवादक डायनासोर सेहो अस्मिताक संकट उपस्थित केने छल। वास्तवमे ई अस्मिताक संकट ओकरे देन थिक। उपनिवेशवाद मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिताकेँ विस्मृतिक अन्धकारमे ढकेलि देबाक पूरा प्रयत्न

केलक। बहुत अंशमे ओ सफलो भ' गेल। उपनिवेशवाद के एहिमे सहयोग केलक ओकर देशी एजेंट—सामन्तवाद। ई दूनू मीलि लोकक पराभव के आर बढ़ौलक। दयनीय आर्थिक स्थिति आ अनवरत बढ़ैत शोषणसँ ध्यान हटेबाक लेल 'पूर्व जन्मक पापक भोग' के उपस्थित केलक। ई अकारण नहि अछि जे जाहि मैथिली साहित्यमे पाँच सए वर्ष धरि 'राम' छिटफुट एकाधठाम छोड़ि कत्तहु नहि दृष्टिगोचर होइत छथि से महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक आदेशसँ कवीश्वर चन्दा झाक 'मिथिला भाषा रामायण'मे अवतरित भेला। ई वैह महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह छथि जे मैथिलीके कान पकड़ि अपन राज-काजसँ हटा देने छला। जिनकर शिक्षा-दीक्षा 1860 ई.मे कोरट लागि गेलाक कारणे अंग्रेज प्रभुक द्वारा सम्पन्न भेल छल।

मिथिलाक आधुनिक इतिहास लिखल जेबाक खगता सेहो एखन नीक जकाँ अनुभव कयल जा रहल अछि। अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक मिथिलाक इतिहास दृष्टि सम्पन्नताक संग जँ लिखल जाय त' स्पष्ट भ' सकत जे गड़बड़ी कत' भेल। गड़बड़ी एहि पछिला बीसम शताब्दीमे सेहो भेल अछि। कने बेसिए भेल अछि। मुदा से गड़बड़ी अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक नींव पर ठाढ़ छल। ओकर सभ दुर्गुण ओ कमजोरी के लदने। ई बात आब क्रमशः निर्विवाद भेल जा रहल अछि जे जाहिकालमे आनठाम (अपन सटले बंगाल मे) अंग्रेजीक प्रभावें पुनर्जागरण भ' रहल छल, बंगाली के अपन अस्मितासँ जोडि क' देखब प्रारम्भ भ' गेल छल, अपन-अपन मातृभाषामे शिक्षाक व्यवस्था भ' रहल छल, आधुनिक बोधक रूपमे समानताक बात कयल जा रहल छल, हमरा सभ आर बेसी कूपमण्डूक आ रूढ़िवादी बनौल जा रहल छलहुँ। परम्परानिष्ठ बनबाक अहंकारमे संस्कृतके आर चिहुटि क' पकड़ि रहल छलहुँ। एतबे नहि, राष्ट्रीयताक नाम पर कृत्रिम हिन्दुस्तानी भाषा सेहो हमरा सभ पर लादल जा रहल छल। ई शिक्षेक प्रति वितृष्णा उत्पन्न क' रहल छल। जखन सभठाम मातृभाषामे शिक्षाक अनिवार्यता के बूझल जा रहल छल, व्यक्तित्व निर्माणमे मातृभाषाक महत्व अकानल जा रहल रहए, मातृभाषाक माध्यमे अपन संस्कृति, अपन अस्मिता लोक के फरीछ भ' रहल छल, हमरा सभकेँ आत्म-विस्मृति के गर्त्तमे धकेलल जा रहल रहय। एक सए वर्ष पाछू ठेलल जा रहल छल। ओहीकालमे व्यक्तित्व पर अन्हरजाली लगाओल जा रहल छल। जे क्रमशः व्यक्तित्वहीनतामे पहुँचि गेल। ई व्यक्तित्वहीनते सामूहिक अस्मिता बोधसँ विछिन्न केलक।

मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिता कथी ल' के छल? एहि विषय पर अध्ययन होयब जरूरी अछि। कर्म पर आधारित जीवन कोना केवल शास्त्र केन्द्रित होइत गेल सेहो विचारब जरूरी अछि। संस्कृतिक समग्रता क्रमशः कोना कृतिक महत्वमे छिन्न-भिन्न भ' गेल? अन्ततः से कृति केन्द्रितसँ कृतिकार केन्द्रित कोना भेल? भाषा-टीका कयनिहारक नाम मोन राखल गेल आ समस्त विश्वमे एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखनिहार मिथिलाक कलात्मक औद्योगिक परम्पराके बिसरि देल गेल। एहन विस्मृति कियैक आ कोना भेल?

की हमरालोकनिक अस्मिता क्रियाशील जीवनसँ जुड़ल नहि छल? हाथ आ दिमागक समन्वयक परम्परा मैथिली समाजमे नहि रहल अछि? कृषि कर्म आ हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा जीविकाक साधन छल। समाजबन्ध एहन मजबूत छल जे कतेको आततायी आएल-गेल। मैथिली समाजक किछु नहि बिगाड़ि सकल। अपन विभिन्न नदीक माध्यमे व्यापार-व्यवसाय चलैत रहल। विशिष्ट आर्थिक सोंगरेक आधार पर न्याय आ मीमांसा, आध्यात्मिक चिन्तनक पताका फहराइत रहल। महाकवि विद्यापतिक गीत, सलहेश, लोरिक, दीनाभद्री, नैकाबनिजाराक गाथा गबैत, अपन तमाम लोकगीतमे जीवनक प्रति, जीवनमे शृंगारक प्रति, प्रेमक प्रति, गुणक प्रति आदर-उल्लास व्यक्त करैत मैथिली समाज अपन संघर्षशील जीवनी शक्तिके बचाक' रखलक। कतेक रास वस्तुके ग्रहण केलक कतेक वस्तुक त्याग करैत रहल। मैथिली समाजमे त' कृष्ण-राधा, शिव-पार्वती, दुर्गा-काली-तारा सभ सर-सम्बन्धिक जकाँ भाए-बहीन, माए जकाँ रहल छथि। सीताके कहियो मैथिली समाज देवी नहि मानलक। अपन गामक सुआसीन मानैत रहल। रामके जमाय बुझैत रहल। शिव-पार्वती एकदम पारिवारिक-सामाजिक बनल रहला। जीवनमे प्रेम आ शृंगारक अभिव्यक्ति लेल कृष्ण आ राधा मात्र एक माध्यम रहथि। ई सभ एहि कारणे छल जे मैथिली समाज सार्थक श्रम पर आधारित जीवन के अंगेजने छल। मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भ होयबासँ पूर्वहिं सभ किछु टूटि-फूटि गेलैक। अपन परिचिति पर मैथिली समाज भ्रम आ फूसिक ओहार लगा लेलक। ई एहि दुआरे भेल जे विवेक आ उदारता पर आधारित जीवन दर्शनमे अविवेक आ क्षुद्रताक प्रवेश भ' गेल। मैथिली समाजक (खासक' के मिथिलाक संभ्रान्तवर्ग मे) व्यक्तित्वमे क्षुद्रता आ संकुचन अपन स्थान बनबैत चल गेल। ई सभ भोगवादी दृष्टिसँ उपजल छल जे समाजक मुँहपुरुषलोकनिक राजसत्तासँ जुड़बाक कारणे भेल। धनक प्रति बढ़ैत लिप्साक कारणे भेल। सामुदायिक, सामूहिक जीवन टुटबाक कारणे भेल। क्रमशः मुँहपुरुष विवेकान्ध होइत गेला। सुविधा आ भोगवाद जे जमीन्दारी आ सामंती जीवनक कारणे उत्पन्न भेल, समाज के बाँटिक' राखि देलक। जमीनक स्थायी बन्दोवस्ती एकर जड़िमे छल जे समाज के वर्गमे विभाजित क' देलक। जमीन्दार, जेठ रैयत, रैयत, किसान-मजूरमे बँटल समाजमे कमजोर वर्ग पर पराभवक पहाड़ टूटि पड़ल। धार्मिक आ आर्थिक शोषणक चक्र चलैत रहल। धनीक आर धनीक आ गरीब आर गरीब होइत गेल। जमीन से अन्ततः खण्ड-खण्डमे बँटि गेल। अनुत्पादक होइत गेल। हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा नष्ट क' देल गेल। असमानता आ विषमता बढ़ैत गेल। स्वतंत्रताक बादो एहि सभमे कोनो कमी नहि आयल। कोनो परिवर्तन नहि भेल। मैथिली समाजमे वैमनस्य आर बढ़िते गेल अछि। एहीमे मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिता कतहु हेरा-भोतिया गेल।

एहि परिप्रेक्ष्यमे मिथिला आ मैथिलीक बात बहुत विलम्बसँ आयल। अयबो कयल त' विकलांग भ' क' आयल। सामन्ती जीवनसँ जुड़ल जातिक माध्यमसँ आयल।

जकरा समाजमे बाबू-भैया कहल जाइत छल। जकरा प्रति समाजमे कोनो आदर-भाव नहि रहि गेल छल। जकरा लोक अपन पराभव लेल उत्तरदायी मानैत छल। जिनकर जीवनमे विलासिता आ सुविधा-परस्ती, व्यक्तित्वहीनता जड़ि जमा चुकल छल तिनकर मुँहसँ मिथिला-मैथिलीक गप्प सामान्य लोकमे कोनो सुगबुगी नहि अनलक। ई फराक बात अछि जे मिथिला-मैथिलीक आन्दोलनमे किछु विवेकशील आ उदार लोक सभ सेहो छला। जिनका यथार्थक सम्यक ज्ञान छलनि। मुदा बहुलांशमे एहने लोक छला जे मिथिला-मैथिलीक उपयोग अपन हितक लेल करय चाहैत छला। राजा, जमीन्दार के प्रसन्न रखबाक लेल करैत छला। हुनकालोकनिक अविवेक आ क्षुद्रतासँ मिथिला-मैथिलीक सार्थक आन्दोलन मिथिलाक सम्पूर्ण समाज के जोड़ि नहि सकल। ओकरा संग सामान्य लोक अपन तादात्म्य स्थापित नहि क' सकल। सामान्य लोकक अस्मितासँ नहि जुड़ि सकबाक यथार्थ मिथिला-मैथिली आन्दोलनक सभसँ त्रासद यथार्थ थिक। मैथिली भाषिक आन्दोलनक स्वर जखन विद्यापति पर्वक माध्यमसँ अभिव्यक्त होयब प्रारम्भ भेल आ संस्थागत रूप पकड़लक त' यैह संकुचित, अविवेकी, क्षुद्र लोकनिक कारणे ओ फेर भोतिया गेल। एक जाति विशेषक संग ओकर भाग्य-दुर्भाग्य जुड़ि गेल। तैं आइ मिथिला-मैथिलीक गप्प खाली ब्राह्मणक गप्प बुझाइत अछि।

भूमण्डलीकरणक आक्टोपससँ युद्ध लेल बुद्धिजीवीके विस्मृतिके अन्धकारसँ बाहर निकल' पड़त। मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिताक तत्व सभके ताकि—हेरि के निकाल' पड़त। आवश्यकतानुसार ओकरा झाड़ि-पोछि के चमकाब' पड़त। जाहिसँ मैथिली समाजक संघर्षक शक्ति आर मजगूत हुअय। समाजक भीतर सुन्दर जीवनक यथार्थ उतरि जाय। मैथिली समाजक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक परम्परा पैघ आ उदार रहल अछि। एहिमे मैथिली समाजक सभ जाति-धर्म-वर्गक योगदान रहल अछि। एहिमे श्रमजीवीलोकनिक पसीनाक सुगन्धि मिलल अछि। जे नित्य सभ विकार आ विकृतिके धो देबाक क्षमता रखैत अछि। क्रियाशील जीवनक यैह सौन्दर्य-बोध आ मनुक्खक शुद्ध जीजीविषा भूमण्डलीकारणक मुखौटा धारण कयने पुनः चल अबैत उपनिवेशवादीक कुत्सित षड्यन्त्रसँ संघर्ष क' सकत। ओकरा पछाड़ि सकत। एहि काज लेल हम पुनः मैथिली समाजक सभ दृष्टिसम्पन्न, उदार आ इमानदार बुद्धिजीवी, इतिहासज्ञक, अर्थशास्त्री, लेखक-रचनाकारक, समाजशास्त्री-मानववैज्ञानिकक आह्वान करैत छी।

सन्धान-2, दिसम्बर, 98

आलोचनापर सोचैत

मैथिली आलोचना विधापर एहिसँ पूर्व 1986 ई. मे चेतना समिति, पटना द्वारा विचार-गोष्ठी आयोजित भेल रहय। वर्ष 1987 मे ओ 'साहित्यिक समालोचना : दशा-दिशा' शीर्षकसँ पोथीक रूपमे प्रकाशित भेल। एकर सम्पादक रहथि डॉ. बासुकीनाथ झा। दोसर बेर चेतना समिति द्वारा वर्ष 2018मे 'मैथिली आलोचना' पर विचार-गोष्ठी आयोजित भेल अछि विद्यापति पर्वक अवसर पर। ई पोथी ओही गोष्ठी लेल निर्धारित विषय सभपर उपलब्ध लिखित आलेख सभक संग्रह थिक।

मैथिली आलोचनाक दुर्बल रहबा पर बहुत दिन सँ गप होइत रहल अछि। आइयो भ' रहल अछि। आइ-काल्हि बेसी हुअ' लागल अछि। वर्ष 1986क विचार गोष्ठीमे कथाकार आ समीक्षक राज मोहन झा 'मैथिली आलोचनाक दशा ओ दिशा' नामक आलेखमे लिखने छथि जे तीस वर्ष पहिनहुँ आचार्य रमानाथ झाकेँ एहने चिन्ता रहनि। रमानाथ बाबू लिखने छथि जे 'हमारा लोकनिक मिथिला भाषाक साहित्यमे समालोचनाक बड़ अभाव अछि।' राज मोहन झा एहि लेल उत्तरदायी तत्व सभ पर विचार केने छथि। अन्ततः ओ कहैत छथि जे, 'एखनुका जे दशा अछि, से जेना आइ सँ बीस-तीस वर्ष पूर्वहु छल, तहिना प्रायः बीस-तीस वर्ष बादो रहत। एखनुका स्थितिकेँ देखैत से कोनो बहुत आश्चर्यक विषय नहि होयत। तेँ अभाव पर गप्प करबासँ आ अपन दशा पर 'आबहु सब मिलि रोवहु भारत भाई'क लीलासँ की होब'बला अछि?' मैथिली आलोचनाक कमजोर स्थिति पर विचार करैत आ ओकर कारण सभक खोज करैत डा. बासुकी नाथ झा ओही पोथीक सम्पादकीयमे लिखलनि अछि जे, 'मैथिली समालोचनाक स्थिति कमजोर रहबाक कारण अनेक रहल अछि। समालोचना तँ वास्तवमे सर्जनात्मक साहित्यक होइछ। प्रकाशन एवं वितरण सुविधाक अभावमे सर्जनात्मक साहित्यक प्रणयन सेहो समुचित मात्रा मे नहि होइत अछि। दोसर बात ई जे अधिकांश रचनाकार केवल प्रशंसे पाबए चाहैत छथि, अभाव किंवा त्रुटिक संकेतो बर्दाश्त करबाक स्थितिमे नहि रहैत छथि तखन निष्पक्ष समालोचना लिखनिहार मात्र शत्रु बनि कें रहथु सैह ने। तेँ अधिकांश कृति एकांगी अथवा पक्षपातपूर्ण होइत अछि। एक दोसर चित्र इहो अछि जे सर्जनात्मक रचनाकार मात्र एकाध सामान्य रचना कए समालोचक सँ अपेक्षा करैत छथि जे इतिहासमे हुनक

रचनाकेँ शीर्षस्थ स्थान देथि। यदि से नहि कएलन्हि तँ नीक समालोचक नहि भेलाह। तात्पर्य जे समालोचक हेतु अपेक्षित निष्पक्षताक वातावरण तखनहि सम्भव अछि जखन कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा सम्पन्न रचनाकारमे संयम, धैर्य ओ सामंजस्य राखल जायत।'

आलोचनाक दुर्बल वा कमजोर रहबाक जे बात मैथिलीमे लगातार कतेको वर्षसँ भ' रहल अछि तकरा जँ सत्य मानि ली त' विचार ई कर' पड़त कि एहि स्थिति सँ उबरबाक रस्ता की अछि? कोना हमरालोकनिक साहित्यमे आलोचना मजबूत हैत? एखन धरि ओ कोन वैचारिक वा स्थितिपरक विन्दु सभ अछि जे एहि लेल उत्तरदायी रहल अछि आ ओकर समाधान लेल की सभ कार्य हेबाक चाही। एहि सभ बिन्दु के चिन्हित क', देखि-परेखि क' ओकर समाधान लेल व्यक्तिगत वा संस्थागत प्रयास करब आइ समयक मांग भ' गेल अछि। दोसर, हमर ई व्यक्तिगत मान्यता अछि आ ई मान्यता अन्य कतेको साहित्यकारक छनि जे दुर्बलताक जतेक हल्ला अछि, वस्तुतः स्थिति ओतेक अधलाह नहि अछि। आलोचनाक जतेक पोथी उपलब्ध अछि से विभिन्न कारणसँ लोकक नजरि पर नहि अछि, ओकरा पढ़लो-गुनल नहि गेल अछि। ओहि पर चर्चा आ विमर्श बहुत कम भेल अछि। ई बात हम रहरहाँ देखैत छी जे मैथिलीक सर्जनात्मक वा आलोचनात्मक साहित्यकेँ गम्भीरतापूर्वक बिना पढ़ने ओहि पर बहुत सतही ढंगसँ टिप्पणी कयल जाइत अछि। ई बात अवश्य अछि जे आलोचनात्मक सभ लेखन गुणवत्तापूर्ण नहि अछि मुदा से तहिना अछि जेना सर्जनात्मक सभ लेखन गुणवत्तापूर्ण नहि अछि। दोसर बात, जेना एही पोथीमे शिवशंकर श्रीनिवास कहलनि अछि आ से हमहूँ मानैत छी जे बहुतो सार्थक ओ गुणवत्तापूर्ण आलोचनात्मक लेख सभ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि। ओ संकलित भ' पोथीक रूपमे नहि आयल अछि। पत्रिका सभ सेहो क्रमशः अनुपलब्ध भेल जा रहल अछि। ओहि लेख सभक चयन क' कतेको पोथी सम्पादित क' प्रकाशित भ' संकैत अछि। असल मे जरूरत छैक एहि सभ विषय-बिन्दु पर सोचनिहारक आ सोच-विचार संग कार्य करैबलाक। ई कार्य मुदा दू प्रकारे भ' सकैत अछि- पहिल, जे कियो वर्त्तमानमे अँखिगर आलोचक छथि से कोनो एक विधा पर, जाहि पर हुनक विशेषज्ञता होइन, रुचि होइन, ओहि पर कम सँ कम एक आलोचनात्मक पोथी लिखथु अथवा ओहि विधा विशेष पर अपन दृष्टिक अनुकूल विषय सभ निर्धारित क' विभिन्न आलोचक सँ ओहि पर आलोचनात्मक लेख लिखाक' पोथी सम्पादित-प्रकाशित करथु। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल आलोचनात्मक लेख सभके जे विभिन्न सर्जनात्मक विधा-जेना, कविता, गीत, कथा, उपन्यास,

यात्रा संस्मरण, आदि सँ सम्बंधित अछि कैं विधा विशेषक आधार पर चयनित, सम्पादित क' प्रकाशित कराबथु। वर्त्तमानमे विभिन्न कारणसँ आलोचनात्मक पोथीक बिक्रीमे गति आयल अछि। प्रतियोगिता परीक्षा लेल, शोध आदि लेल एहेन पोथी ताकल जा रहल अछि।

हम विभिन्न संस्था द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठी आ ओहिमे पढ़ल आलेख सभकेँ सेहो पोथीक रूपमे प्रकाशनकेँ जरूरी मानैत छी। एखन धरि चेतना समिति वा अन्य कोनो संस्था द्वारा जे एहि तरहक पोथी प्रकाशित भेल अछि से निश्चित रूपसँ आलोचनाक विकासमे सहायक भेल अछि। तखन ईहो अवश्य जे एहन पोथी सभमे संग्रहीत बहुतो लेखमे विषयक प्रति न्याय नहि भेल अछि। से हमरा जनैत सभ भाषा-साहित्यमे कमोबेस होइत अछि।

त' हमरा लोकनिकेँ जे गम्भीरतापूर्वक मैथिलीक आलोचना साहित्यकेँ अपेक्षित रूपसँ विकसित देख' चाहैत छी से प्रथमतः एकर वर्त्तमान स्थिति पर कननाइ, क्रोध केनाइ, व्यंग केनाइ, एकर उपेक्षा केनाइ छोड़ि प्रथमतः उपलब्ध साहित्यक अध्ययन करी। लेखन करी। हमरा कहबाक ई मोन करैत अछि जे वर्त्तमान स्थिति सँ उबारबाक लेल कियो बाहरसँ नहि आओत। करबाक हमरे सभकेँ हैत। आइ जे हमर सभक साहित्यक मान्य आलोचक सभ छथि सेहो कहियो दुस्थिति पर चिन्तन करैत रहथि आ संगहि शोध, समीक्षा, आलोचनाक पोथी-लेख आदि लिखितो रहथि। हुनके सभक योगदान अछि जे आइ हम सभ एतबो धरि आगू बढ़लहुँ अछि।

आलोचनाक स्वरूप, भाषा, प्रयोजन, प्रविधि, दृष्टि सभ पर पहिनहुँ विचार होइत रहल अछि, अहू पोथीक आलेख सभमे भेल अछि। आगूओ होइत रहत। आब ई सर्वमान्य भेल जा रहल अछि जे आलोचना सेहो एक रचना थिक। आलोचनाक सेहो आलोचना हेबाक चाही, केवल रचनाक आलोचनासँ आलोचनाक विकास नहि होयत। आब रचनाकारलोकनिमे सेहो अपन रचनाक आलोचनामे केवल प्रशंसा सुनबाक लौल कम भ' रहल छनि। सगर राति दीप जरयक संग आनो आयोजन, लेखन, विचार-विमर्शक एहिमे योगदान अछि। जे रचनाकार आत्ममुग्ध नहि छथि आ से हुनका रहबाको नहि चाही जँ ओ अपन रचनामे उतरोत्तर विकास चाहैत छथि तँ अपनामे सहिष्णुता, ग्रहणशीलता बनाक' राख' पड़तनि। सभसँ पहिने तँ अपन आलोचनात्मक विवेककेँ बना क' राखब जरूरी अछि।

एहि पोथीमे विचार-गोष्ठीमे निर्धारित सभ विषयपर लेख उपलब्ध नहि भ' सकल। सैद्धान्तिक, विधागत ओ कतेको आलोचक पर आलेख प्राप्त नहि भेल। किछु आलोचक तँ गोष्ठीमे भागे नहि लेलनि जे भाग लेलनि, से गोष्ठीमे

मौखिक वक्तव्यक बाद आलेख उपलब्ध नहि करा सकला। हमरा बहुत दुख अछि जे बहुतो बेर अनुरोधक बावजूद ई लोकनि आलेख नहि पठौलनि। ई सभ मैथिली साहित्यक जानल-मानल साहित्यकार सभ छथि। किछु ने किछु लिखते रहैत छथि वा करिते रहैत छथि मुदा हुनका लोकनिक आलेख नहि भेटबाक कारण योजनाक हिसाबसँ एहि पोथीक स्वरूपमे कमी रहि गेल, से हम अनुभव करैत छी। मुदा जे आलोचक सभ आलेख उपलब्ध करौलनि जाहिमे किछु एहनो छथि जे संगोष्ठीमे भाग त' नहि ल' सकला मुदा कृपापूर्वक अपन आलेख बादमे पठौलनि तकरा सभकेँ पढ़ि क' हम सभसँ पहिने अपने लाभान्वित भेल छी। आनन्दित भेल छी। नव-नव बात-विचार आ तथ्य सभ सँ अवगत भेल छी। ई विषय सभ नव आ कठिन छल, एकर परम्परा सेहो फड़िछायल नहि रहने विषय-विमर्शक स्वरूप निर्धारणमे हमरा स्वयं कठिनता रहय। मुदा भीमनाथ झा ओ तारानन्द वियोगीक सहयोगसँ हम निर्धारित विषय पर आलेख सभक योजना बना सकलहुँ। हमर अनुरोध पर जे आलोचक लोकनि आलेख गोष्ठी दिन देलनि वा बादोमे उपलब्ध करौलनि, हुनका सभक प्रति हम आभार व्यक्त करैत छी। एहि गोष्ठीमे नरेश मोहन झा सेहो सहभागी रहथि, हुनक देहावसान हमरा सभकेँ मर्माहत केलक। हुनका प्रति श्रद्धा निवेदित।

एहि पोथीक आलेख सभमे आलोचनाक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक पक्ष सभ पर एक विमर्श आयल अछि। अनेक प्रश्न सभ उठाओल गेल अछि आ खुशीक गप जे ओहि प्रश्न सभक उत्तरो थोड़-बहुत रूपमे एहि पोथीमे आयल अछि। आलोचनाक आलोचनाक विभिन्न रूप, दृष्टि ओ भाषा एहि पोथीक विभिन्न आलेखसभ मे देखबामे अबैत अछि। एहि आलेख सभके पढ़ैत हम अनुभव करैत छी जे आलोचनामे लोकतंत्र कतेक जरूरी होइत छैक। से तहिना जेना लोकतंत्रमे आलोचना जरूरी होइत छैक। मुदा समाज हो वा साहित्य दुनू मे लोकतंत्र आ आलोचनाक विकास होयब कोनो एक दिनक बात नहि होइत छैक, कैक पीढ़ी लागि जाइत छैक। तेँ आन भाषा आ साहित्यक तुलनामे मैथिलीक आलोचना-साहित्यकेँ पछुआयल देखि क' कानब-बाजब छोड़ि क' पहिने हमरा लोकनि अपन समाजमे साहित्य आ साहित्यमे समाजक स्थिति पर सम्यक सोच-विचार करी। ई देखी जे समाज-साहित्य कतेक लोकतांत्रिक भेल अछि। एहि सँ होयत ई जे यथार्थसँ त' परिचित होयबे करब, निराशामे नहि जीबि क' किछु करबाक उत्साह बनल रहत। आलोचनाक विकास साहित्यक विकास लेल जरूरी छैक त' से समाज आ संस्कृतिक विकाससँ सेहो जुड़ल छैक।

सन्धान - २

सम्पादकीय

अस्मिताक बात

अस्मिता संकट के बात एखन रहरहां कएल जा रहल अछि। खासक' के मैथिल अस्मिताक सन्दर्भ मे । ओना अस्मिताक संकट एहीठाम टा उपस्थित नहि भेल अछि। आनो क्षेत्र, प्रान्त आ देश मे उठि रहल अछि । उठाओल जा रहल अछि । ई राजनीतिक प्रश्न बनि गेल अछि । सांस्कृतिक प्रश्न सँ बेशी । आब एहि आधार पर राज्य आ प्रान्त बटि रहल अछि । आर्थिक विकास के सांस्कृतिक विकासक संग जोड़ि क' देखल जा रहल अछि। ध्यान देला पर ज्ञात होइत अछि जे अस्मिताक सम्बन्ध क्षेत्र विशेष सँ जोड़ल अछि । ओहि क्षेत्र विशेषक अस्मिता ओहिठामक मूल निवासी, आदिवासीक जीवन शैली आ जीवनक प्रति ओकर दृष्टिकोण पर आधारित अछि । मुदा ई क्षेत्रीय अस्मिताक प्रति जागरण सए-दू सए वर्ष सँ लगातार चलैत रहल अछि। कतोक ठाम अहूँ सँ वेशी दिन सँ । एहि आधार पर ओहि क्षेत्रक सभ जाति-वर्ग आ धर्मक लोक एकजुट होइत रहल अछि। मुदा मैथिल अस्मिताक संग से बात नहि अछि। तैं एकैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ हमरा लोकनि किछु किंकर्तव्यविमूढ़ सन भ' गेल छी।

अस्मिता संकट के बातक एक दोसर सन्दर्भ सेहो अछि । ई सन्दर्भ अछि वैश्वीकरणक । वैश्वीकरणक विहाड़ि सँ सेहो अपन परिचिति उधियाइत सन बुझाइये। विश्वबाजार आ विश्वग्रामक बढ़ैत थाप अपन केवाड़ पर स्पष्टतया सुनल जा सकैए। लगैए जेना केवाड़ चरमरा के टूटि जायत । घर, परिवार, समाज, व्यक्ति सभ के लगातार खण्डित करबाक साजिश चलैत रहलए । सभ मे सहस्त्रो छेद भ' चुकल अछि । वास्तव मे ई साजिश मनुक्ख कँ ओकर सम्पूर्ण परिवेश सँ काटि क' ओकरा मात्र हाड़-मांसक यन्त्र बनब' चाहैत अछि । मनुष्य के भविष्य मे सुखी बनेबाक नाम पर आइ ओकर सौन्दर्य-प्रेम के कोनो ने कोनो बहाने थकुचि देब' चाहैत अछि । किएक त' ई स्थिति वैश्वीकरणक अनुकूल होयत । मनुक्ख बजारक समक्ष आत्म समर्पण क' देत ।

वैश्वीकरणक आक्टोपस सँ पूर्व उपनिवेशवादक डायनासोर सेहो हमरा लोकनिक लग संकट उपस्थित केने छल । वास्तव मे ई अस्मिताक संकट ओकरे देन थिक । उपनिवेशवाद मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिता के विस्मृति के अन्धकार मे ढकेलि देबाक पूरा प्रयत्न कंलक । बहुत अंश मे ओ सफलो भ' गेल। उपनिवेशवाद के एहि मे सहयोग केलक ओकर देशी एजेंट-सामन्तवाद । ई दूनू मीलि लोकक पराभव के आर बढ़ौलक। दयनीय आर्थिक स्थिति आ अनवरत बढ़ैत शोषण सँ ध्यान हटेबाक लेल 'पूर्व जन्मक पापक भोग'के उपस्थित केलक । ई अकारण नहि अछि जे जाहि मैथिली साहित्य मे पाँच सए वर्ष धरि 'राम' छिटफुट एकाधठाम छोड़ि कत्तहु नहि दृष्टिगोचर होइत छथि से महराज लक्ष्मीश्वर सिंहक आदेश सँ कविश्वर चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायण' मे अवतरित भेलाह । ई वैह महराज लक्ष्मीश्वर सिंह छथि जे मैथिली के कान पकड़ि अपन राज-काज सँ हटा देने छलाह । जिनकर शिक्षा-दीक्षा 1860 ई० मे कोरट लागि गेलाक कारणे अंग्रेज प्रभुक द्वारा सम्पन्न भेल छल ।

मिथिलाक आधुनिक इतिहास लिखल जेबाक खगता सेहो एखन नीक जकाँ अनुभव कएल जा रहल अछि । अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक मिथिलाक इतिहास दृष्टि सम्पन्नताक संग जँ लिखल जाय त' स्पष्ट भ' सकत जे गड़बड़ी कत' भेल। गड़बड़ी एहि पछिला पचास वर्ष मे सेहो भेल अछि । कने बेसिए भेल अछि । मुदा से गड़बड़ी अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक नींव पर ठाढ़ छल । ओकर सभ दुर्गुण ओ कमजोरी के लदने । ई बात आब क्रमशः निर्विवाद भेल जा रहल अछि, जे जाहिकाल मे आनठाम (अपन सटले बंगाल मे) अंग्रेज-अंग्रेजीक प्रभावें पुनर्जागरण भ' रहल छल। बंगाली के अपन अस्मिता सँ जोड़ि क' देखब प्रारम्भ भ' गेल छल । अपन-अपन मातृभाषा मे शिक्षाक व्यवस्था भ' रहल छल । आधुनिक वोधक रूप मे समानताक बात कएल जा रहल छल । हमरा सभ आर बेसी कूपमण्डूक आ रूढ़िवादी बनौल जा रहल छलहुँ । परम्परानिष्ठ बनबाकक अहंकार मे संस्कृत के आर चिहुटि के पकड़ि रहल छलहुँ । एतबे नहि राष्ट्रीयताक नाम पर कृत्रिम हिन्दुस्तानी भाषा सेहो हमरा सभ पर लादल जा रहल छल । ई शिक्षाक प्रति वितृष्णा उत्पन्न क' रहल छल । जखन सभठाम मातृभाषा मे शिक्षाक अनिवार्यता के बूझल जा रहल छल । व्यक्तित्व निर्माण मे मातृभाषाक महत्व अकानल जा रहल रहए । मातृभाषाक माध्यमे अपन संस्कृति, अपन अस्मिता लोक के फरीछ भ' रहल छल । हमरा सभके आत्म-विस्मृति क गर्त्त

मे धकेलल जा रहल रहए । एक सए वर्ष पाछू ठेलल जा रहल छल । ओहीकाल मे हम सभ अपन व्यक्तित्व पर अन्हरजाली लगा रहल छलहुँ । जे क्रमशः व्यक्तित्वहीनता मे पहुँचा देलक । ई व्यक्तित्त्वहीनते हमरा सभके सामूहिक अस्मिता बोध सँ विछिन्न केलक। सौन्दर्यवोध के दूरि केलक ।

मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिता कथी ल' के छल ? एहि विषय पर अध्ययन होयब जरूरी अछि । कर्म पर आधारित जीवन कोना केवल शास्त्र केन्द्रित होइत गेल सेहो विचारब जरूरी अछि । संस्कृतिक समग्रता क्रमशः कोना कृतिके महत्व मे छिन्न-भिन्न भ' गेल ? अन्ततः कृति केन्द्रित सँ कृतिकार केन्द्रित कोना भेल ? भाषा-टीका कएनिहारक नाम हमरा सभके मोन रहल आ समस्त विश्व मे एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखनिहार मिथिलाक कलात्मक औद्योगिक परम्परा के विसरि गेलहुँ । एहन विस्मृति कोना भेल ?

की हमरा लोकनिक अस्मिता क्रियाशील जीवन सँ जुड़ल नहि छल ? हाथ आ दिमागक समन्वयक परम्परा मिथिला समाज मे नहि रहल अछि ? कृषि कर्म आ हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा जीविकाक साधन छल । समाजबन्ध एहन मजबूत छल जे कतेको आततायी आएल-गेल । हमरा लोकनिक किछु नहि बिगाड़ि सकल । अपन विभिन्न नदीक माध्यमे व्यापार-व्यवसाय करैत रहलहुँ । आर्थिक मजबूतिए क आधार पर न्याय आ मीमांसा, आध्यात्मिक चिन्तनक पताका फहराइत रहल । महाकवि विद्यापतिक गीत, सलहेश, लोरिक, दीनाभद्री, नैकबनिजाराक गाथा गबैत, अपन तमाम लोकगीत मे जीवनक प्रति जीवन मे श्रृंगारक प्रति, प्रेमक प्रति, गुणक प्रति आदर-उल्लास व्यक्त करैत हमरा लोकनि अपन संघर्षशील जीवनी शक्ति के बचाक' रखलहुँ। कतेक रास वस्तु के ग्रहण केलहुँ कतेक वस्तुक त्याग करैत रहलहुँ। हमरा ओहिठाम त' कृष्ण-राधा, शिव-पार्वती, दुर्गा-काली-तारा सभ अपन सर-सम्बन्धिक जकाँ भाए-बहीन, माए जकाँ रहल छथि । सीताके कहियो हमरा सभ देबी नहि मानलहुँ। अपन गामक सुआसीन मानैत रहलहुँ । राम के जमाय बुझैत रहलहुँ । शिव-पार्वती एकदम पारिवारिक-सामाजिक छथि। जीवन मे प्रेम आ श्रृंगारक अभिव्यक्ति लेल कृष्ण आ राधा मात्र एक माध्यम छलथि । ई सभ एहि कारणे छल जे हमरा लोकनि सार्थक, श्रम पर आधारित जीवन के अंगेजने छलहुँ । मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भ होयबा सँ पूर्वहिं सभ किछु टूटि-फूटि गेल । अपन परिचिति पर हम सभ भ्रम आ फूसि के

ओहार लगा देलहुँ। ई एहि दुआरे भेल जे विवेक आ उदारता पर आधारित जीवन दर्श मे अविवेक आ क्षुद्रताक प्रवेश भ' गेल । हमरा लोकनिक (खासक' के मिथिलाक संभ्रान्तवर्ग मे) व्यक्तित्व मे क्षुद्रता आ संकुचन अपन स्थान बनबैत चल गेल । ई सभ भोगवादी दृष्टि सँ उपजल छल जे समाजक मुँह पुरूष लोकनिक राजसत्ता सँ जुड़बाक कारणे भेल । धनक प्रति बढ़ैत लिप्साक कारणे भेल। सामुदायिक, सामूहिक जीवन टुटबाक कारणे भेल । क्रमश: हमरा लोकनि विवेकान्ध होइत गेलहुँ । सुविधा आ भोगवाद जे जमीन्दारी आ सामंती जीवनक कारणे उत्पन्न भेल, समाज के बाँटिक' राखि देलक। जमीनक स्थायी बन्दोवस्ती एकर जड़ि मे छल । जे समाज के वर्ग मे विभाजित क' देलक । जमीन्दार, जेठ रैयत, रैयत, किसान-मजूर मे बँटल समाज मे कमजोर वर्ग पर पराभवक पहाड़ टूटि पड़ल । धार्मिक आ आर्थिक शोषणक चक्र चलैत रहल। धनीक आर धनीक आ गरीब आर गरीब होइत गेल । जमीन से अन्तत: खण्ड-खण्ड मे बँटि गेल । अनुत्पादक होइत गेल। हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा नष्ट क' देल गेल । असमानता आ विषमता बढ़ैत गेल । स्वतंत्रताक वादो एहि सभ मे कोनो कमी नहि आएल । कोनो परिवर्त्तन नहि भेल । समाज मे वैमनस्य आर बढ़िते गेल अछि। एही मे मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिता कतहु हेरा-भोतिया गेल ।

मिथिला आ मैथिलीक बात बहुत विलम्ब सँ आएल । अयबो कएल त' विकलांग भ' क' आएल । सामन्ती जीवन सँ जुड़ल जातिक माध्यम सँ आएल । जेकरा समाज मे बाबू-भैया कहल जाइत छल । जकरा प्रति समाज मे कोनो आदर भाव नहि रहि गेल छल । जकरा लोक अपन पराभव लेल उत्तरदायी मानैत छल। जिनकर जीवन मे विलासिता आ सुविधा-परस्ती, व्यक्तित्वहीनता जड़ि जमा चुकल छल तिनकर मुँह सँ मिथिला-मैथिलीक गप्प सामान्य लोक मे कोनो सुगबुगी नहि अनलक । ई फराक बात अछि जे मिथिला-मैथिलीक आन्दोलन मे किछु विवेकशील आ उदारलोक सभ सेहो छलाह । जिनका यथार्थक सम्यक ज्ञान छलनि। मुदा बहुलांश मे एहने लोक छलाह जे मिथिला-मैथिलीक उपयोग अपन हितक लेल करए चाहैत छलाह । राजा, जमीन्दार के प्रसन्न रखबाक लेल करैत छलाह । हुनका लोकनिक अविवेक आ क्षुद्रता सँ मिथिला-मैथिलीक सार्थक आन्दोलन मिथिलाक सम्पूर्ण समाज के जोड़ि नहि सकल। ओकरा संग सामान्य लोक अपन तादात्म्य स्थापित नहि क' सकल । सामान्य लोकक अस्मिता सँ नहि जुड़ि सकबाक यथार्थ मिथिला-मैथिली आन्दोलनक सभ सँ त्रासद

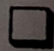
यथार्थ थिक । मैथिली भाषिक आन्दोलनक स्वर जखन विद्यापति पर्वक माध्यम सँ अभिव्यक्त होयब प्रारम्भ भेल आ संस्थागत रूप पकड़लक त' यैह संकुचित, अविवेकी, क्षुद्र लोकनिक कारणे ओ फेर भोतिया गेल । एक जाति विशेषक संग ओकर भाग्य-दुर्भाग्य जुड़ि गेल । तैं आइ मिथिला-मैथिलीक गप्प खाली ब्राह्मणक गप्प बुझाइत अछि ।

वैश्वीकरणक आक्टोपस सँ युद्ध लेल हमरा लोकनि के विस्मृति के अन्धकार सँ बाहर निकल' पड़त । मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिताक तत्व सभके ताकि-हेरि के निकाल' पड़त। आवश्यकतानुसार ओकरा झाड़ि-पोछि के चमकाब' पड़त । जाहि सँ हमर संघर्षक शक्ति आर मजगूत हुअए । हमरा भीतर सुन्दर जीवनक यथार्थ उतरि जाय । मिथिला समाजक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक मूल परम्परा पैघ आ उदार रहल अछि । एहि मे मिथिला समाजक सभ जाति-धर्म-वर्गक योगदान रहल अछि । एहि मे श्रमजीवी लोकनिक पसीनाक सुगन्धि मिलल अछि । जं नित्य सभ विकार आ विकृतिकें धो देबाक क्षमता रखैत अछि । क्रियाशील जीवनक यैह सौन्दर्य बोध आ मनुक्खक शुद्ध जीजीविषा वैश्वीकरणक मुखौटा धारण कएनें पुनः चल अबैत उपनिवेशवादीक कुत्सित षड़यन्त्र सँ संघर्ष क' सकत । ओकरा पछाड़ि सकत । एहि काज लेल हम पुनः मिथिला समाजक सभ दृष्टि सम्पन्न, उदार आ इमानदार वृद्धिजीवीक, इतिहासज्ञक अर्थशास्त्री, लेखक-रचनाकारक, समाजशास्त्री-मानवविज्ञानीक आह्वान करैत छी ।

x x x

एहि वर्ष हमरा लोकनिक बीच सँ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ प्रभास कुमार चौधरी अपन शरीर त्यागि अमरत्व मे लीन भ' गेलाह । प्रभास कुमार चौधरी पर सन्धानक एक विशेष अंक एहि अंकक वाद लगले सन्धान-3क रूप मे आबि रहल अछि। यात्रीक अमर कृति 'बलचनमा'क एक सामाजिक-ऐतिहासिक अध्ययन एहि अंक मे हुनका प्रति श्रद्धा निवेदित करैत प्रस्तुत अछि । मैथिलीक दूनू महान रचनाकार के सन्धान क श्रद्धान्जलि!!

—अशोक



 संवाद -2, नवम्बर -2007

वीरेन्द्र मल्लिक संग एक सांझ

❑ अशोक

पटनाक एकटा सांझ छल ओ। कार्तिक पूर्णिमा आ शामा चकेबाक सांझ। विद्यापति पर्वक तेसर दिनक सांझ। वीरेन्द्र मल्लिक कलकत्ता स' आयल रहथि। अग्निपुष्पक डेरा पर बैसार छल। ओहि दुनूक अतिरिक्त मोहन भारद्वाज ओत' रहथि। हम सेहो रही।

वीरेन्द्र मल्लिक कें देखबाक-सुनबाक ई हमर पहिल अवसर छल। हमरा मोन पड़ल वीरेन्द्र मल्लिक मैथिलीक ओहि प्रगतिशील धारा स' जुड़ल रहल छथि जे वैचारिक रूप स' सामाजिक सरोकार ओ ओहि स' उपजल साहित्य-बोध ल' क' जानल जाइत अछि। हमरा ईहो मोन पड़ल जे कीर्ति नारायण मिश्र, वीरेन्द्र मल्लिक, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुर, अग्निपुष्प, कुणाल आ हुनका संग मैथिलीक बहुतो साहित्यकार आठम दशक मे कलकत्ता मे रहि मैथिली साहित्य मे खूबे सक्रिय रहथि। से सक्रियता पत्रकारिता, रंगमंच स' ल' क' भाषा आन्दोलन धरि मे व्याप्त रहय। मैथिलीक सन्दर्भ मे समाज आ समाजक साहित्य मे एहि धाराक रचनाकारलोकनिक सक्रियताक कारणे आठम दशक विशेष रुपें महत्वपूर्ण बनि गेल अछि। से बात हमरा बरोबरि लगैत रहल अछि। ओहि कालविशेष मे कलकत्ताक एहेन सक्रियता कें पटना सेहो संग द' रहल छल अपना भरि। कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, प्रभास कुमार चौधरी, भीमनाथ झा आ समानधर्मा साहित्यकारलोकनि अपूर्व जोश आ उत्साह मे रहथि से तथ्य ओहि कालविशेष मे शुरू भेल मैथिली पत्रिका आ ओहि मे आयल साहित्य मे सहजें देखल जा सकैत अछि। से एहि रुपे देखल जा सकैत अछि जे सृजन आ आलोचना दुनू क्षेत्र मे परम्परा-प्रेमक रुग्ण मनोभाव स' उत्पन्न जड़ता कें तोड़वा मे काल विशेषक सक्रियता सहायक भेल। बदलैत दुनियाक सत्य संग सम्बन्ध आ संवाद शुरू भेल। साहित्य-बोध कें सामाजिक सरोकार स' एक नव उन्मेष देबाक कोशिश ओहि कालविशेष अर्थात् आठम दशक मे खूबे मुखर भेल। वस्तुतः एहि धाराक नव साहित्य-बोध कलकत्ता आ पटना स' निकलल पत्रिका सभक माध्यमे मैथिली साहित्य मे सोझे-सोझ हस्तक्षेप केलक। ई हस्तक्षेप विचार, संवेदना आ भाषा तीनू स्तर पर होयब आरम्भ भेल। हस्तक्षेप तेहने तीव्र छल जे किछु परम्परावादी एहि स' विचलित सन भ' गेला। एक गोटे एकरा अभारतीय चिंतन धरि कहि देलनि। हुनकर अपरिभाषित राष्ट्रीयता कें ओहि बोध ओ सक्रियता स' जेना खतरा उत्पन्न भ' गेलनि।

वीरेन्द्र मल्लिक स' भेंट एहि सभ स्मृति कें समक्ष आनि देलक। एकदम ताजा क' देलक। बात शुरू भेल त' स्वाभाविक रुप स' विमर्शक बिन्दु संस्कृति बनि गेल। मोन पड़ल चेतना स' ल' क' राष्ट्रवाद धरिक ओकर व्याप्ति। सांस्कृतिक चेतना स' सम्पन्न भेनाइ आ सांस्कृतिक राष्ट्रवादक प्रवक्ता भेनाइ मे की अन्तर छैक? हम वीरेन्द्र मल्लिक दिस तकलहुं। ओ बाज' लागल रहथि। हमरा लागल संस्कृति कें ओ जीवन लेल उपयोगिताक दृष्टि स' देखि रहल छलाह। ओ कहैत रहथि, जे अपन संस्कृति स' सम्बद्ध रहल अछि, अपना संस्कृतिक प्रति connected रहल अछि, ओकर विकास होइक। संस्कृति ओकर प्रगति मे सहायक होइक। से समय के अनुसार होइ छै, हमरा लागल वीरेन्द्र मल्लिकक आशय स्पष्ट छनि। **'जं संस्कृति विकास मे, मनुक्खक प्रगति मे सहायक नहि अछि त' ओकर उपयोगिता नहि अछि। त' सांस्कृतिक चेतना अहां कें विकसित हेबा मे बाधा सेहो द' सकैत अछि। अहां के अतीतजीवी बना सकैत अछि। युगानुरुप प्रगति मे पछुआ सकैत छी। मुदा अतीत की एतेक अनुपयोगी होइत अछि?'**

तखने मोहन भारद्वाज कह' लागल रहथि। 'सांस्कृतिक चेतना अतीतक प्रति निर्लिप्त भेनाइ नहि छैक। टकुरी काटब, ढेकी कूटब पहिने जीवन लेल आवश्यक छल। मुदा आब नहि अछि। मशीन एकरा सभ के विस्थापित क' देलक अछि। तैयो हमरा सभ जं टकुरी आ ढेकीयेक प्रति मोहित रहब, तकरे अपन सांस्कृतिक चेतनाक प्रतीक मानैत मशीनक विरोधी बनल रहब त' से विकासक विरोधी बात भ' जायत। एहि दृष्टियें सांस्कृतिक चेतना स' सम्पन्न भेनाइ आ विकासशील भेनाइ मे विरोध छै।'

मोहन भारद्वाजक संस्कृति आ विकासक विन्दु कें वीरेन्द्र मल्लिक सांस्कृतिक विकास स' जोड़ैत छथि। संस्कृति आ विकास मे एक तारतम्य स्थापित करैत छथि। ओ कहैत छथि जे, 'संस्कृति परम्परा कें ल' क' चलैत छैक। परम्परा जखन पुरान भ' जाइत छै। रुढ़ भ' जाइत छैक। ओहि मे विकृति आबि जाइत छै। त' समाज ओहि पुरान आ रुढ़ि, विकृति स' मुक्त हुअ' चाहैत अछि। मुक्तिक चेष्टा करैत अछि। मुदा एहि रुढ़ि कें, विकृति के भंग हुअ' मे बहुत समय लगैत छैक। ओना विकासक क्रम मे एहि विकृति सभक filteration होइत रहैत छैक। ओ विकृति सभ जे संस्कृति मे बाद मे उत्पन्न भेल। मूल स' मुदा ओकर सम्बन्ध, संस्कृतिक सम्बन्ध बनले रहैत छैक।' वीरेन्द्र मल्लिक कहैत छथि जे, 'जे पैर धरती पर अछि से संस्कृति अछि। अगिला पैर विकासक दशा अछि। नव-नव चीज कें ग्रहण करब अछि।'

हमरा मोन पड़ैत अछि विकासक सन्दर्भ मे कहल बात। आखिर ई विकास की थिक? नव द्वारा पुरानक स्थान ग्रहण करब, उदित भ' रहल के अस्त भ' रहलक जगह लेबहि के विकास कहल जाइत अछि। ईहो कहल जाइत अछि जे, नव, पुरान कें पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि, अपितु ओहि मे जे श्रेष्ठतम अछि ओकरा कायम रखैत अछि। वस्तुत: ओ श्रेष्ठतम के कायमे नहि रखैत अछि, ओकरा आत्मसात सेहो करैत अछि। ओकरा एक उच्चतम स्तर पर सेहो उठबैत अछि।

मोहन भारद्वाज कहि रहल छला, 'संस्कृति आ विकासक ई द्वन्द्व हमरा सभ के फड़िछ हेबाक चाही। ई फड़िछ हेबाक चाही जे दुनू पैर नीचे मे रहत। धरतीये पर रहत। एक पैर ढेकी लग आ दोसर कारखाना लग रहत। मुदा समाज जं ढेकीये कुटैत रहि जायत से विकास नहि कहाओत। ई अतीतजीवी भेनाइ हैत। एहि स' सामाजिक विकास मे बाधा उत्पन्न हैत।'

आब अग्निपुष्प एहि विमर्श मे हस्तक्षेप करैत छथि। ओ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कें सेहो चिन्हित करैत छथि। ओ कहैत छथि जे, 'एहि रुपक कें जं व्याख्या कयल जाय त' कहल जा सकैत अछि जे एक पैर जं जमल अछि से हमरा अन्दर अतीत अछि। दोसर पैर जे आगू बढ़ै वला पैर अछि ओ

> **'सांस्कृतिक चेतना अहां कें विकसित हेबा मे बाधा सेहो द' सकैत अछि। अहां के अतीतजीवी बना सकैत अछि। युगानुरुप प्रगति मे पछुआ सकैत छी। मुदा अतीत की एतेक अनुपयोगी होइत अछि?'**

आगू बढ़ि रहल अछि। से गतिशीलता हमरा दैत अछि। व्यक्ति के जीवन मे, समाज के जीवन मे गतिशीलता बहुत आवश्यक होइत छैक। गतिहीन समाज अपना कें विकसित नहि क' सकैत अछि। मुदा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहैत अछि जे दुनू पैर एकेठाम रखने रह। ओ अतीतगामी बनल रहबाक लेल आ दुनू पैर के एकेठाम रोकने रहबाक लेल बाध्य क' रहल अछि।'

आब विमर्श संस्कृति आ विकास मे तालमेल पर केन्द्रित भ' रहल छल। दुनू मे कोना तालमेल होयत? कोना तालमेल भ' सकैत अछि? मिथिलाक संस्कृति की थिक? कोनो देशक, क्षेत्रक संस्कृति की होइत अछि? संस्कृति कोनो देशक सामाजिक जीवनक प्रतिविम्ब होइत अछि। मिथिलाक सामाजिक जीवनक आधार कृषि रहल अछि। तैं एहिठामक संस्कृति कृषि-संस्कृति थिक। कमासुत लोकक श्रम-संस्कृति थिक। एहि संस्कृतिक सौन्दर्य-बोध फराक अछि।

मोहन भारद्वाज कहैत छथि, 'संस्कृति मूलत: उत्पादक वर्ग स' जुड़ल रहल अछि। उत्पादक वर्ग मे आयल परिवर्त्तन, उत्पादन-सम्बन्ध मे आयल परिवर्त्तन स' संस्कृति मे युगानुरुप परिवर्त्तन होइत चलैत अछि। ई परिवर्तन जं नहि घटित हो त' लोक पछुआ जायत। संस्कृति पछुआ जायत। तैं कोनो इलाकाक विकास लेल ओहिठामक उत्पादक वर्ग कें, किसान कें देखब आवश्यक अछि। की विकास उत्पादक वर्ग, कृषक वर्गक पक्ष मे अछि? विकास ओहि वर्ग कें कोना प्रभावित क' रहल अछि अथवा भविष्य मे कोना प्रभावित करत से देखब दुनू मे तालमेल लेल जरूरी थिक।'

आब हम ई विचार' लागल रही कि एखन धरि जे मिथिलाक आर्थिक विकास भेल अछि से एहिठामक उत्पादक वर्ग कें, कृषक कें, श्रमजीवी कें कोना प्रभावित केलक अछि। भविष्य मे जे विकासक रुपरेखा बनि रहल अछि से मिथिलाक सामाजिक जीवन कें कोन रुपें प्रभावित करत। हमरा लगैत अछि जे एहिठामक जे किछु विशिष्टता छैक, जाहि विशिष्टता पर एहिठामक सभ लोक कें गर्व छैक, से विशिष्टता छहोछित भेल अछि। ओहि पर गंहीर जरब पड़लैक अछि। एहि स' सामाजिक परम्पराक श्रेष्ठतम तत्व कें कायम राखब, ओकरा आत्मसात क' आर उच्चतर स्तर पर ल' जायब कठिन होइत चल जायत।

ठीक एही समय मे अग्निपुष्प भूमण्डलीकरणक चर्चा शुरू क' देने रहथि। भूमण्डलीकरण अर्थात् भूमण्डीकरण अथवा बाजारवादक प्रभाव पर गप्प शुरू भ' गेल रहय। हमरालोकनि एहि बातक चर्चा कर' लागल रही जे ई फोर लेन - सिक्स लेन रोड किए बनि रहल अछि। एहि स' ककर हित सधैत छैक। की एहि स' हमरालोकनिक, उत्पादक वर्गक, कृषक-श्रमजीवीक हित होइत छैक अथवा पैघ-पैघ पूंजीपतिक, बहुराष्ट्रीय कम्पनीक। विकासक ई मॉडल हमरालोकनिक इच्छाक अनुरुप थिक अथवा दिल्ली, वाशिंगटन मे बैसल सत्ताधारी - व्यापारीक अनुरुप। हमरा सभ कें लागल रहय जे एहि प्रकारक विकासक मॉडल सामान्य जनताक हितक अनुकूल नहि अछि। एहि स' नहि केवल सामान्य लोकक सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन प्रभावित होयत अपितु आर्थिक जीवन सेहो प्रभावित होयत। लोकक, इलाकाक आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान, जीवनशैली सभ पर एकर प्रभाव पड़तैक। लोक मजदूर आ उपभोक्ता बनबा पर आरो विवश भ' जायत। सभक जीवनक

लगाम कतहु दूर मे बैसल पूंजीपतिक हाथ मे चल जेतैक।

चर्चा आब संस्कृति आ विकास स' साहित्य पर आबि गेल रहय। मैथिली साहित्य पर। साहित्यो मे कविता पर। भूमण्डलीकरणक ई दौर कविता मे कोना व्यक्त भ' रहल अछि। वीरेन्द्र मल्लिक कहैत छथि, 'साहित्य मे कोनो यथार्थ अपन शर्त्त सभ पर व्यक्त होइत अछि। कोनो साहित्यक विधाक अपन परम्परा होइत छैक। मैथिली काव्यक सेहो अपन परम्परा रहल अछि। से परम्परा विद्यापति स' रहल अछि। समकालीन बोध कविता मे कोना व्यक्त भ' रहल अछि से देखबाक चाही। समकालीनता फैशनक रूप मे त' नहि आबि रहल अछि? जं भूमण्डलीकरण कें विषय बना कविता लिखल जा रहल अछि त' से कविता बनैत अछि की नहि? साहित्य बनै छै की नहि? से पहिने देखबाक थिक।'

अग्निपुष्प यात्री आ राजकमलक कविता पर बाज' लागल रहथि। 'यात्रीक कविता विकासशील अछि प्रगतिवादी अछि। ओहि मे मार्क्सवादी विचारधारा अछि। राजकमलक कविता आधुनिक कविता थिक। ओकर अन्तर्वस्तु चमकदार अछि। ओ ने प्रतिगामी अछि ने प्रगतिवादी। हमरा सभ कें अमरवादी कविता स' खतरा नहि अछि। ओ अपन कविता स' भ्रम नहि पैदा करैत छथि। मुदा जे उत्तर आधुनिकता अछि से विभ्रम (Illusion) पैदा क' रहल अछि। कविता मे तकरा कोना चीन्हल जाय?'

एहि पर मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे, 'रचना कें सम्पूर्णता मे देखबाक आदति हेबाक चाही। हमरालोकनि एकाकी दृष्टि स' देखैत रहल छी। Isolated रुप मे नहि देखल जेबाक चाही। आलोचनाक स्वरुप समग्रता मे निर्धारण हेबाक चाही।'

वीरेन्द्रजी मैथिली मे पोथीक अनुपलब्धताक प्रश्न उठबैत छथि। ओ कहैत छथि जे 'पूरा पोथी, सम्पूर्ण रचना पढ़ने बिना कोन आधार पर ककरो प्रगतिवादी का ककरो प्रतिगामी कहल जा सकैत अछि? वस्तुतः पुस्तक समीक्षा रचनाकारक समीक्षा थिक। तैं समग्रताक बात बिना पोथी पढ़ने नहि कयल जा सकैत अछि।

हमरा मोन पड़ैत अछि पछिला दस वर्षक मैथिली कविता पर कवि विद्यानन्द झाक टिप्पणी। वैश्वीकृत भारत मे हेराइत मैथिल परिचितिक चित्कार वला पाठ। संगहि मैथिली कविता मे भगवा तत्वक सक्रिय हेबाक गप्प। ओकर विरोध रचनात्मक स्तर पर करबाक गप्प। संगहि एहि बातक गप्प हेबाक ख्वाहिस जे प्रामाणिक स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, समकालीन गाम आ खेतिहर, खेत मजदूर सभक दशा, मध्यवर्गक हताशा, कुण्ठा आ सांस्कृतिक रुप स' हेरा जेबाक प्रक्रिया जे सभ विद्यानन्दजीक हिसाबें पछिला दशक मैथिली कविता मे अनुपस्थित अछि।

हमरा ईहो मोन पड़ैत अछि जे साहित्य कें संस्कृति स' विलग क' क' नहि देखल जा सकैत अछि। जखन साहित्य पर चर्चा होइत अछि त' सांस्कृतिक समस्या स्वयं बीच बहस मे आबि जाइत अछि। की तैं मैथिली कविता कें, मैथिली साहित्य कें सृजन लेल आ समालोचना लेल सांस्कृतिक चेतना स' सम्पन्न होयब जरूरी नहि भ' गेल अछि? आ एही आवश्यकताक गर्भ स' आजुक बहस नहि जन्मल? हमरा लगैत अछि जे विद्यापति पर्वक तेसर दिनक सांझ मे, कार्तिक पूर्णिमा कें जं हम सभ ई बहस क' रहल छी त' से उचिते थिक। ई बहस चलबाक चाही। मुदा ओहि दिन समय हमरा सभ लेल अवरोध भ' क' ठाढ़ भ' गेल। वस्तुतः समय कखनो अवरोधक सेहो भ' जाइत छैक। ओ निरन्तरता कें भंग करैत अछि। ♦

❑ **वीरेन्द्र मल्लिक**

सातम दशकक महत्वपूर्ण समालोचक, संपादक ओ कविक एकटा कविता संग्रह 'अग्नि-शिखा' प्रकाशित

अथातो काव्यजिज्ञासा

अधुना कान स' नहि पेट स' सुनल जाइछ कविता
कारण रोटी थीक कविता
जीबाक लेल
पहिल शर्त थीक कविता
भाषा थीक ओकर शरीर आ शब्द प्राण
बंकसूर गरीब-गुरबाक
ओकालति करैछ कविता
न्यायालय मे ठाढ़ सत्यक पक्षधरता करैछ
किसानक लेल हरक फार आ
मजदूरक लेल हसुआ-हथौड़ीक काज करैछ
कविता -
कविता सामाजिक खाधि कें भरि कटोरी बनल खेत कें
समतल करबाक प्रयास करैछ
उस्सर जमीनक लेल खादक काज करैछ
खेत मे लहलहाइत
हरियर-कञ्च धान ओ गहूमक सीस थीक कविता
सामा कौनी ओ मडुआक ढेसर आ मकैयक बालि थीक कविता
सरिसो फूलक रंग
ओ आमक मजरल गाछ केर सुगन्धि थीक कविता
अदौ काल स' गरीबक लेल चाउरक खुद्दी
ओ अमरीक लेल अंगूर थीक कविता
सदा-सर्वदा प्रतिपक्ष मे ठाढ़ रहल अछि कविता

कविता जीवनक एकरसता कें तोड़ैछ
शांत-स्थिर जल मे
पाथरक आघात जकां हलचल पैदा करैछ
शांति स' रहय नहि दैछ ककरो
मूक-बधिर व्यवस्थाक गाल पर
जोरदार थापड़ थीक कविता
अट्टहास करैत शासनक मुंह पर
छिड़कल गेल तेजाब थीक कविता
औंघाइत आ चौलि करैत नेत्री-वर्गक लेल चाबुक होइछ कविता
थाकल-ठेहिआयल लोकक लेल भफाइत चाहक चुस्की थीक कविता

बाबू-भैयाक लेल गरमा गरम एस्प्रैसो कॉफी थीक कविता

कविता स्थापित सत्ता आ पूजित असत्यक विरोध करैछ
यथास्थितिवाद पर व्रज प्रहार करैछ
कथनी नहि करनी होइछ कविता
कविता ऋत नैतिकता आ मनुष्यताक संवाहक होइछ
ओ लोभी मक्कार आ लुच्चा कें
लबरा-लफंगा कें
चापलूस धूर्त आ भजार कें खुलेआम उघार करैछ
निर्लज्ज आ लंठ नेता स'
लोक कें सावधान-होशियार करैछ
एतावता
जीवनक लेल रामवाण थीक कविता
मानवीय चेतना कें प्रवर्धमान करयबला 'ट्रैंक्विलाइजर' थीक कविता
प्रबुद्ध साहित्यकार कलाकार ओ बुद्धिजीवीक लेल
'एल.एस.डी.' ओ 'मेरीजुआना' थीक कविता
सोना-रूपाक शीशमहल
ओ अवैध भवन-निर्माणक लेल 'बुलड्रोज़र' होइछ कविता
सुतरांग
ककरहु लेल शृङ्गार आ वीर रस-प्रवाहिनी
तं ककरहु लेल कामिनी आ इन्कलाब थीक कविता–
कविता विलास आ मनोरंजनक वस्तु नहि
निर्माण आ पुनर्निमार्णक उत्स थीक कविता
जीवनक पर्याय थीक कविता
एक गोट सक्रिय हस्तक्षेप थीक कविता।

पटना स' आयल अछि संवाद

आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि
बाप कें बाप कहबा मे लोक डरि रहल अछि
निपत्ता भ' गेल वर्ग-चेतना
सामाजिक अपेकता
आ पारिवारिक प्रेम-निष्ठा लेलक पतनुकान
पति पत्नी संतान
आ अपन मकान
यैह भेल परम सत्य
टाका आ शक्तिक अतिरिक्त
बाकी सब फूसि
साम्राज्यवादक विस्तार चेतनाक संहार
आइ मनुक्ख कें मनुक्ख नहि रहल देल गेल अछि

आइ संसार मे उनटा बसात बहि गेल अछि

आइ चेतना-सम्पन्न कविताक स्थान
चुटकुल्ला लए रहल
पुनः कुण्डलिया दोहा आ फकड़ाक बजार गर्म भए रहल
चिड़ै गाछ-वृक्ष आकाश
सोझा मे आबि रहल
रसातल मे चल गेल मनुक्ख
ठेकेदार आ हलुआइ सभक वर्चस्व
साहित्य मे देखल जाइछ
युद्ध-स्तर पर कएल जा रहल
विचारक वंध्याकरण
तर्क-सम्मत संवादक स्थान
भड़काउ चौकाउ आ अनर्गल बात लए रहल
एहि मे अनेकहु समानधर्मा
सम्मिलित भए रहलाह अछि

आइ साहित्य मे प्रदूषण आ आतंकवादक सृष्टि भए रहल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि
आजुक तकनीकी क्रांति
कोटि-कोटि मनुक्ख कें नरक मे झोंकि
मुट्ठी भरि लोक कें
स्वर्ग मे लए जयबाक कए रहल प्रबन्ध
नहि रहलैक समाज स' ओकरा कोनो सरोकार वा सम्बन्ध
प्रगतिशील जनतांत्रिक आ आधुनिक परम्परा कें
मटियामेट कए
उपभोक्ता संस्कृतिक बीआ बाग कएल जा रहल
कम स' कम कपड़ा पहिराए
नारी कें चिनवार स' सड़क पर उतारल जा रहल
सुन्दर-सुन्दर बोतल मे बन्द माहुर
आइ हाट बजार चौबटिया राबड़ी जकां बांटल जा रहल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि

आइ क्षतिग्रस्त भेल अछि मानवीय अस्मिता
क्षीण भेल अछि जन सामान्यक संघर्ष-शक्ति
नाङर-लुल्ह कएल जा रहल भविष्य
सर्वहार कें उपभोक्ता मे बदलि देल गेल अछि
संघर्षशील लोक कें
युद्धस्तर पर दलाल बनाओल गेल अछि
आधुनिक स्वर्ग प्रदान करबाक नाम पर
लोक कें प्राचीन नरक मे धकेलल जा रहल
शिक्षित बेरोजगारक विराट फौज तैयार कएल जा रहल
गरीबी हटयबाक नाम पर

गरीब कें आओर गरीब बनाओल जा रहल
आइ जनसंख्या-विस्फोटक धमाका देश कें हिला रहल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि।

मैथिली बरनी

[एक]
फुलायल बाट पर
कदम्ब अनेकहु वर्ष पर
हर्षित-प्रफुल्लित भए रहल अछि लोक
नेना केर जन्म-दिन पर
[दू]
पीपरक ई गाछ
चिड़ै-चुनमुनीक आवास
थाकल-ठेहिआयल बेटोहीक लेल प्राण
जमींदारक अत्याचार स' मुक्त भेल हो कोनो दास
[तीन]
बहि रहल अछि धार
कोटि-कोटि लोकक कए रहल उद्धार
शहर भरि केर गंदगी कें कए रहल अछि दूर
राजनगरक काली केर गरदनि मे जेना चानीक हार
[चारि]
नीम केर ई गाछ
अक्कथ तीत तकर फड़ फूल ओ पात
आर्ष-वचन सन जीवन-प्रद अछि ठाढ़
मूल डारि ओ छाल तपस्या-रत ऋषी अपस्यात
[पांच]
सतभैयां सन पाम वृक्ष अछि ठाढ़
पतियानी मे अदौकाल स'
बाँटि रहल उल्लास निरन्तर रौद बसात पानि अन्हर मे
बता रहल अछि कोनो नवाबक कथा मनोहर
[छओ]
साप सनक ई सीढ़ी अति प्राचीन
कहैए कथा कोनो जेबुन्निसा केर नेप चुआबति बेगम सभहिक
चक्करदार देबाल पर अंकित चित्र अनेकहु नारी-देहक
शब्दकोश अश्लील कहैए गौरव-गाथा वर्तमान केर। ♦

सम्पर्क : 67, लेक इस्ट, सिक्थ रोड, संतोषपुर, कोलकाता - 700 075
फोन : 033-24169219, 9830460649 (मो.)